वर्ष- 2024-25

अंक– 16

सेनानी

गृह-पत्रिका

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

श्रम एवं रोज़गार मंत्रालय, भारत सरकार

उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर

जी.बी.ब्लॉक, प्लॉट-VI, सेक्टर-III, सॉल्ट लेक, कोलकाता – 700097,

पश्चिम बंगाल, दूरभाष: 033-23350052

ई-मेल: dir-bpore@esic.nic.in

ol-barrackpore.wb@esic.nic.in

नराकास (उपक्रम) कोलकाता द्वारा उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर की राजभाषा पत्रिका 'सेनानी' को पुरस्कृत किया गया।

अंक– 16
सेनानी

वर्ष 2024-25, अंक – 16
(केवल आंतरिक परिचालन के लिए)

संरक्षक
श्री अमरनाथ तिवारी
संयुक्त निदेशक / क्षेत्रीय निदेशक (बी)

प्रधान संपादक
श्री रमेश साव
सहायक निदेशक (राजभाषा)

संपादक
श्री मनोज कुमार
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

श्री भागीरथ साव
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

श्री रवि कहर
बहुकार्य कार्मिक

प्रकाशक
उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर
श्रम एवं रोज़गार मंत्रालय, भारत सरकार
जी.बी.ब्लॉक, प्लॉट-VI, सेक्टर-III
सॉल्ट लेक, कोलकाता – 700097
पश्चिम बंगाल
दूरभाष: 033-23350052
ई-मेल: dir-bpore@esic.nic.in
ol-barrackpore.wb@esic.nic.in

मुद्रक
भूषण स्टूडियो एंव प्रेस
पश्चिम बंगाल 743135, दूरभाष : 9331886129
ई मेल: braj.b.gupt@gmail.com

'सेनानी' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। सम्पादन समिति उनसे सहमत हो, यह आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

शीर्षक	संदेश / रचनाकार	पृष्ठ सं.
महानिदेशक का संदेश	अशोक कुमार सिंह	4
बीमा आयुक्त (राजभाषा) का संदेश	रत्नेश कुमार गौतम	5
बीमा आयुक्त (का. एवं प्रशासन) का संदेश	प्रणय सिन्हा	6
उप निदेशक (कार्यान्वयन) का संदेश	डॉ. विचित्रसेन गुप्त	7
संरक्षक की कलम से...	अमरनाथ तिवारी	8
संपादकीय	रमेश साव	9
राजभाषा हिंदी (1949-2024) का सफ़रनामा	रमेश साव	10
राजभाषा में तकनीकी का प्रयोग	रमेश साव	12
साक्षात्कार	डॉ. राजीव रावत	14
भारतीय समाज एवं महिला सशक्तिकरण	आशुतोष मिश्र	17
मेरे पापा	अर्णव आनंद	18
महिला दिवस	मृत्युंजय प्रभाकर	19
आधुनिक मनुष्य मशीन का गुलाम	अनुश्री धारा	20
मैं.. धोबी का कुत्ता	मनोज कुमार	21
शांति और सुंदरता का अनूठा मिश्रण : पंचमढ़ी	मणिशंकर पाणि	22
वाराणसी का भ्रमण	सौकार्य सांफुई	24
चाहत थी चाँद पे जाने की…	प्रियेश कुमार	26
सपने	प्रियेश कुमार	26
यादों के साये	प्रियेश कुमार	26
मंत्रमुग्ध डुआर्स	सुकन्या मजूमदार	27
प्रादेशिक भाषाओं में शिक्षा, लाभ एवं नुकसान	अपूर्व कुमार घोष	29
संतोष	रमेश साव	31
गीत	रवि कहर	32
सबको प्यारा रहा	रवि कहर	32
यात्रा वृतांत : लाहौल -स्पीति	प्रियम दास	33
किसी की पीड़ा, किसी की शिक्षा	देबाशीस घोष	35
भारत हमारा देश	अभिनव आनंद	36
पिता	धर्मपाल कुमार	37
पहली हवाई यात्रा	अभिराज साव	38
जी हां, मैं हिंदी अधिकारी हूं	मनोज कुमार	39
हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा -2023 पर विशेष प्रयास		40
राजभाषा शाखा द्वारा आयोजित विविध गतिविधियाँ		46
चित्रकारिता		50

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

सत्यमेव जयते

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi- 110 002
Tel : 011-23215487
Website : www.esic.nic.in / www.esic.in

संख्या : ए-49/17/1/2016- रा.भा.
दिनांक : 14.09.2024

अशोक कुमार सिंह (भा.प्र.से)
महानिदेशक

महानिदेशक का संदेश

उप क्षेत्रीय कार्यालय बैरकपुर, कोलकाता की हिंदी की गृह पत्रिका **'सेनानी'** के सोलहवें अंक का प्रकाशन किया जाना सराहनीय है।

हिंदी पत्रिकाओं से कार्यालयी कामकाज राजभाषा में करने में मदद मिलती है। इसके माध्यम से कार्मिकों को हिंदी अभिव्यक्ति के लिए एक मंच भी प्राप्त होता है।

आशा है यह अंक सभी के लिए ज्ञानवर्धक और उपयोगी सिद्ध होगा।

अशोक कुमार सिंह

(अशोक कुमार सिंह)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

सत्यमेव जयते

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi- 110 002
Tel : 011-23604740
Website : www.esic.gov.in

संख्या : ए- 49/17/3/2016- रा.भा
दिनांक : 20 / 11 / 2024

रत्नेश कुमार गौतम
बीमा आयुक्त

बीमा आयुक्त (राजभाषा) का संदेश

यह प्रशंसनीय है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय बैरकपुर की हिंदी गृह पत्रिका 'सेनानी' के 16वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिंदीतर भाषी राज्यों में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले इस राज्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि अविस्मरणीय है। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएँ।

(रत्नेश कुमार गौतम)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

सत्यमेव जयते

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi- 110 002
Tel : 011-23604740
Website : www.esic.gov.in

अ.शा.सं : 49/17/4/2016- रा.भा
दिनांक : 06 / 11 / 2024

प्रणय सिंन्हा
बीमा आयुक्त (का. एवं प्र.)

बीमा आयुक्त (का. एवं प्रशासन)का संदेश

'सेनानी' के 16 वें अंक का प्रकाशन उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर की उपलब्धि है। 'सेनानी' में विविध सुंदर, सारगर्भित व पठनीय रजनाओं का समावेश है जो अधिकारियों व कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा को उजागर करती है। इससे भारतवर्ष के पूर्वी क्षेत्र में स्थित हिंदीतर राज्य में हिंदी के प्रति एक सकारात्मक माहौल भी तैयार हो रहा है।

'सेनानी' के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाओं के साथ-साथ पत्रिका प्रकाशन से जुड़े सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को मेरी शुभकामनाएं।

(प्रणय सिन्हा)

भारत सरकार
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
क्षेत्रीय कार्यान्वियन कार्यालय (पूर्व क्षेत्र)

सत्यमेव जयते

234/4, ए. जे. सी. बोस रोड,
निजाम पैलेस, कोलकाता- 20
दिनांक-30.08.2024

संख्या- 24/2/2015- क्षे.का.का.(कोल)
दिनांक- 30.08.2024

डॉ. विचित्रसेन गुप्त
उप निदेशक (कार्यान्वयन)

उप निदेशक (कार्यान्वयन)का संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि कर्मचारी राज्य बीमा निगम, उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर, कोलकाता अपनी गृह पत्रिका "सेनानी" के 16वें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। इस पत्रिका में समाविष्ट विषय निश्चय ही राजभाषा हिंदी के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए सराहनीय प्रयास सिद्ध होंगे। "सेनानी" इस निगम के कार्मिकों के विचारों को राजभाषा हिंदी के माध्यम से आम जन तक पहुंचाने का एक सहज एवं सशक्त माध्यम है।

मुझे आशा ही नहीं बल्कि, पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका विभिन्न सैद्धांतिक, सांस्कृतिक एवं वैचारिक पक्षों को जनमानस तक सम्प्रेषित करने के साथ-साथ राजभाषा नीति के क्रियान्वयन हेतु उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेगी।

मैं "सेनानी" पत्रिका से जुड़े समस्त विद्वानों को बधाई देता हूं एवं इसके सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

(डॉ. विचित्रसेन गुप्त)
उप निदेशक (कार्यान्वयन)
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व क्षेत्र)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

सत्यमेव जयते

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
उप क्षेत्रीय कार्यालय,बैरकपुर
(आई एस ओ 9001:2008 प्रमाणित)
जी.बी.ब्लॉक,प्लॉट संख्या-6,
सेक्टर-3,साल्ट लेक कोलकाता-700097

(अमरनाथ तिवारी)
संयुक्त निदेशक (प्रभारी)

संरक्षक की कलम से...

हमें अत्यंत गर्व और हर्ष की अनुभूति हो रही है कि हमारे कार्यालय की गृह पत्रिका "सेनानी" अपने 16वें वर्ष में प्रवेश कर रही है। यह 16 वर्षों की यात्रा न केवल हिंदी प्रेमियों की निष्ठा और समर्पण को प्रमाणित करती है, बल्कि इस बात की भी साक्षी है कि हमारे कार्यालय के अधिकारी और कर्मचारी हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु सदा तत्पर रहे हैं। "सेनानी" मात्र एक पत्रिका नहीं है; यह हमारे कार्यकलापों, हमारी उपलब्धियों और हमारे विचारों का दर्पण है। इसमें हमारी संवेदनाएँ, हमारी इच्छाएँ और हमारे अनुभव सहज ही अंकित होते हैं, जो एक सजीव दस्तावेज़ के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत होती है।

"सेनानी" का हर अंक यह दर्शाता है कि किस प्रकार हमारे कार्यालय में भारत सरकार की राजभाषा नीति के प्रति गहरी प्रतिबद्धता है। यह पत्रिका केवल लेखों, कविताओं और विचारों का संकलन नहीं, बल्कि हिंदी भाषा के प्रति हमारी गहन आस्था और सामूहिक प्रयास का प्रतीक भी है। इसके माध्यम से हमारे कार्यालय के सभी सदस्य अपनी सृजनात्मक क्षमता को एक नए आयाम तक पहुँचाने का अवसर पाते हैं, जिससे हिंदी के प्रति लगाव और भी सुदृढ़ होता है।

आज जब "सेनानी" अपने 16वें वर्ष में प्रवेश कर रही है, तो यह हम सभी के लिए एक अवसर है कि हम अपनी राजभाषा हिंदी के प्रति समर्पण को और भी प्रगाढ़ करें। यह पत्रिका हमें यह भी स्मरण कराती है कि हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, हमारी अस्मिता और हमारी पहचान का अभिन्न हिस्सा है। यह हमारी जड़ों से जुड़ने का माध्यम है और राष्ट्रीय एकता के प्रति हमारा योगदान भी।

विविध, सुंदर और सुरुचिपूर्ण रचनाओं को अपने दामन में समेटे "सेनानी" का यह अद्भुत 16 वां अंक भी आपकी मधुर स्मृतियों में अनंत काल तक बसा रहेगा और आपसे यह अपेक्षा भी है कि आप नि:संकोच एवं निष्पक्ष भाव से अपनी प्रतिक्रिया एवं सुझावों से हमें अवगत कराएंगे ताकि पत्रिका के आगामी अंक को हम और भी परिमार्जित रूप में आपके सम्मुख प्रस्तुत कर सकें।

अंत में, "सेनानी" के इस अंक को हम सभी के समक्ष लाने में मैं राजभाषा शाखा की कड़ी मेहनत, समर्पण और भरपूर सफल प्रयास की सराहना करता हूं और धन्यवाद देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित -

(अमरनाथ तिवारी)
संयुक्त निदेशक (प्रभारी)

रमेश साव
सहायक निदेशक (राजभाषा)

संपादकीय

यह हर्ष का विषय है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर, कर्मचारी राज्य बीमा निगम में राजभाषा के व्यापक प्रचार-प्रसार एवं कार्यान्वयन के उद्देश्य से राजभाषा की हीरक जयंती पर राजभाषा पत्रिका के विशेषांक के रूप में सेनानी के 16वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

राजभाषा हीरक जयंती का यह वर्ष विशेष वर्ष है क्योंकि संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा अंगीकार करने के 75 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में इस वर्ष हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर राजभाषा विभाग के साथ-साथ समस्त देश द्वारा राजभाषा हीरक जयंती का आयोजन किया जा रहा है।

भारत में अनेक भाषाएं बोली जाती है। संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है। केन्द्र सरकार के कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए सरकारी कार्यालयों द्वारा नियमित रूप से प्रयास किए जा रहे हैं। उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर, कर्मचारी राज्य बीमा निगम भी अपने बीमित व्यक्तियों को हिंदी में अपनी सेवाएं प्रदान करने के लिए हर संभव प्रयास कर रहा है। हालांकि यह कार्यालय 'ग' क्षेत्र में है और यहां के अधिकतर कर्मचारियों की मातृभाषा बांग्ला है, अपितु इसके, यहां के कर्मचारी हिंदी में कार्य करने का सफल प्रयास कर रहे हैं।

उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर में हमारा प्रयास है कि हमारी विभिन्न शाखाओं के साथ-साथ हमारे शाखा कार्यालयों में भी राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार हो सके। इस उद्देश्य से राजभाषा संबंधी समस्त गतिविधियो में शाखा कार्यालयो को भी शामिल किया जा रहा है। उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर के अंतर्गत 18 शाखा कार्यालय कार्यरत है। पिछले वर्ष राजभाषा का कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए समस्त 18 शाखा कार्यालयों का राजभाषायी निरीक्षण किया गया। साथ ही, इस वर्ष राजभाषा का सर्वश्रेष्ठ कार्यान्वयन करने वाले शाखा कार्यालय तथा शाखा को राजभाषा चलशील्ड से पुरस्कृत करने की भी योजना बनाई गई है। यह पुरस्कार राजभाषा पखवाड़ा के समापन समारोह के अवसर पर प्रदान किए जाएंगे। हम यह पूरी कोशिश कर रहे हैं कि हम अपने बीमित व्यक्तियों को उनकी भाषा में उन्हें सेवा प्रदान कर सकें। शाखा कार्यालयों में आज का शब्द एवं हिंदी पत्र-पत्रिकाओं की भी व्यवस्था सुनिश्चित की जा रही है जिससे कि शाखा कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रति एक सकारात्मक वातावरण तैयार किया जा सके। इसके अलावे कर्मचारी राज्य बीमा निगम की राजभाषा से संबंधित सभी योजनाओं का लाभ कार्मिकों को देने का प्रयास किया जा रहा है जिससे कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी के प्रति उत्साह है एवं वे प्रोत्साहित होकर हिंदी में अपना कार्य करने का प्रयास कर रहे हैं।

राजभाषा पत्रिकाएं किसी भी कार्यालय के कर्मचारियों को अपनी साहित्यिक अनुभूतियों को उजागर करने के लिए तथा कार्यालय में राजभाषा के प्रति सकारात्मक वातावरण तैयार करने में अहम भूमिका निभाती है। इस पत्रिका में विभिन्न कर्मचारियों की साहित्यिक अनुभूतियों, यात्रा अनुभवों तथा चित्रांकन की प्रतिभाएं उजागर हुई हैं। राजभाषा के इस अंक को सारगर्भित तथा संग्रहणीय बनाने हेतु अपनी रचनाएं देने वाले सभी साथियों के प्रति हम आभारी हैं। पत्रिका का यह अंक राजभाषा विशेषांक के तौर पर प्रकाशित की जा रही है। यह अंक आपको सौंपते हुए अपार गर्व की अनुभूति हो रही है। हालांकि इस पत्रिका को बेहतर बनाने के लिए अथक प्रयास किया गया है अपितु सुधार की गुंजाइश सदैव रह जाती है अतः सभी सुधी पाठक जनों से अनुरोध है कि वें अपनी प्रतिक्रिया से हमें अवश्य अवगत कराएं जिससे आने वाले अंकों को और बेहतर बनाया जा सके।

(रमेश साव)
सहायक निदेशक (राजभाषा)

राजभाषा हिंदी (1949-2024) का सफ़रनामा

रमेश साव
सहायक निदेशक
(राजभाषा)

- **14 सितंबर, 1949** को हिंदी को राजभाषा बनाने का संविधान सभा का निर्णय।
- **26 जनवरी, 1950** को संविधान लागू हुआ। तदनुसार उसमें किए गए भाषाई प्रावधान (अनुच्छेद **120,210** तथा **343** से **351**) लागू हुए।
- **1952**- तत्कालीन शिक्षा मंत्रालय के तहत हिंदी शिक्षण योजना का प्रारंभ।
- जुलाई, **1952** - हिंदी शिक्षण योजना के अतंर्गत प्रशिक्षण आरंभ। **1955** में यह योजना गृह मंत्रालय को सौंपी गयी।
- **1953** से **14** सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाने का निर्णय।
- **07** जून, **1955** - बी. जी. खेर की अध्यक्षता में राजभाषा आयोग का गठन। (संविधान के अनुच्छेद **344 (1)** के अंतर्गत)
- **31** जुलाई, **1956**–खेर आयोग ने अपना प्रतिवेदन राष्ट्रपति को प्रस्तुत किया।
- सितंबर, **1957**- खेर आयोग की सिफारिशों पर विचार करने के लिए संसदीय समिति का गठन। (तत्कालीन गृह मंत्री श्री गोविंद वल्लभ पंत की अध्यक्षता में)
- **8** फरवरी,**1959**-संविधान के अनुच्छेद **344 (1)** के अन्तर्गत संसदीय समिति द्वारा राष्ट्रपति को अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत।
- **27** अप्रैल, **1960**- संसदीय समिति के प्रतिवेदन पर राष्ट्रपति जी के आदेश। संसदीय समिति की रिपोर्ट पर राष्ट्रपति के आदेश जारी किए गए जिनमें हिन्दी शब्दावलियों का निर्माण, संहिताओं व कार्यविधिक साहित्य का हिंदी अनुवाद, कर्मचारियों को हिंदी का प्रशिक्षण, हिंदी प्रचार, विधेयकों की भाषा, उच्चतम न्यायालय व उच्च न्यायालयों की भाषा आदि मुद्दे हैं।
- **1960** – हिंदी टंकण, हिंदी आशुलिपि प्रशिक्षण आरंभ। **1974** से उपक्रमों के लिए भी प्रशिक्षण अनिवार्य।
- **1960** - शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत केंद्रीय हिंदी निदेशालय का गठन।
- **1960** – वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग का गठन **10** मई, **1963** - संविधान के अनुच्छेद **343 (3)** के प्रावधान को ध्यान में रखते हुए राजभाषा अधिनियम, **1963** बनाया गया। इसके अनुसार हिन्दी संघ की राजभाषा व अंग्रेजी सह-राजभाषा के रूप में प्रयोग में लाई गई।
- **1967**-प्रधान मंत्री की अध्यक्षता में केन्द्रीय हिन्दी समिति का गठन किया गया। यह समिति सरकार की राजभाषा नीति के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश देने वाली सर्वोच्च समिति है। इस समिति में प्रधानमंत्री जी के अलावा नामित केन्द्रीय मंत्री, कुछ राज्यों के मुख्यमंत्री, सांसद तथा हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के विद्वान सदस्य के रूप में शामिल किए जाते रहे हैं।
- **1968** - संसद के दोनों सदनों द्वारा राजभाषा संकल्प पारित किया गया जिसमें हिन्दी के राजकीय प्रयोजनों हेतु उत्तरोत्तर प्रयोग के लिए अधिक गहन और व्यापक कार्यक्रम तैयार करने, प्रगति की समीक्षा के लिए वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट तैयार करने, हिन्दी के साथ-साथ **8**वीं अनुसूची की अन्य भाषाओं के समन्वित विकास के लिए कार्यक्रम तैयार करने, त्रिभाषा सूत्र अपनाये जाने, संघ सेवाओं के लिए भर्ती के समय हिन्दी व अंग्रेजी में से किसी एक के ज्ञान की आवश्यकता अपेक्षित होने तथा संघ लोक सेवा आयोग द्वारा उचित समय पर परीक्षा के लिए संविधान की **8**वीं अनुसूची में सम्मिलित सभी भाषाओं तथा अंग्रेजी को वैकल्पिक माध्यम के रूप में रखने की बात कही गई है। (संकल्प **18.1.1968** को अधिसूचित हुआ)
- **01** मार्च **1971** - केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो की स्थापना। केंद्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों तथा उपक्रमों, बैंकों आदि के मैनुअलों, कोडों, प्रपत्रों तथा अन्य विविध असांविधिक साहित्य के अनुवाद के लिए गृह मंत्रालय के अधीन केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो की स्थापना **1** मार्च, **1971** को की गई। तब से

केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो लगातार यह कार्य कर रहा है। उपर्युक्त सामग्री के साथ-साथ केंद्र सरकार द्वारा गठित राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग, राष्ट्रीय अनुसूचित जाति / जनजाति आयोग, पांचवां वेतन आयोग, जैन आयोग आदि विभिन्न आयोगों की रिपोर्टों का अनुवाद कार्य भी ब्यूरो को सौंपा गया।

- **1975** - राजभाषा विभाग की स्थापना।
- **1976** - संसदीय राजभाषा समिति का गठन राजभाषा अधिनियम **1963**, की धारा **4(1)** के तहत वर्ष **1976** में किया गया था। यह एक उच्चाधिकार प्राप्त संसदीय समिति है। इसमें **20** सदस्य लोकसभा तथा **10** सदस्य राज्यसभा से होते हैं। माननीय गृह मंत्री जी इस समिति के अध्यक्ष हैं।
- **1976**- राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, **1976** बनाए गए (बाद में इन नियमों में **1987,2007** तथा **2011** में संशोधन किए गए)
- **1977**- श्री अटल बिहारी वाजपेयी, तत्कालीन विदेश मंत्री ने पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित किया।
- **09** सितंबर, **1981** - केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग का गठन। विभिन्न मंत्रालयों/विभागों और संबद्ध कार्यालयों में सृजित हिंदी पदों को एकीकृत संवर्ग में लाने तथा उनके पदाधिकारियों को समान सेवा शर्तें, वेतनमान और पदोन्नति के अवसर प्रदान करने हेतु केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा का गठन वर्ष **1981** में केंद्रीय हिंदी समिति द्वारा वर्ष **1976** में लिए गए निर्णय के परिणामस्वरूप किया गया था। राजभाषा विभाग इसका संवर्ग नियंत्रण प्राधिकारी है। इस समय इस संवर्ग में **1020** स्वीकृत पद हैं।
- **1985** - केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान का गठन। राजभाषा विभाग के अंतर्गत केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना दिनांक **31** अगस्त, **1985** को अधिकारियों / कर्मचारियों को हिन्दी भाषा, हिन्दी टंकण और हिन्दी आशुलिपि के पूर्णकालिक गहन प्रशिक्षण सुविधा उपलब्ध कराने के लिए की गई।
- **1990** - केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा पत्राचार माध्यम से हिंदी भाषा का प्रशिक्षण आरंभ किया गया।
- **2015** - केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा हिंदी भाषा पारंगत प्रशिक्षण कार्यक्रम का आरंभ।
- **2018**-राजभाषा विभाग द्वारा अनुवाद टूल कंठस्थ **1.0** का लोकार्पण कराया गया।
- जुलाई, **2020** - भारत की नयी शिक्षा नीति, **2020** में मातृभाषाओं और हिन्दी को विशेष महत्व देने की अनुसंशा।
- सितंबर **2020-23** सितंबर **2020** को संसद ने मौजूदा उर्दू और अंग्रेजी के अलावा, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए एक विधेयक पारित किया।
- **14** सितंबर, **2022** – राजभाषा विभाग द्वारा कंठस्थ **2.0** का लोकार्पण।
- फरवरी, **2023** -राजभाषा विभाग द्वारा कंठस्थ **2.0** के मोबाइल ऐप का लोकार्पण।
- **13-14** नवंबर, **2021** - वाराणसी, उत्तर प्रदेश में पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन।**14-15** सितंबर, **2022** - सूरत, गुजरात में हिंदी दिवस एवं दूसरा अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन।
- **14-15** सिंतबर, **2023** - पुणे, महाराष्ट्र में हिंदी दिवस एवं तीसरा अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन।
- **14-15** सिंतबर, **2024** - भारत मंडपम् नई दिल्ली में हिंदी दिवस एवं चौथा अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन प्रस्तावित है।

रमेश साव
सहायक निदेशक
(राजभाषा)

राजभाषा में तकनीकी का प्रयोग

वर्तमान समय आधुनिक प्रौद्योगिकी का समय है। तकनीकी के कारण आज विश्वग्राम की संकल्पना साकार हो रही है। आज हम घर बैठे ही अपने मोबाइल से हर वो काम कर सकते है जिसको करने के लिए पहले हमें घंटों परिश्रम करना पड़ता था। कोविड-19 के दुष्प्रभावों से कहीं न कहीं हर कोई प्रभावित हुआ है परन्तु इस आपदा के समय ने तकनीकी रूप से हमें बहुत कुछ सक्षम भी बना दिया। आज के इस समय में राजभाषा कार्यान्वयन का कार्य हो या प्रचार-प्रसार का कार्य, तकनीकी के प्रयोग ने उसे और अधिक सुगम बना दिया है। आज तकनीकी का प्रयोग करके बहुत आसानी से हिंदी में कार्य किया जा सकता है एवं अपने कर्मचारियों को हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

भारत को आजादी सन्1947 में मिली तथा सन् 1950 में देश का संविधान लागू हुआ। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 351 में यह स्पष्ट रूप से लिखा गया है कि यह संघ का कर्तव्य होगा कि वह हिंदी का प्रचार-प्रसार करे, उसका वृद्धि करें जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सब तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा देने के पीछे संविधान निर्माताओं का यही उद्देश्य था एवं उस समय भी यही महसूस किया गया था कि हिंदी ही वह भाषा है जो पूरे भारत को एकता के एक सूत्र में बांधे रखने में समर्थ है। राष्ट्रीय एकता तथा अखंडता को ध्यान में रखकर ही संविधान निर्माताओं ने 14 सितम्बर 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप स्वीकार किया। पिछले 75 सालों में देश में बहुत कुछ बदल चुका है आज भारत तकनीकी रूप से बहुत ही आगे निकल चुका है एवं समस्त विश्व में अपना लोहा मनवा रहा है। तकनीकी ने हिंदी को भी अछूता नहीं छोड़ा है।

सन् 1975 में राजभाषा विभाग की स्थापना की गई एवं तब से राजभाषा विभाग ने सदैव ही राजभाषा के उत्तरोत्तर विकास के लिए कार्य किया है। राजभाषा विभाग के दिशा-निर्देशों का अनुपालन करते हुए कर्मचारी राज्य बीमा निगम ने भी अपने स्तर पर राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा राजभाषा कार्यान्वयन के लिए कार्य किया है। कर्मचारी राज्य बीमा निगम के राजभाषा विभाग ने मौजूदा तकनीकी को अपनाया है तथा अपने कार्मिकों उसकी जानकारी देते हुए उन्हें हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से प्रयास किया है।

आज ऐसे अनेकों सॉफ्टवेयर है जिनका प्रयोग विभिन्न

सरकारी कार्यालयों में हिंदी में कार्य करने के लिए किया जा रहा है। हिंदी में कार्य करते समय जो सबसे बड़ी समस्या आती है वह हिंदी टंकण की। हालांकि तकनीकी के विकसित होने से आज टंकण विभिन्न रूपों से

किया जा रहा है जैसे फोनेटिक टंकण, इंस्क्रीप्ट टंकण, वॉइस टायपिंग आदि। वर्तमान समय में जितने भी कंप्यूटर आ रहा हैं समस्त में फोनेटिक टंकण, इंस्क्रीप्ट टंकण की सुविधा पहले से मौजूद रहती है। फोनेटिक टंकण पर तो कोई भी कर्मचारी एक घंटे अभ्यास करने के पश्चात हिंदी टंकण कर पाने में समर्थ हो जाता है बशर्ते कि उसे हिंदी भाषा का थोड़ा-बहुत ज्ञान हो। इंस्क्रीप्ट टंकण जिसका प्रशिक्षण राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा दी जाती है उसे स्वयं भी निज प्रयासों से सीखा जा सकता है। यह टंकण सीखने के लिए अनेकों सॉफ्टवेयर आज इंटरनेट पर उपलब्ध है। इसके पश्चात अगर गूगल वॉइस टाइपिंग की बात आती है, गूगल की यह सुविधा बोलकर हिंदी टंकण करने में बहुत सहायक है इसका प्रयोग करते हुए बहुत कम समय में अपनी आवाज द्वारा हिंदी टंकण का कार्य किया जा सकता है।

हिंदी में काम करने में एक और समस्या आती है वह अनुवाद की समस्या। वर्तमान समय में अनुवाद के अनेकों वेबसाइट इंटरनेट पर निःशुल्क सेवाएं प्रदान कर रहे जिनमें से कुछ निम्नवत है-

गूगल ट्रांसेलट, माइक्रोसॉफ्ट ट्रांसलेटर आदि का प्रयोग ऑनलाइन अनुवाद के लिए लिया जा सकता है। एक समय था जब इन ऑनलाइन सुविधाओं का प्रयोग करना और उनसे प्राप्त परिणाम प्रायः अर्थ का अनर्थ कर देते थें पर आज ऐसी स्थिति नहीं है। आज इन सुविधाओं के प्रयोग से प्राप्त परिणाम 80 से 90 प्रतिशत तक आपका काम सही-सही हो जाता है, किसी-किसी मामले में कभी-कभी 100 प्रतिशत तक भी शुद्धता प्राप्त होती है पर फिर भी चूँकि यह एक मशीनी अनुवाद है तो इन पर पूरी तरह से निर्भर करना ठीक नहीं है। अंतिम रूप देने से पहले इन वेबसाइटों पर किए गए कार्यों का एक बार अवलोकन तथा आवश्यक संशोधन करना अनिवार्य होता है। राजभाषा विभाग भी नियमित रूप से राजभाषा हिंदी को सशक्त करने का हर संभव प्रयास कर रही है। इस वर्ष अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान कंठस्थ-2.0 का लोकार्पण किया गया।

कंठस्थ स्मृति आधारित मशीनी अनुवाद की सुविधा है जिसको प्रयोग में लाने के लिए राजभाषा विभाग के साइट पर पंजीकरण कर लॉग-इन करना अनिवार्य है। राजभाषा विभाग यह सुविधा निःशुल्क प्रदान कर रही है एवं इस सॉफ्टवेयर पर किया गया अनुवाद लगभग पूर्ण रूप से सटीक माना जाता है क्योंकि यह आपके किए हुए अनुवाद को पुनः आपके सामने प्रस्तुत करता है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा हिंदी सीखाने के लिए अनेकों ऑनलाइन-ऑफलाइन प्रशिक्षण चलाये जाते हैं इसके साथ ही निःशुल्क हिंदी सिखाने के लिए लीला राजभाषा ऐप, हिंदी प्रवाह आदि ऐप राजभाषा विभाग द्वारा उपलब्ध करवाये गए जिसका प्रयोग करके कोई भी व्यक्ति अपनी भाषा के माध्यम से हिंदी भाषा सीख सकता है। यह ऐप गूगल प्ले स्टोर पर उपलब्ध होने के साथ-साथ इसे राजभाषा विभाग के साइट पर जाकर भी एक्सेस किया जा सकता है।

इनके अलावे और भी बहुत सारे ऐप, ऑनलाइन शब्दकोष आदि आज इंटरनेट पर निःशुल्क उपलब्ध है जिनका प्रयोग कर हिंदी सीखा एवं सिखाया जा सकता है बस आवश्यकता है थोड़ी सी लगन एवं धैर्य तथा अभ्यास की। राजभाषा हिंदी आसान है एवं इसे हर किसी को सीखना चाहिए और केन्द्र सरकार का कर्मचारी होने के नाते हम सबका यह संवैधानिक कर्तव्य है कि हम न केवल हिंदी सीखें बल्कि सीखकर अपने कार्यालयी कार्यों में हिंदी को व्यवहार में लायें।

डॉ. राजीव रावत
वरिष्ठ हिंदी अधिकारी
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर

साक्षात्कार

रमेश साव - अपने बारे में तथा राजभाषा क्षेत्र में अपने अनुभव के बारे में बताएं।

श्री रावत जी - मैं मूलतः विज्ञान का छात्र रहा फिर भारतीय वायु सेना में रेडियो तकनीशियन रहा। राजभाषा के क्षेत्र में, वायु सेना में रहते हुए रोजगार की तलाश में आ गया हूँ। कुछ समय तक नागपुर के एलएडी महाविद्यालय में संविदा पर राजनीति शास्त्र का प्रवक्ता रहा हूँ जहां मैं एमए की कक्षाएं लेता था। वर्ष 2005 में फील्ड गन फैक्टरी कानपुर में हिन्दी अनुवादक नियुक्त हुआ तत्पश्चात् वर्ष 2009 में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान खड़गपुर में हिन्दी अधिकारी नियुक्त हुआ। वर्ष 2009 से अब तक खड़गपुर में ही हूँ और राजभाषा के क्षेत्र में यथासंभव अपना सर्वश्रेष्ठ देने का प्रयास कर रहा हूँ। संस्थान के राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी दायित्वों के अतिरिक्त नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति खड़गपुर का सदस्य सचिव हूँ। नराकास राजभाषा के क्षेत्र में कुछ न कुछ नया करते रहने के लिए बहुत अच्छा मंच है। राजभाषा के क्षेत्र में काम करने का अनुभव बहुत अच्छा रहा है। यह मात्र भाषाई अथवा रोजगार संपन्न हो जाने का प्रश्न नहीं है बल्कि यह हमें अपनी संस्कृति, धरोहर से भी जोड़ने का माध्यम बनता है तथा देश के सुखद भविष्य की सुदृढ़ आधारशिला रखने का भी सुअवसर प्रदान करता है। भाषा के माध्यम से हम न कि मात्र सरकारी कर्मचारियों से जुड़ते हैं बल्कि विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों के छात्रों एवं आचार्यों से भी संपर्क होता है और उनके साथ भी काम करने के अवसर मिलते हैं। इस प्रकार राजभाषा के क्षेत्र में अनुभव बहुत आनंद दायक रहा है एक ओर कार्यालयों में हिन्दी में काम करना सिखाना, प्रशिक्षण, कार्यशालाएं, हिन्दी दिवस आदि जैसे आयोजन हैं वहीं दूसरी ओर विद्यार्थियों में निबंध, काव्य पाठ, सुलेख, कहानी लेखन, अंत्याक्षरी, वाद-विवाद, साहित्यकार प्रश्नोत्तरी आदि प्रतियोगिताओं के आयोजन से भाषाई चेतना जाग्रत करने के भी असीमित अवसर मिले हैं। जब आप काम करते हैं तो चुनौतियां भी आती हैं जिनसे जूझने में आनंद भी आता है और सफलता भी मिलती है। यदि किसी कारणवश असफलता भी मिलती है तो मुझे उसमें और कोई नया अवसर दिखता है, सीखने का अवसर होता है, कमियों की समीक्षा करता हूँ और मैं फिर नए सिरे से काम करता हूँ।

रमेश साव - वर्तमान समय में राजभाषा कार्यान्वयन में 'ग' क्षेत्र में कार्य करते हुए क्या समस्याएं आती है एवं उनका निदान क्या हो सकता है?

श्री रावत जी - राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में विशेष तौर पर 'ग' क्षेत्र में कई समस्याएं हैं। कुछ सामान्य समस्याएं हैं और कुछ क्षेत्र विशेष होने के कारण होती हैं किंतु उनका समाधान निश्चित ही संभव होता है। उदाहरण के लिए मैं कुछ विशिष्ट बिंदुओं की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहूँगा।

1. 'ग' क्षेत्र में हमारे कार्मिकों को राजभाषा में काम करने के लिए हिन्दी भाषा का पर्याप्त एवं उपयुक्त ज्ञान नहीं होता है। अगर हम बंगाल की बात करें तो कह सकते हैं कि यद्यपि बांग्ला और हिन्दी सहोदरी हैं क्योंकि दोनों में ही संस्कृत के शब्दों की अच्छी संख्या हैं और वे शब्द हिन्दी तथा बांग्ला भाषियों, दोनों को ही अच्छी तरह समझ आते हैं तथापि व्याकरणिक एवं उच्चारण के धरातल पर कुछ व्यवहारिक कठिनाइयां होती हैं जिन्हें कि अध्ययन, अभ्यास और लगन से ही दूर किया जा सकता है। अध्ययन में लगने वाले श्रम और समय का सभी के पास अभाव है और वैकल्पिक तौर पर अंग्रेजी की उपलब्धता होने से परिश्रम से बचने की घातक मानसिकता तो विचारणीय है। एक और महत्वपूर्ण कारण है कि नियमों के अनुपालन का दबाव न होने से निदान नहीं हो पाता है और तदर्थभाव के कारण भाषाई घालमेल होता जा रहा है। इससे राजभाषा कार्यान्वयन एवं नियमों का अनुपालन कराना दुरूह होता जा रहा है।

2 . भारत सरकार की अनेक योजनाएं एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम हैं जो कि सेवाकालीन होते हैं। बहुधा देखने में आता है कि इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में कार्मिक नामांकित तो होते हैं किंतु उनमें प्रशिक्षण के प्रति अरुचि होती हैं इसलिए प्रशिक्षित होने के बाद भी काम अंग्रेजी में ही करते हैं। धीरे-धीरे प्रशिक्षण भी अपनी उपादेयता खो रहा है। भारत सरकार ने प्रशिक्षण पूरा करने के लिए वर्ष 2025 तक का समय दिया है। आशा है इस अवधि के बाद प्रशिक्षण बढ़ाया नहीं जाएगा और सभी को हिन्दी में कार्य करने के प्रति जबावदेह होना होगा।

3. कई बार आधिकारिक दस्तावेज़ों या प्रलेखों का अनुवाद सही नहीं होता और वह विल्कुल किताबी होता है। आपने देखा होगा कितनी ही अच्छी कृतियाँ अच्छे अनुवाद के अभाव में मर जाती हैं और एक भाषाई दायरे में ही सिमट जाती हैं। यह बात सरकारी कार्यालयों पर भी लागू होती है क्योंकि अच्छे अनुवाद के अभाव में हिन्दी में सरकारी पत्राचार भी उबाऊ होता है जिससे अनुवाद प्रक्रिया, अनुवादकों और अनूदित सामग्री के प्रति अरुचि बढ़ जाती है। मेरा मानना यह है कि अब ऐसी व्यवस्था का समय आ गया है जब अनुवाद का सहारा न लेते हुए सभी को हिन्दी में मूल काम करना चाहिए।

मैं मानता हूँ कि किसी भी भाषा को सीखना आसान नहीं होता लेकिन यहां प्रश्न सरकारी नीतियों का है कि जब सरकारी नीति स्पष्ट हैं तो उनका पालन पूरे मन से किया जाना चाहिए। क्षेत्र चाहे 'क' हो, 'ख' हो अथवा 'ग' हो, मूल समस्या हिन्दी में काम न करने की मानसिकता की है जिसका समाधान करना आवश्यक है।

मेरा प्रयास रहता है कि परस्पर सौहार्द, प्रेरणा और प्रोत्साहन से इसका निदान निकल आए जो कि बहुत मुश्किल है। जब आप राजभाषा हिन्दी में काम करने की बात करते हैं तो आप किसी भी भाषा के विरुद्ध नहीं होते बल्कि भारत सरकार की नीतियों की बात कर रहे होते हैं किंतु ऐसा न समझ कर उसे व्यक्तिगत स्तर पर लिया जाता है यह भी एक बहुत बड़ी समस्या राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन में बन जाती है। विडंबना यह है कि हिन्दी का किसी भी भारतीय भाषा से कोई विरोध नहीं हैं यहां तक कि अंग्रेजी से भी कोई विरोध नहीं है फिर भी हिन्दी का विरोध होता है और अंग्रेजी, जो सभी भारतीय मातृभाषाओं को धीरे-धीरे खत्म कर रही है उस खतरे के प्रति कोई चिंतित नहीं दिखता है। हिन्दी को कोई अनिवार्य नहीं कर रहा फिर भी विरोध होता है और अंग्रेजी स्वतः अनिवार्य होती जा रही है इसके प्रति कोई विमर्श नहीं होता है। यह एक सामान्य बात कह रहा हूँ किसी भी भाषा भाषी के प्रति टिप्पणी नहीं हैं। अनेक गैर हिन्दी भाषी लोगों का हिन्दी को समृद्ध करने में अप्रतिम, अतुलनीय योगदान है जिसके प्रति हम सब कृतज्ञ हैं। सामाजिक मंचों, संचार साधनों पर हिन्दी की उपस्थिति में वृद्धि हुई है और आम समझ बढ़ी है। मेरा अनुभव है कि पिछले 40 वर्षों में 'ग' क्षेत्र में हिन्दी की स्वीकार्यता, दृश्यता, समझ में काफी वृद्धि हुई है किंतु अभी भी अनेक समस्याएं हैं।

इन सब समस्याओं का समाधान आधुनिकतम तकनीक है जो भाषाई बंधनों को तोड़ने में सक्षम है। इसलिए अब राजभाषा हिन्दी का कार्यान्वयन 'ग' क्षेत्र में भी आसान है परंतु अभी भी अंग्रेजी की अनिवार्यता असंदिग्ध है। इस पर काम होना चाहिए और हमें काम मूल रुप से अपनी मातृभाषाओं में करने की ओर बढ़ना चाहिए जैसे कि विश्व के अनेक शक्तिशाली देश अपना सारा काम, उच्च शिक्षा, शोध, अनुसंधान आदि अपनी मातृभाषाओं में करते हैं।

रमेश साव - पिछले 10 सालों में राजभाषा कार्यान्वयन के स्वरूप में क्या बदलाव आया है?

श्री रावत जी - पिछले 10 वर्षों में राजभाषा कार्यान्वयन में कई महत्वपूर्ण बदलाव आये हैं। राजभाषा के क्षेत्र में आए बदलावों को भी जीवनपद्धति एवं कार्यालयों के स्वरुप में आए बदलावों के सापेक्ष ही देखा जा सकता है। सबसे महत्वपूर्ण बदलाव तकनीक संपन्न होने से है। आज हर किसी की पहुंच आधुनिकतम तकनीक तक है। कार्यालयों में सबके पास कम्प्यूटर हैं। हमने हाथ से पत्र बनाने से लेकर आज की कृत्रिम मेधा तक का युग बहुत शीघ्रता से आते हुए देखा है इससे राजभाषा कार्यान्वयन के स्वरुप में आमूल-चूल परिवर्तन होना चाहिए था किंतु सकारात्मक परिवर्तन कम हुआ है। कम से मेरा आशय है कि कार्यों का मशीनीकरण तो बढ़ गया है किंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि हिन्दी में काम बढ़ गया है। मशीनीकरण होने से राजभाषा कार्मिकों के ऊपर दबाव अधिक बढ़ गया है और उनसे अपेक्षाएं बढ़ गई हैं किंतु हिन्दी कार्य का प्रतिशत बहुत नहीं बढ़ा है।

तकनीकी उन्नति से रिपोर्ट भरना, ऑन लाइन प्रेषित करना, कोविड के दौरान ऑनलाइन निरीक्षण होना, समीक्षा होना, कार्यशालाओं एवं व्याख्यानों का ऑनलाइन संपन्न होना आदि शुभ संकेत दिखते हैं और काम आसान हुए हैं। गूगल फार्म आदि से किसी भी कार्यालय की छोटी इकाइयों से रिपोर्ट आदि समय से प्राप्त हो जाती हैं जिनमें पहले पत्राचार में समय लगता था। कार्यालयों में इंटरनेट आगमन से बहुत सारे कागज़, प्रिंटिंग, प्रेषण, डाक का आवागमन आदि में लगने वाले सप्ताहों, महीनों का समय घटकर एक मिनट से भी कम का रह गया है। आज ई-मेल, वाट्सअप आदि से पत्राचार भी कुछ पलों में होने लगा है, निश्चित ही इससे राजभाषा कार्यान्वयन में भी बहुत सुधार हुआ है किंतु अभी भी काफी कुछ करने को शेष है। राजभाषा कार्मिकों के साथ ही कार्यालय में अन्य अधिकारियों, कार्मिकों को तकनीकी अनुप्रयोग में दक्षता बढ़ानी होगी जिससे कार्यालयों में हिन्दी में कार्य बढ़े और आंकड़ों की तथ्यात्मकता प्रमाणित हो सके। कार्यालयों को अनुवाद के लिए राजभाषा कार्मिकों के ऊपर निर्भरता को भी कम करते हुए अपना कार्यालयीन कार्य हिन्दी में करना सीखना चाहिए।

रमेश साव - वर्तमान समय में राजभाषा में तकनीकी के प्रयोग को आप कैसे देखते है?

श्री रावत जी - वर्तमान में तकनीक प्रयोग से राजभाषा के क्षेत्र में अकल्पनीय बदलाव आए हैं। गूगल, लिंग्वानैक्स, एसडीएल ट्रेडोस, मंत्रा आदि

मशीन अनुवाद, एआई, गूगल लेस, ट्रांसलिट्रेशन, कंठस्थ, अनुवादिनी, अनुसारक आदि अनेक तकनीकी साधनों से राजभाषा का काम आसान हुआ है साथ ही राजभाषा कार्मिकों से तात्कालिकता की अपेक्षाएं भी बढ़ी हैं। तकनीक के प्रयोग से सकारात्मक बदलाव पूरे परिदृश्य में हुआ है और राजभाषा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। राजभाषा कार्मिकों को भी कंप्यूटर अनुप्रयोगों एवं तकनीक का अच्छा ज्ञान हुआ है और वे भी अपनी दक्षता तथा निपुणता में वृद्धि कर रहे हैं।

रमेश साव - तकनीकी का प्रयोग करके कर्मचारियों को कैसे राजभाषा में काम करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है ?

श्री रावत जी - आज तकनीक सर्वसुलभ है जैसे कि कोई भी हो उसे मोबाइल का नैटवर्क सुलभ है यह बात अलग है कि सबके मोबाइल की कीमत दूसरों से अलग हो सकती है। आज तकनीकी अनुप्रयोग सभी के लिए सुलभ हैं इसलिए कार्मिकों को राजभाषा हिन्दी में काम करने के लिए सहज प्रेरित किया जा सकता है। नियमित प्रशिक्षण सत्र एवं तिमाही कार्यशालाएं इसमें महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभा रही हैं। अब कार्यशालाओं में नीति, नियमों के साथ ही अनुवाद तकनीक, कृत्रिम मेधा अनुप्रयोग, राजभाषा विभाग एवं सी-डैक द्वारा विकसित अन्य महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकीय उपकरणों एवं सहायताओं के बारे में विस्तार से प्रशिक्षण देने से कार्मिकों को हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

रमेश साव - अनुवाद अधिकारियों , हिंदी अधिकारियों के तकनीकी रूप से सशक्त होने को आप कैसे देखते है ?

श्री रावत जी - यह बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न है रमेश जी। आज यह सबसे सकारात्मक बदलाव देखने में आ रहा है कि अब हिन्दी अधिकारी एवं अनुवाद अधिकारीगण तकनीकी रुप से बहुत सक्षम हो रहे हैं और इससे उनकी कार्यकुशलता तथा प्रवीणता में वृद्धि हुई है। आज नई पीढ़ी के हिन्दी अधिकारी न कि भाषा में बल्कि कम्प्यूटर तकनीकों के अनुप्रयोगों में भी दक्ष हैं, सक्षम हैं। इससे एक तो राजभाषा कार्मिकों के स्वाभिमान में वृद्धि हुई है दूसरे कार्यालयों एवं संस्थाओं की मुख्य धारा के कार्यों में भी सहभागिता बढ़ी है। इसका सुखद परिणाम यह हुआ है कि कार्यालयों में हिन्दी तथा हिन्दी वालों को एक नई पहचान मिल रही है और उनकी योग्यता तथा क्षमता का सदुपयोग हो रहा है। आज राजभाषा कार्मिक अपने राजभाषा क्षेत्र के कार्यों के अतिरिक्त भी अन्य अनेक क्षेत्रों के कामकाज संभाल रहे हैं।

रमेश साव - राजभाषा के कार्यों में तकनीकी के प्रयोग तथा उसमें हिंदी अधिकारियों की भूमिका को आप कैसे देखते है ?

श्री रावत जी - राजभाषा के कार्यों में तकनीक के प्रयोग से हिन्दी अधिकारियों की भूमिका और महत्वपूर्ण हो गई है क्योंकि तकनीक के प्रयोग से हिन्दी का काम कार्मिक करने लगे हैं किंतु तकनीक पर निर्भरता से अगंभीरता में भी बढ़ोत्तरी हो रही है। आज दस-बीस पेज अंग्रेजी की सामग्री अनुवाद के लिए देकर यह भी कहा जाने लगा है कि जल्दी अनुवाद कर लाइए। अगर अनुवादक कहते हैं कि समय लगेगा तो यह सुनने को भी मिलने लगा है कि अरे! अब क्या समय लगेगा। गूगल से, कंठस्थ से कर लाएं कौन पढ़ता है ? इस अगंभीरता के कारण कभी-कभी बहुत अप्रिय और घातक स्थितियाँ पैदा हो रही हैं। मशीन अनुवाद कर सकती हैं किंतु संदर्भ, भाव, भाषाई बोधगम्यता की समझ मशीन में नहीं होती जिससे अर्थ का अनर्थ हो सकता है। राजभाषा के कार्यों में तकनीक प्रयोग से सुविधा तो हुई है किंतु दायित्व बढ़े हैं जिनकी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए।

रमेश साव - कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन के मूल मंत्र क्या हो सकते है ?

श्री रावत जी - देखिए रमेश जी। आप जानते ही हैं कि नियम 12 के अनुसार कार्यान्वयन का दायित्व कार्यालय प्रमुख का है और राजभाषा कार्मिक इसमें सहायक हो सकते हैं किंतु किसी को बाध्य नहीं कर सकते। कार्यालय प्रमुख प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीतियों के साथ ही उत्तरदायित्व का सौम्य अनुशासन भी लागू करेंगे तो निश्चित ही यह राजभाषा कार्यान्वयन का मूल मंत्र हो सकता है। मैं अपने व्याख्यानों एवं कार्यशालाओं में कार्यालय प्रमुखों से यह अनुरोध करता हूँ कि वे हस्ताक्षरों के लिए प्रस्तुत पत्रों को हस्ताक्षर से पूर्व संबंधित कार्मिकों को कहें कि इसे हिन्दी में भी बना कर लाया जाए तभी हस्ताक्षर होंगे। तात्कालिक प्रकृति के कार्यों को छूट दी जा सकती है किंतु नियमित प्रकृति के कागजों को विशेषतौर पर धारा 3(3) के कागजों को तो आधुनिक तकनीक की सहायता से निश्चित ही द्विभाषी तैयार किया जा सकता है।

एक और विशेष बात यह होनी चाहिए कि राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं नराकास की बैठकों में हिन्दी अधिकारी नहीं बल्कि संबंधित इकाइयों अथवा कार्यालयों के प्रमुखों को अपनी राजभाषा प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करनी चाहिए। इस प्रकार उनकी जबावदेही सुनिश्चित की जानी चाहिए। अभी होता क्या है कि कार्यालय में हिन्दी में काम नहीं हो रहा है तो इसका दोष हिन्दी अधिकारी का मानने की प्रवृत्ति है जबकि हिन्दी अधिकारी का कार्य कार्मिकों को हिन्दी में काम करने के लिए प्रशिक्षित करना है न कि सारे कार्यालय का काम हिन्दी में करना। राजभाषा नियम भी तो यही कहते हैं कि प्रत्येक कार्मिक को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान होना चाहिए। इसलिए जो कार्मिक अंग्रेजी में काम करना जानते हैं उन्हीं को अपना काम हिन्दी में करने के लिए अनुकूल वातावरण, प्रशिक्षण, झिझक को दूर करना, प्रोत्साहित करना, प्रेरणा एवं पुरस्कार मूल मंत्र हो सकते हैं। नियमित समीक्षा करते हुए अनुपालन को सुनिश्चित करने की प्रक्रिया लाभदायक हो सकती है।

आपका बहुत बहुत धन्यवाद रमेश जी आपने यह अवसर मुझे उपलब्ध कराया। मैं आपके सत्प्रयासों के लिए शुभकामनाएं देता हूँ। **धन्यवाद।**

हिंदी निबंध प्रतियोगिता
(हिंदी भाषी वर्ग) में प्रथम स्थान प्राप्त

आशुतोष मिश्र
प्रवर श्रेणी लिपिक
हितलाभ शाखा

भारतीय समाज एवं महिला सशक्तिकरण

भारतीय समाज एक प्राचीन सभ्यता का प्रतिनिधित्व करता है जहां महिलाओं की भूमिका सदियों से बदलती रही है। प्राचीन काल में महिलाएं समाज का केन्द्र बिन्दु हुआ करती थी जहां उन्हें सम्मान और अधिकार प्राप्त थे।

हमारे धर्मग्रन्थों में कहा गया है-

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते, सास्वतत्राफला क्रियाः ।।"

अर्थात जहाँ नारी का

सम्मान होता है वहां देवता निवास करते हैं और जहाँ नारी का तिरस्कार होता है वहां हमारे द्वारा किए गए अच्छे कार्य भी निष्फल साबित होते हैं।

प्राचीन काल में महिलाएं शिक्षा, कला, युद्ध तथा धार्मिक कार्यों में समान योगदान देती थी। समय के साथ समाज की व्यवस्था बदली तथा पितृसत्तात्मक स्थिति समाज पर हावी हो गई। इससे महिलाओं की स्थिति कमजोर हो गई तथा उनके अधिकार सीमित हो गए। हालांकि पिछले कुछ दशकों में भारत में महिला सशक्तिकरण को लेकर जागरूकता तथा प्रयासों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है जिसने भारतीय समाज में एक नए युग की शुरूआत की है।

महिला सशक्तिकरण का महत्व -

महिला सशक्तिकरण का अर्थ महिलाओं के अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्वायत्तता, स्वतंत्रता तथा समान अधिकार प्रदान करने से है। यह न केवल व्यक्तिगत स्तर पर महिलाओं के विकास के लिए आवश्यक है अपितु समाज के विकास का आधार भी है। महिलाएं हमारे समाज के आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करती है अत: बिना इनके विकास के समाज का समग्र विकास संभव नहीं है। इसी क्रम में जयशंकर प्रसाद जी ने कहा है.

" नारी तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास रजत-नग पग तल में।
पीयूष स्रोत सी बहा करो
जीवन के सुन्दर समतल में ।।"

सशक्त महिलाएं परिवार, समाज तथा राष्ट्र के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। यदि महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, रोजगार के अवसर, राजनीतिक भागीदारी का अधिकार दिया जाए तो वे अपनी क्षमता का परिचय देते हुए समाज में बदलाव कर सकती है।

भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति :-

भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति विगत कुछ वर्षों में तेजी से बदली है। शिक्षा एंव रोजगार के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। आज के समय में कई महिलाएं उच्च पदों पर आसीन है तथा अपने मनोबल तथा क्षमता के दम पर नई ऊचाईयाँ चढ़ रही है। शिक्षा, विज्ञान, खेल, कला तथा व्यापार के क्षेत्र में महिलाओं ने गगनचुम्बी उपलब्धियां हासिल की है। इस क्रम में कल्पना चावला, सानिया मिर्जा, किरण मजूमदार शॉ जैसी महिलाओं ने अपने कार्य के बदौलत समाज में प्रेरणा स्रोत बनकर उभरी है।

नारी की दृढ़शक्ति को कवयित्री कविता तिवारी ने अपनी पंक्तियों में कुछ इस तरह पिरोया है -

"जिम्मेदारियों का बोझ परिवार पर पड़ा तो
ऑटो, रिक्सा, ट्रेन को चलाने लगी बेटियाँ ॥
साहस के साथ अंतरिक्ष को भी भेद डाला।
सुना वायुयान भी उड़ाने लगी बेटियाँ ।।
और कितने उदाहरण ढूढ़ कर लाऊँ ।
हर क्षेत्र शक्ति आजमाने लगी बेटियाँ ॥
वीर की शहादत पर अर्थी को कांधा देने।
सुना शम्शान तक जाने लगी बेटियां ।।

अभी भी समाज के कई हिस्सो में महिलाओं को आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है। बाल विवाह, दहेज प्रथा, घरेलू हिंसा तथा लिंग के आधार पर भेद भाव ये सभी कारक आज भी महिलाओं के सशक्तिकरण में बाधक बने हुए हैं। ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण बनी हुई है उनके लिए शिक्षा तथा रोजगार का अवसर प्राप्त करना बहुत कठिन है।

नारी सशक्तिकरण का प्रयास -

महिला सशक्तिकरण को सफल बनाने के लिए सरकार, गैर सरकारी संस्थाएं तथा विभिन्न समाजिक संस्थाएं अपने-अपने तरफ से प्रयास कर रहीं है। सरकार ने इसके लिए कई योजनाएं तथा कानून लागू किए है जिससे नारी समाज में अपने अधिकार से वंचित न रह सके। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, सुकन्या समृद्धि योजना, महिला आरक्षण विधेयक उनमें से एक हैं। महिलाओं को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने के लिए सरकार द्वारा कौशल विकास कार्यक्रम चलाए जा रहें है ताकि महिलाएं समाज में उपस्थित सभी परिप्रेक्ष्य में आगे आ सकें।

निष्कर्ष :- महिला सशक्तिकरण एक निरंतर प्रक्रिया है जिससे समाज में बदलाव आ रहा है परंतु अभी भी मंजिल काफी दूर है। महिला को अगर सशक्त करना है तो हमारे समाज मे हो रहे व्याप्त लैंगिक भेद- भाव के जड़ को खत्म करना है ताकि महिलाएं अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से आगे बढ़ सकें।

हमारे आदिग्रन्थों में कहा गया

"नार्यस्तु राष्ट्रस्य श्वः ।।"

अर्थात नारी राष्ट्र का भविष्य है।

****

मेरे पापा

अर्णव आनंद
कक्षा: पंचम
सुपुत्रः श्री मनोज कुमार
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

पापा मेरे
सबसे अच्छे पापा
वे मुझे पढ़ाते-सीखाते
और चॉकलेट भी देते
बहुत प्यार करते मुझे
मेरे पापा

पर
कभी-कभी मुझे डांट भी देते
मेरे पापा
मेरे हर मुश्किल में साथ देते
मेरे पापा

और
मेरा होमवर्क भी करा देते
मेरे पापा

मेरे पापा
दुनिया के सबसे अच्छे पापा
मेला घुमाते, ढेरों खिलौने ला देते
तरह-तरह की कहानियां सुनाते
मेरे पापा
दुनिया के सबसे अच्छे पापा

महिला दिवस

मृत्युंजय प्रभाकर
सहायक निदेशक (वित्त एवं लेखा)

दिनांक – 08-03-2024 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर कार्यालय में आयोजित एक कार्यक्रम में श्री मृत्युंजय प्रभाकर, सहायक निदेशक ने सभा को संबोधित किया। प्रस्तुत है – संबोधन के कुछ अंश -

आप सभी को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं। विश्वभर में महिला दिवस 08 मार्च को मनाया जाता है। नारी के सम्मान में दो पंक्ति में कहना चाहूँगा –

हज़ारों फूल चाहिए एक माला बनाने के लिए
हज़ारों दीपक चाहिए एक आरती सजाने के लिए
हज़ारों बूंद चाहिए समुद्र बनाने के लिए
पर एक स्त्री अकेली ही काफी है
घर को स्वर्ग बनाने के लिए ..

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस सबसे पहले 1909 में मनाया गया था। इसकी खास वजह ये है कि इसी दिन अमेरिका के महिलाओं ने अपने अधिकारों के मांग की लड़ाई शुरू की थी। बाद में सोशलिस्ट पार्टी द्वारा इस दिन को महिला दिवस मनाने का ऐलान किया गया और इसे आधिकारिक मान्यता 1975 में संयुक्त राष्ट्र ने थीम के साथ इसे मनाना शुरू किया। फिर इसके बाद यूरोप की महिलाओं ने भी बाद में 8 मार्च को रैलियां निकाली। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओं व उनकी उपलब्धियों के प्रति सम्मान प्रक्रट कर उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है। नारी के रूप के सम्मान में दो पंक्ति:-

पापा की वो लाडली,
मां की वो दुलारी दिल से है नादान,
पर करती है सब पर जान कुर्बान,
है भाइयों की मुस्कान, परिवार की शान

इस दिवस को मनाने के पीछे एक मात्र उद्देश्य है महिलाओं के प्रति समाज में सम्मान की भावना उत्पन्न करना तथा उन्हें पुरुषों के समान अधिकार दिलवाना। इस दिवस को दुनियाभर में धूमधाम से मनाय जाता है। विभिन्न संस्थानों दफ्तर कॉलेज स्कूल आदि जगहों पर इस दिन क्विज कंपटीशन, भाषण, लेखन, स्पीच प्रतियोगिताएं व सेमीनार समेत अन्य रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

नारी के शिक्षित करने के बारें में दो पंक्ति-

अगर एक आदमी को शिक्षित किया जाता है तब एक आदमी ही शिक्षित होता है, लेकिन जब एक महिला को शिक्षित किया जाता है। तब एक पीढ़ी शिक्षित होती है।

हमारे देश में नारियाँ दुर्गा और काली के रूप में पूजे जाने के बावजूद भी आज के आधुनिक समाज में भी हर कदम पे उन्हें बराबरी और अपने हक के लिए जद्दोजहद करनी पड़ती है। इस विडंबना को रेखांकित करने वाली एक बहुत ही मर्मस्पर्शी पंक्ति है कि-

"एक तपती दोपहर है नारियों की जिंदगी
एक पथरीली डगर है नारियों की जिंदगी
चाहे हो अग्नि परीक्षा चाहे चौसर की बिसात
हर सदी में दाव पर है नारियों की जिंदगी।"

महिला के संबंध में कही गई कुछ पंक्ति इस प्रकार है कि –

कभी मां बन कर
कभी बहन बन कर
तो कभी पत्नी बन कर
एक आदमी को सही राह दिखाती है।
नारी को कभी कम न समझना
वो हर मोड़ पर आपका साथ निभाती है!

मैं कहूँगा की अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस एक ही दिन क्यूं मनाएँ, इसे तो हम सभी को हर दिन माना चाहिए। इनके लिए दो पंक्ति :-

हर दिन होना चाहिए नारी के नाम
बिना रुके करती है वो हर काम ।
उनके लिए न करो समर्पित सिर्फ एक दिन
नारी को करो नमन प्रतिदिन ।

अंत में, मैं आप सभी स्त्री शक्ति को नमन करते हुए ये दो पंक्तियां आप सबकी श्रद्धा में अर्पित करना चाहूंगा कि आप ईश्वर की एक अनूठी रचना हैं .... आपके बिना हमारा वजूद नहीं होता।

हिंदी निबंध प्रतियोगिता
(हिंदीतर भाषी वर्ग) में प्रथम स्थान प्राप्त

आधुनिक मनुष्य मशीन का गुलाम

अनुश्री धारा
प्रवर श्रेणी लिपिक
शाखा कार्यालय, बरानगर

आधुनिक मनुष्य : मशीन का गुलाम -

एक समय था जब मनुष्य अपने दैनिक काम की गतिविधियों के लिए आत्मनिर्भर हुआ करता था। पर जैसे-जैसे समय बीतता गया, मनुष्य अपने बुद्धि और शक्ति का उपयोग कर, अपने काम को आसान बनाने के लिए कई गैजेट का आविष्कार किया।

वर्तमान युग में घर से लेकर कार्यालय तक, मशीन एवं तकनीकी उपकरणों के इस्तमाल कर, जैसे मानव का कार्यभार कम हुआ है, दूसरी ओर विकास के इस होड़ में आगे बढ़ने की जद्दोजहद के बीच मानव ने आविष्कारों की ऐसी झड़ी लगाई कि इसका एक भयावह पहलू अब सामने आ रहा है जिसके फलस्वरूप एक एक नई प्रकार की निर्भरता और गुलामी उत्पन्न हो रही है।

तकनीकी गुलामी का प्रभाव -

आज मनुष्य दैनिक जीवन के हर कार्य करने के लिए मशीन पर निर्भर हो गया है। जैसे अभी दिन की शुरूआत सूर्य की पहली मुर्गे की आवाज़ से नहीं, बल्कि घड़ी या मोबाइल-फोन के अलार्म से होती है। काम-कार्य या यात्रा करते समय मनुष्य एक-दूसरे से बातचीत करने के बजाय गेमींग, एस-एम-एस अथवा गाना सुनने के लिए मोबाइल फोन का इस्तमाल करता है। घर, कार्यस्थल या गाड़ी में कूलर और पंखे की आदत पड़ गयी है। रसोई में चुल्हे की जगह अब इंडक्शन-ओभन, मिक्सर ग्राइंडर, आदि का प्रयोग होता है। पैसे की लेनदेन के लिए भी इंटरनेट बैंकिंग या एटीएम मशीन का इस्तमाल होता हैं। गर्भवती महिलाओं की जाँच से लेकर विद्युत शवदाह मशीन के द्वारा ही होता है।

कामकाजी जीवन में निर्भरता

वर्तमान युग में मशीनों और ऑटोमेशन का मानव के कार्यस्थल पर प्रभाव स्पष्ट देखने को मिलता है। घर की नींव बनानी हो, मिट्टी कटवाना हो या तालाब खुदवानी हो - मशीन के द्वारा दिनों का काम घंटो में निपटा लिया जा सकता है। कृषिकार्य में भी अब मशीन का उपयोग होने लगा है। यह देखा जा रहा है कि मशीन ने कई कार्यस्थल पर मानव का स्थान ले लिया है। परंतु भविष्य में इसका प्रभाव और भी खतरनाक होगा क्योंकि तब ए- आई (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) के कारण इन मशीनों को चलाने के लिए मनुष्य की जरूरत नहीं होंगी, वे स्वचालित होंगे, जैसे ऑटोमेटीक-कार, वैकुम-क्लीनर, आदि। मशीन के उपयोग के कारण जिस प्रकार मनुष्य की कार्यक्षमता में वृद्धि आई, वहीं दूसरी ओर कार्यकुशलता में बाधा उत्पन्न हुई है।

व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में प्रभाव

अत्यधिक समय तक मशीनों का व्यवहार करने के कारण मानव जीवन पर नकारात्मक प्रभाव भी बढ़ रहा है। स्क्रीन की ओर कई घंटों तक नज़र गड़ाए रखने हेतु शारीरिक गतिविधियों और दिनचर्या के कमी के कारण मानसिक और शारीरिक समस्याएँ उत्पन्न हो रही है। बच्चे दूसरे के साथ खेलने के बजाय गेम-स्टेशन, मोबाईल-फोन से खेलना पसंद करते है, जिससे इनका मानसिक, शारीरिक और सामाजिक विकास नहीं हो पा रहा है। व्यक्ति अब व्यक्तिगत विचारों की जगह ऑनलाईन ट्रेंड्स और सामाजिक मानदण्डों के आधार पर निर्णय लेने लगा है।

निष्कर्ष

दिन हो या रात मशीन अलाउद्दीन के चिराग के जिन्न की तरह मनुष्य के हर आदेश का पालन करता है, लेकिन कब मनुष्य इन मशीनों की सलाखों के बीच बंदी बन गया है, यह पता तक नहीं। मानव ने मशीन का आविष्कार अपने काम को सहज बनाने के लिए किया है ना कि उसकी गुलामी करने के लिए। इस स्थिति से निपटने के लिए यह आवश्यक है कि मनुष्य मशीन का इस्तेमाल अपनी बुद्धि के बल पर और संतुलित ढंग से करें, ताकि उनकी सोच, विचार और मानवीय मूल्य स्वतंत्र रह सके।

मनोज कुमार
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

मैं.. धोबी का कुत्ता

(घर से दूर और नौकरी के बारह साल)

बरसों बाद
जब मैं पहुंचा अपने गांव में
खेत खलिहान में
और
पीपल की छांव में
देखने लगे मुझे सब हैरान-सा
मानो अपने घर में हूँ मैं मेहमान-सा

नौकरी की जुस्तजू में
हम तो बेघर हो गए
गांव से हम क्या निकले
हम तो दर-ब-दर हो गए
हम करने लगे कुछ ऐसे नौकरी
पेट तो भरा पर भूख बढ़ने लगी
आज बारह साल हो गए
घर से दूर नौकरी करते-करते
माह के अंत में सैलरी से
खुशियों की किश्तें भरते-भरते
जब दूर शहर के मकान में
नया सामान सजा रहे थें
समझ में नहीं आया
घर से दूर हुए
या नया घर बसा रहे थें
आज पैसे हैं, नौकरी है
शहर में नौकर हूं
रहने को घर है
पर घर से बेघर हूँ
घर से दूर होकर
जो अब शहर में बस लिए हैं

पहले भाई-बहन संग-संग रोते थें
हंसते भी हैं अब तो अलग-अलग होते हैं
पहले बेशक हमारे पांव नंगे थे
घिसे चप्पल होते थें
पर मन आजाद था
और पूरा गांव घूम लेते थें
आज जूते महंगे हैं
पर छोटा-सा सफर है
एक तरफ ऑफिस है
दूसरी तरफ क्वार्टर है
अब तो सुकूं की जिंदगी
नौकरी में कट रही है
जिंदगी भर की खुशियां बेचकर
महीने के अंत में सैलरी खरीद रही है

फिर,
एक दिन ऐसा आएगा
आंखों के ख्वाब मेरे बूढ़े हो जाएंगे
जो बुने थें आंखों ने सपने कभी
वो सब बिखर-से जाएंगे
जिंदगी भर की कमाई के कुछ कागजी टुकड़े
कुछ स्मृति चिन्ह के साथ
नौकरी से रुखसत हो जाएंगे
फिर,
मैं लौट आऊंगा
उसी गांव में
उसी दहलीज पर, उसी चौखट पर
पहले जहां आंगन होती थीं
अब वहां दीवारें खड़ी मिलेंगी

दूध पीते बच्चे हो गए हैं अब बड़े
संभालने लगे वे अपनी दुनियादारी
जिन सबके लिए मेरा चेहरा अनजान होगा
उन्हें लगेगा मैं घर में कोई मेहमान होऊँगा
दीवारों पर उग गई घास
जाले लगे मकान भी
पहचानने से इंकार कर जाएंगे
और..
पहचानेंगे भी मुझे वह क्यों भला
मैं ही भला कब
उनसे कोई यारी निभा पाया
ना कभी उनकी खुशियों में
ना उनके गम में शरीक हो पाया
भैया-भौजी, चाचा-चाची, नाना-नानी
सब रिश्तेदारी मोबाइल पर ही निभा पाया
दूर शहर की नौकरी में
कुछ ऐसे मजबूर रहा
सुख-चैन, सुकूं - सबसे दूर रहा
गांव की नाराजगी भी तो
जायज ही होगी
हमने भी तो गांव में मां को छोड़कर
दूर शहर से दिल्लगी कर ली थी

नौकरी के चक्कर में
घर का रहा ना बाजार हाट का
जैसे मैं बन गया धोबी का कुत्ता
ना घर का ना घाट का..

मणिशंकर पाणि
प्रवर श्रेणी लिपिक
रोकड़ शाखा

शांति और सुंदरता का अनूठा मिश्रण : पंचमढ़ी

मुझे बचपन से ही जंगल, पहाड़, नदी, झरने आदि देखना, उनका चित्र देखना, जंगली जानवरों का चित्र बनाना आदि बहुत पसंद था। पहाड़ों का चित्र देखने से उनपे चढ़ने का मन करता था। सोचता था, कब इन पहाड़ों पर चढ़ने का मौका मिलेगा? हिंदी में एक कहावत है – "जहां चाह वहाँ राह!" कोई अपने अंतर्मन से किसी चीज को पाने की कोशिश करता है और उसके लिए अपने दिलों जान से कोशिश करता है तो भगवान जरूर उसका सुन लेते हैं। मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। मैं केन्द्रीय विद्यालय के नौवीं कक्षा का छात्र था। केन्द्रीय विद्यालय में स्काउट-गाइड का एक विभाग है। नौवीं कक्षा में स्काउट-गाइड के छात्र-छात्राओं के लिए पर्वतारोहण का एक कोर्स था। उसमे इच्छुक छात्र-छात्राओं को उनके अभिवाकों के अनुमति के अनुसार इस कोर्स मे शामिल किया जाता था। इस कोर्स का नाम सुनते ही मैं खुशी से "फूला न समाया।"

तीस बच्चों का एक टीम जाना था साथ मे दो शिक्षक और एक शिक्षिका। पर्वतारोहण का स्थान था- "पंचमढ़ी", जो मध्यप्रदेश मे स्थित है। मैंने अपनी माँ से पंचमढ़ी के मनोरम दृश्य के बारे मे सुना था क्योंकि मेरी माँ भी उसी स्कूल की शिक्षिका थीं और पंचमढ़ी से ही स्काउट-गाइड का प्रशिक्षण प्राप्त की थीं। उसी समय से मैं पंचमढ़ी की सैर करने के लिए व्याकुल था।

स्कूल से घर आते ही मैंने सारी बात अपनी माँ को बताई। माँ ने मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए कहा "वहाँ जाना तुम्हारे बस की बात नहीं है। वहाँ एक दिन बिताना तुम्हारे लिए मुश्किल है, रही 15 दिनों की बात। तुमसे बिल्कुल नहीं होगा। वहाँ रात में तंबू में सोना पड़ता है, रात मे तरह–तरह के सांप और बिच्छू सैर करने निकलते हैं।" यह सुनकर मैंने खूब रोना-धोना शुरू कर दिया और अंत में मैं विजयी हुआ। मुझे पंद्रह दिनों के लिए पर्वतारोहण की अनुमति मिल गई। मैं खुशी से फूला नहीं समा रहा था। ऐसा लग रहा था मानो किसी ने आसमान से तारे तोड़कर मेरे हाथ में रख दिए हों।

मई का महीना था। भीषण गर्मी, चारों तरफ लू चल रही थी। सुना था, पंचमढ़ी हिल स्टेशन है, जरूर ठंडा होगा। मन में खुशी और उमंग भरी हुई थी। खुशी ज्यादा इसलिए थी क्योंकि पहली बार माता पिता को छोड़कर दोस्तों के साथ बाहर जा रहा हूँ। पंद्रह दिन मस्ती करने को मिलेगा। दिन-रात दोस्तों के साथ, बाहर खाने को मिलेगा, पहाड़ों पर चढ़ने को मिलेगा आदि।

15 मई से कोर्स शुरू होने वाला था। हमें दो दिन पहले अर्थात 13 मई शाम को घर छोड़ना था। 12 मई को हमारे शिक्षक महोदय ने बताया की एक कोच मे टिकट कनफर्म नहीं हुआ है। 30 बच्चों को 3 अलग कोच में मिला है। यह सुनकर खुशी के ज्वार मे कुछ भाटा पड़ गया। कुछ देर के लिए उदासी छा गई। यह देखकर शिक्षक महोदय ने कहा। "अरे! उदास क्यों होते हो? चलो न, रास्ते में एडजस्ट कर लेंगे।" यह सुनकर फिर से खुशी छा गई।

13 मई शाम को हम आसनसोल स्टेशन पहुंचे। वहीं बाम्बे मेल पकड़ना था। हमारे शिक्षक हमेशा हिदायत देते रहे कि अपने-अपने सामान का ध्यान रखना। ट्रेन अपने निर्धारित समय पर स्टेशन पहुंची और हम सब भगवान का नाम लेके ट्रेन पर चढ़ गए। सभी के माता-पिता स्टेशन पहुंचे हुए थे। ट्रेन मे चढ़ते समय सभी के आखें नम हो गई। कुछ देर के लिए हम सब उदास हो गए क्योंकि पहली बार हम सब अपने माता-पिता से अलग हो रहे थे। ट्रेन चल पड़ी। कुछ देर बाद सब ठीक हो गया।

अब फिर वही उत्सुकता- कैसी जगह होगी, कैसा पहाड़ होगा, कौन-कौन से जंगली जानवर देखने को मिलेंगे आदि। कुछ देर तक खूब हल्ला हुआ फिर सब अपने घर से लाए हुए टिफ़िन बॉक्स खोलकर खाने लगे। हमारे

शिक्षक भी हमारे साथ डिनर कर रहे थे। आश्चर्य की बात यह थी कि जो शिक्षक क्लास मे इतने कड़े स्वभाव के लगते थे, वो एकदम अलग लग रहे थे। वे भी हमारे साथ ज़ोर-ज़ोर से हंसते, गाने बजाते हुए मस्ती कर रहे थे। वे बोले की "डरो मत! कुछ दिन हमें अपना दोस्त समझो।" वाह! और क्या चाहिए। रात को हम सब अपनी सीट पर जा कर सो गए। दूसरा दिन भी इसी तरह बीत गया। दूसरे दिन ही हम सब अपने गंतव्य स्टेशन पिपरिया रेल्वे स्टेशन पहुंचे। रात हो चुकी थी इसलिए होटल बुक करना पड़ा। हम सब काफी थके हुए थे इसलिए कपड़े बदल कर तुरंत सो गए।

अगले दिन सुबह-सुबह, नहा-धो कर नाश्ता करके हम सब बस स्टैन्ड पहुंचे। बस में सीट मिल गई क्योंकि वहाँ यात्रियों को खड़ा नहीं रखा जाता। मजे की बात यह थी की ऐसी घुमावदार सड़क मैंने पहले कभी नहीं देखी थी। बस घूम-घूम कर पहाड़ पर चढ़ रही थी। रास्ते के एक तरफ पहाड़ तो दूसरी तरफ गहरी खाई

थी। हम सभी डरे सहमे हुए थे। नजारा काफी सुंदर था। ऐसा लग रहा था मानो किसी चित्रकार ने बहुत ही ध्यान पूर्वक पहाड़ों का चित्रण किया है। पहाड़ियों के बीच बहुत सारे झरने अपनी मंथर गति से अपनी गंतव्य की ओर अग्रसर थे। पंचमढ़ी के पहाड़ों पर ही सेना का प्रशिक्षण स्थल है। जगह जगह प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है। यह देखकर बहुत अच्छा लगा।

लगभग दो घंटे की बस यात्रा के बाद हम सब अपने प्रशिक्षण केंद्र पहुंचे। वहाँ पहुंचते ही हम सब का मुँह सुख गया। वहाँ बहुत सारे तंबू लगाए हुए थे। हमारे शिक्षक ने कहा कि हमें इन तंबुओं में सोना पड़ेगा। पहली रात बहुत कष्ट से गुजरी। तंबू में सोना बहुत अजीब लग रहा था। वहाँ देश के हर कोने से केन्द्रीय विद्यालय के छात्र और शिक्षक आये हुए थे। वहाँ सुबह सुबह 6 बजे से शाम 6 बजे तक विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते थे। कैसे पहाड़ों पर चढ़ा जाता है, चढ़ने के लिए कौन से उपकरणों की आवश्यकता होती है। कौन सी औषधियाँ साथ रखनी होती है, ये सारी चीजें बताई गई। वहाँ के मनोरम दृश्य को लिपिबद्ध करना तो मुमकिन नहीं है पर इतना बताना चाहूँगा कि ऐसा लगता था की ये सब प्राकृतिक नहीं है। किसी ने फ़ुरसत से इन्हे सजाया है। जगह जगह झरने के पानी मे आम-जामुन पड़े हुए थे। एक-दो बार हमने उन्हे उठाकर खाया भी। वो इतने मीठे थे जैसे मिस्री के दाने। इतने तरह के पक्षियों को मैंने पहली बार देखा था। सुंदर-सुंदर फूल, लताओं को मैं निहारता रहता और सीटी की आवाज से आगे बढ़ना पड़ता।

इस तरह धरती मां के सुंदर रूप को निहारते हुए 15 दिन कैसे बीत गए पता ही नहीं चला। अंतिम दिन सभी का मन दुखी था। सब दोस्तों से घुल-मिल जाना और अब सबसे बिछड़ना काफी कष्टदायक लग रहा था। आने से एक दिन जाना ही पड़ता है। हम सब अपना-अपना सामान बांधकर पुनः उन्ही घुमावदार सड़कों से होते हुए स्टेशन पहुंचे। ट्रेन आते ही हम सब उस पर चढ़ गए। इस बार सबका सीट एक ही कोच मे था। हम सब थके हुए थे इसलिए तुरंत सो गए। अगले दिन शाम को ट्रेन आसनसोल स्टेशन पहुंची। सभी के माता-पिता स्टेशन आए हुए थे। उनको देखकर सबका दिल खिल उठा क्योंकि लगभग 20 दिनों तक उनका मुस्कुराता हुआ चेहरा आखों को नसीब नहीं हुआ था। मेरी माँ ने मुझे प्यार से गले लगा लिया।

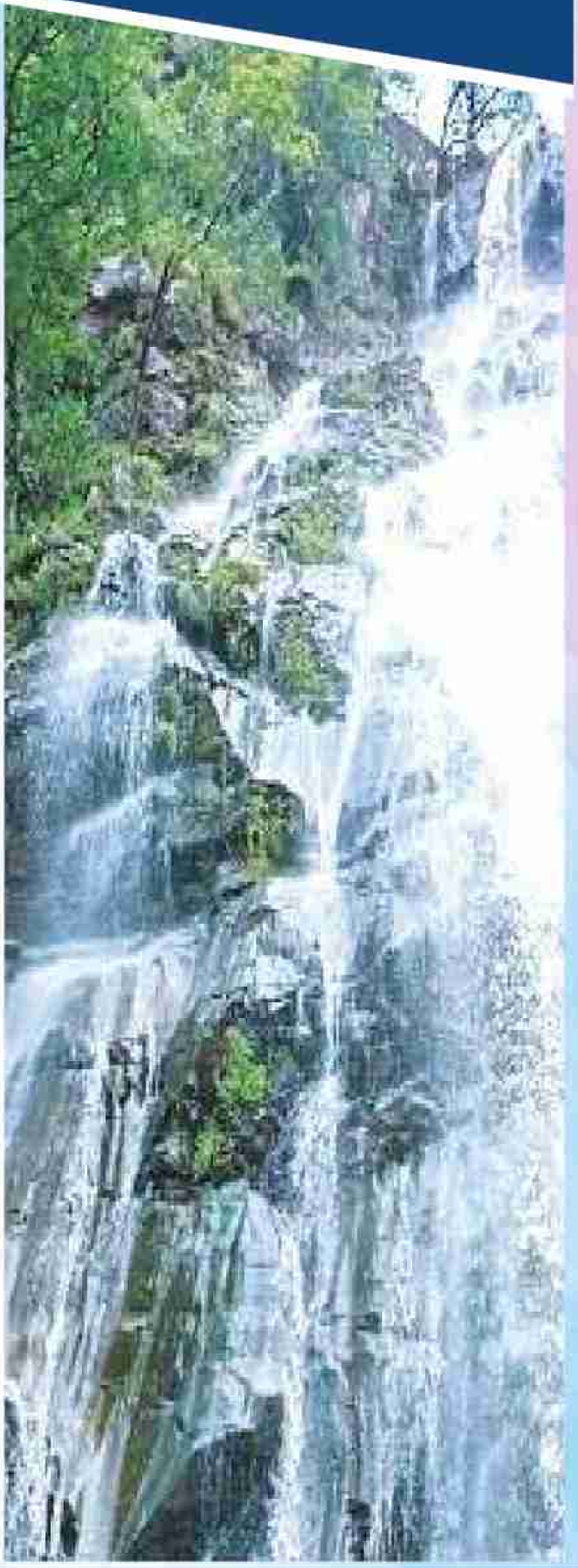

वो मेरे सुनहरे सपने हकीकत मे बदल गए जिन्हे में कभी भूल नहीं पाऊँगा। महाराज पांडु के पाँच पुत्र थे जिन्हे पांडव कहा जाता है, वे अपने लिए पाँच कुटीर बनाए थे। हमने उनके भी दर्शन किए। जैसे पांडव अमर है ठीक उसी तरह पंचमढ़ी की यात्रा मेरे लिए सदैव अमर रहेगी।

****

क.रा.बी.नि.
E.S.I.C.

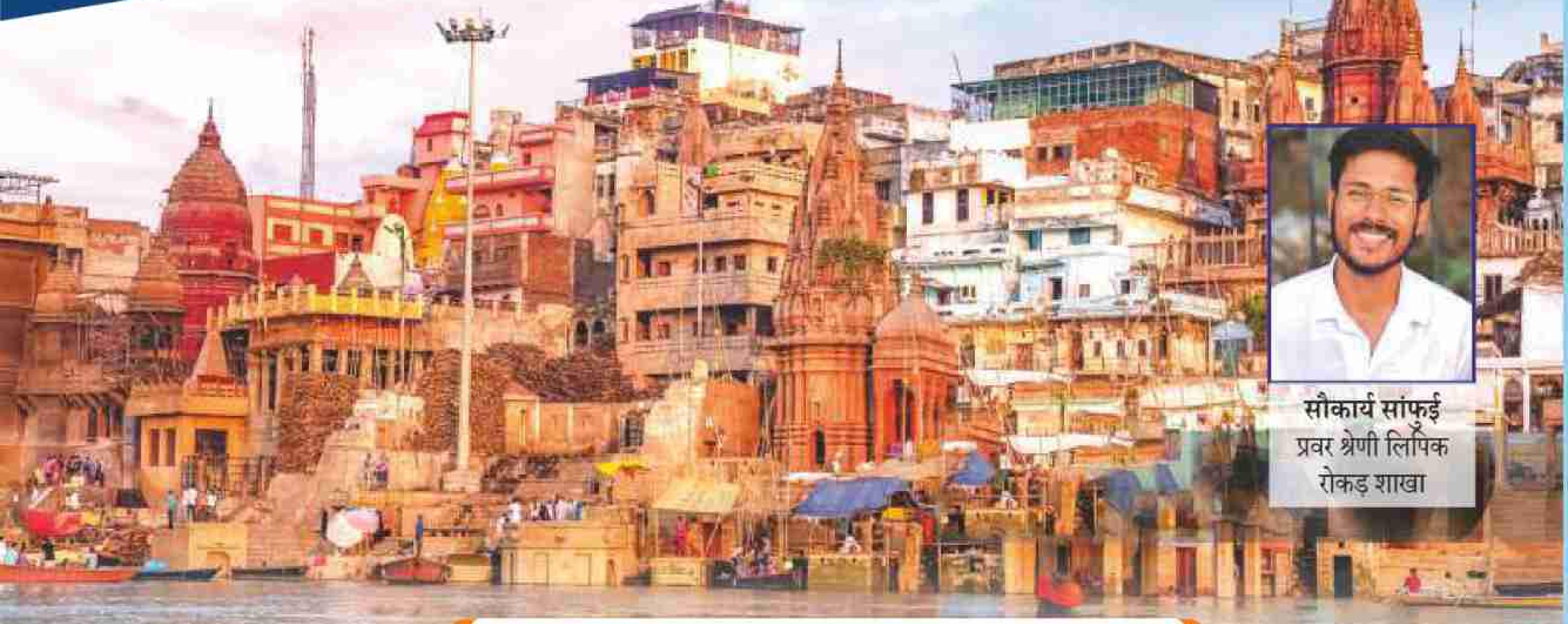

सौकार्य सांफुई
प्रवर श्रेणी लिपिक
रोकड़ शाखा

वाराणसी का भ्रमण

मेरी वाराणसी की यात्रा फरवरी माह में हुई। इसे 9 फरवरी को लगभग 8:30 बजे दून एक्सप्रेस के माध्यम से शुरू किया गया था और हिंदू धर्म के पवित्र शहर तक पहुंचने में लगभग 14 घंटे लगे। वाराणसी की स्थानीय संकरी गलियों और स्थानीय मंदिरों को देखते हुए शहर की खोज शुरू हुई।

जैसे ही शाम ढलती है, दशाश्वमेध घाट मंत्रमुग्ध कर देने वाली गंगा आरती, भक्ति और आध्यात्मिकता के नजारे से जीवंत हो उठता है। पूरे वर्ष, आरती शाम 6 बजे शुरू होती है और लगभग 45 मिनट तक चलती है। यह समारोह लोगों के लिए बेहद खास है. यह गंगा नदी के प्रति सम्मान और धन्यवाद दर्शाता है। यह आशीर्वाद और शांति जैसी अच्छी चीजें मांगने का भी समय है।

समारोह में होना एक विशेष स्थान पर होने जैसा है। आप धूप की गंध और घंटियाँ सुन सकते हैं। यह शांतिपूर्ण महसूस कराता है और लोगों को किसी बड़ी चीज़ से जुड़ा हुआ महसूस कराता है। चाहे आप आस्तिक हों या जिज्ञासु यात्री, गंगा आरती वाराणसी की आत्मा की एक झलक प्रदान करती है, जो आपको पवित्र जल द्वारा इस प्राचीन शहर के जादू और रहस्य का अनुभव करने के लिए आमंत्रित करती है।

गंगा आरती समाप्त होने के बाद, कोई भी वहां कुछ और घंटों तक रुक सकता है, तस्वीरें ले सकता है, स्थानीय लोगों के साथ बातचीत कर सकता है, कुछ कप चाय पी सकता है और शहर के वास्तविक सार को महसूस कर सकता है। घाटों से गुजरते समय, किसी को कई आनंददायक घटनाएं देखने को मिलती हैं जो किसी के मन को गहराई से छू सकती हैं, जैसे कि कुछ छोटे बच्चे कुछ आगंतुकों द्वारा पेश किए गए गर्म नूडल्स का आनंद ले रहे हैं।

मंदिर, जैसे - संकट मोचन हनुमान मंदिर, श्री सत्यनारायण तुलसी मानस मंदिर, श्री अन्नपूर्णा मंदिर, बीएचयू परिसर में श्री काशी विश्वनाथ मंदिर - शहर के प्रसिद्ध मंदिरों के दर्शन की जा सकती है। उसके बाद, कोई अपने दोपहर

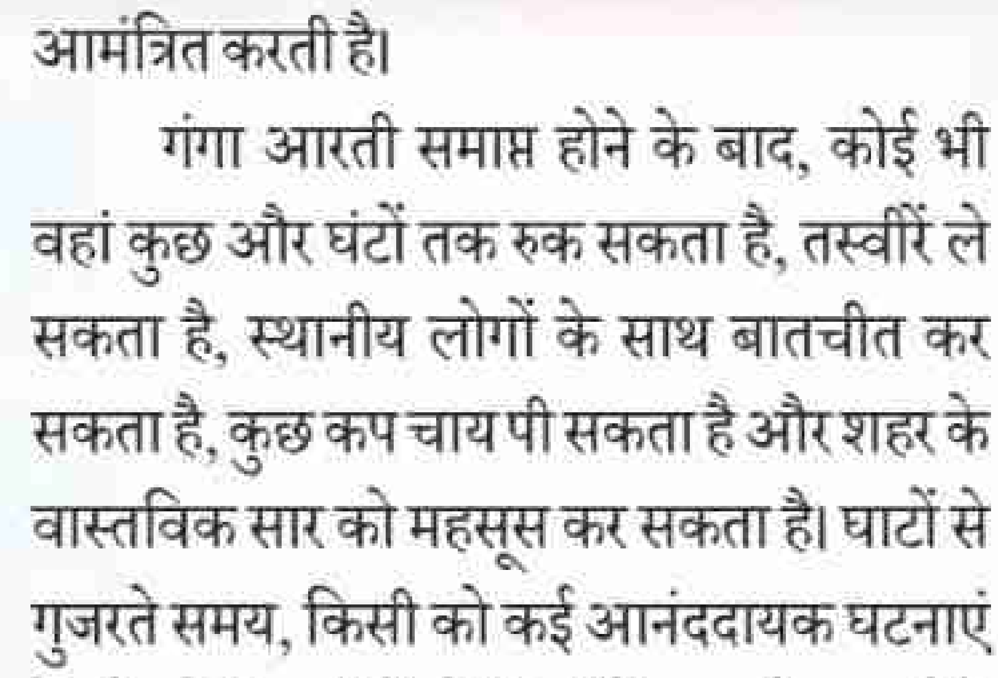

संकट मोचन हनुमान मंदिर

श्री सत्यनारायण तुलसी मानस मंदिर

श्री अन्नपूर्णा मंदिर

श्री काशी विश्वनाथ मंदिर -

के भोजन के बाद और घाटों की खोज शुरू कर सकता है।

वाराणसी में घाट नदी के किनारे की सीढ़ियाँ हैं जो गंगा नदी के तट तक जाती हैं। शहर में कुल 84 घाट हैं। अधिकांश घाट स्नान और पूजा अनुष्ठान घाट हैं, जबकि दो घाट - मणिकर्णिका और हरिश्चंद्र - विशेष रूप से दाह संस्कार स्थलों के रूप में उपयोग किए जाते हैं।

जब आप नदी के किनारे चलते हैं, तो आप कई आश्चर्यजनक दीवार कलाएँ देख सकते हैं जो इस जगह के बारे में बहुत कुछ बताती हैं। इन रंगीन दीवार कलाओं की समृद्धि लोगों की आस्था और भावनाओं को दर्शाती है। ये दिखाते हैं कि कैसे चीजें हमारी समृद्ध संस्कृति की तरह हमेशा के लिए बनी रहती हैं।

घाट की प्राकृतिक सुंदरता को शब्दों में बयाँ करना वाकई मुश्किल है। इन घाटों का इतिहास, महत्व हर किसी को इनके बारे में और जानने के लिए आकर्षित करता है। तैरती नावें आगंतुकों को उस पर जहाज चलाने और गंगा नदी की प्राकृतिक सुंदरता का आनंद लेने के लिए आकर्षित करती हैं।

मणिकर्णिका घाट और हरिश्चंद्र घाट पर दाह संस्कार साल भर दिन-रात किए जाते हैं। वाराणसी में अंतिम संस्कार करना शुभ माना जाता है, और पूरे भारत से कई लोग अपने मृत प्रियजनों के शवों को अंतिम संस्कार के लिए यहां लाते हैं। हिंदू मान्यता के अनुसार वाराणसी में अंतिम संस्कार करने से मोक्ष मिलता है

अर्थात् जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति मिलती है। यह अनुष्ठान वाराणसी में सदियों से एक परंपरा रही है और हिंदू विश्वास और अभ्यास का एक अभिन्न अंग बनी हुई है।

मणिकर्णिका घाट

वाराणसी में नेपाली मंदिर एक विशेष स्थान है जो नेपाल और भारत की संस्कृतियों का मिश्रण दर्शाता है। यह मंदिर अलग दिखता है क्योंकि इसकी छत ऊंची है और इसमें सुंदर नक्काशी और पेंटिंग हैं। यह भगवान पशुपतिनाथ को समर्पित है, जो हिंदू भगवान शिव का एक रूप हैं जिनकी नेपाली लोग पूजा करते हैं।

लोग यहां प्रार्थना करने और शांति महसूस करने आते हैं। यह मंदिर हमें नेपाल और भारत के बीच मजबूत बंधन की याद दिलाता है, और यह वाराणसी में लोगों के लिए भगवान से जुड़ने के लिए एक अच्छी जगह है।

आखिरी दिन, सुबह में सारनाथ जाने का विकल्प चुन सकते हैं । वाराणसी के पास स्थित सारनाथ, बौद्ध धर्म के केंद्र में गहरा महत्व रखता है। यहां, दो सहस्राब्दी पहले, बुद्ध ने अपना पहला उपदेश दिया था, जिससे एक आध्यात्मिक यात्रा की शुरुआत हुई जो दुनिया भर में लाखों लोगों को प्रेरित करती रही। सारनाथ जाने पर, किसी का स्वागत धमेक स्तूप और अशोक स्तंभ जैसी प्राचीन संरचनाओं से होता है, जिनमें से प्रत्येक में बीते युग की कहानियां हैं और करुणा

सारनाथ

और ज्ञान की कालातीत शिक्षाओं को प्रतिबिंबित करती हैं। सारनाथ का शांत वातावरण, आत्मनिरीक्षण और ध्यान के अवसर के साथ मिलकर, इसे आंतरिक शांति और आध्यात्मिक विकास के चाहने वालों के लिए एक अभयारण्य बनाता है। जैसे ही पर्यटक इसके शांत बगीचों में घूमते हैं और इसके ऐतिहासिक खजाने का पता लगाते हैं, वे इस पवित्र स्थल में व्याप्त ज्ञान के प्रति श्रद्धा की भावना महसूस करने से खुद को रोक नहीं पाते हैं।

दोपहर के समय शांति का अनुभव करने के लिए आपको रामनगर किले का दौरा करना चाहिए। 250 साल पहले निर्मित, यह वाराणसी के राजाओं का घर था, जिन्हें काशी नरेश के नाम से जाना जाता था । किले की लाल दीवारें और जटिल डिज़ाइन इसकी भव्यता को दर्शाते हैं, और अंदर, एक संग्रहालय पुराने शाही कपड़े, फैंसी कारों और प्राचीन हथियारों को प्रदर्शित करता है। प्रत्येक वर्ष नवरात्रि के दौरान, रामनगर रामलीला में रामायण के दृश्यों का प्रदर्शन करने वाले कलाकारों के साथ किले को जीवंत बना दिया जाता है। रामनगर किले का दौरा करने से शाही वैभव और सांस्कृतिक विरासत के बीते युग की झलक मिलती है।

यात्रा 13 फरवरी को हिमगिरि एक्सप्रेस से वाराणसी स्टेशन पर चढ़कर घर वापसी पर समाप्त होती है । हालाँकि समय यहाँ समाप्त हो सकता है, लेकिन इन तस्वीरों में कैद यादें चमकती रहेंगी, जो उन सभी के लिए वाराणसी के कालातीत सार को रोशन करती रहेंगी जो अपनी आध्यात्मिक यात्रा पर निकलते हैं।

****

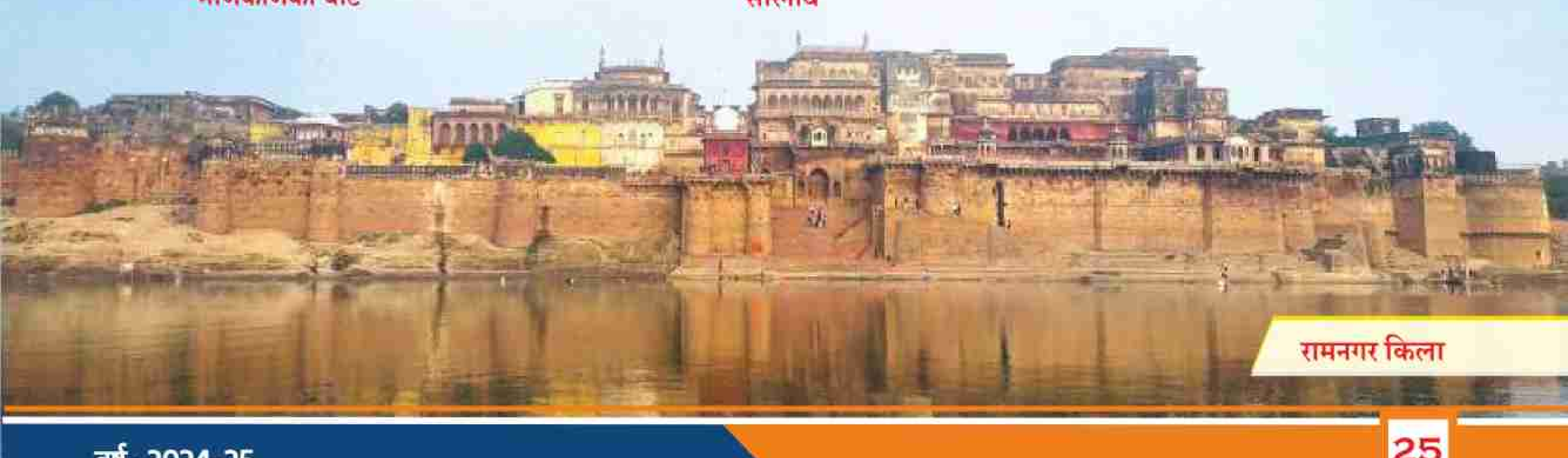

रामनगर किला

चाहत थी चाँद पे जाने की...

चाहत थी चाँद पे जाने की
क्या-क्या न कर जाने की
जिन ख्वाबों ने नींद उड़ायें
उन ख्वाबों पे मर जाने की
चाहत थी चाँद पे जाने की...

था देश - विदेश घूमना
हर घाटी-दर्रा चूमना
जो पर्वत था सबसे ऊँचा
उस पर्वत से उड़ जाने की
चाहत थी चाँद पे जाने की...

राह ताकती दो आँखे हैं
समय काटती दो आँखे हैं
बुझते दीपक जिन आँखो के
उन आँखों में चमक जगाने की
चाहत थी चाँद पे जाने की...

कुछ समझदारी दिखलानी थी
कुछ दीनदारी निभानी थी
रिश्तों के बीज से अच्छे बोने
खुशियों की फ़सल उगाने की
चाहत थी चाँद पे जाने की...

सपने तो सपने होते हैं
ये थोड़े ही अपने होते हैं
उम्र की तेज रफ्तार से
हिम्मत कहाँ टकराने की
चाहत थी चाँद पे जाने की...

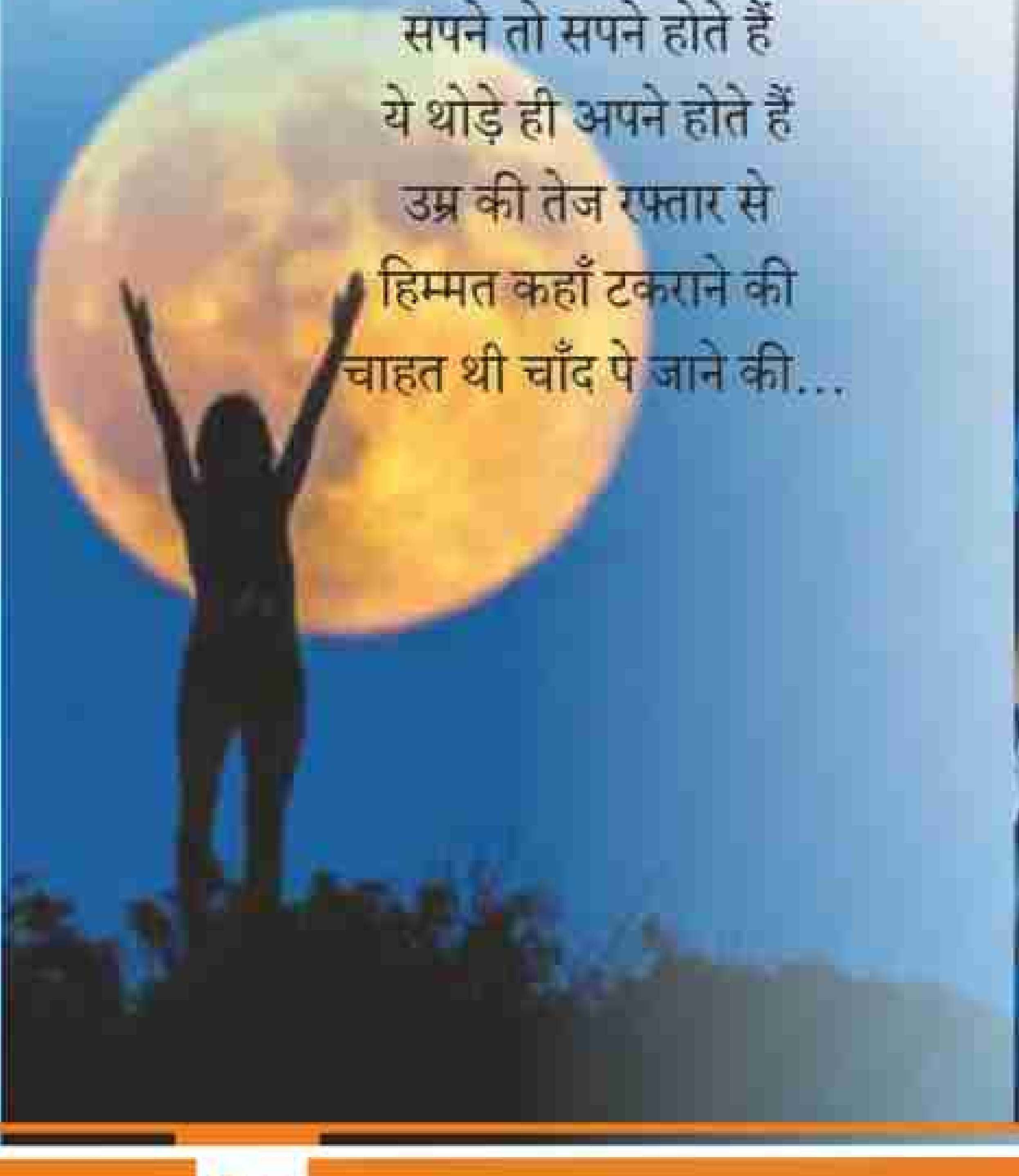

सपने

फूल से कोमल, प्यारे-प्यारे सपने
प्यार से पले हैं, दुलारे सपने
माघ में बहती बहारें सपने
सावन की रिमझिम-फुहारें सपने

बाट जोहे कि राह निहारे सपने
हमारे सपने, तुम्हारे सपने...

है कैद में नींद की बेचारे सपने
जमीं पर खुद को कैसे उतारे सपने ?
घूमते थे ज़ेहन में आवारे सपने,
देखते थे सैंकड़ों नजारे सपने

बैठे हैं आज मुंह-उतारे सपने,
कोसते हैं हमें, ये सारे सपने
डूबते हुए हमको पुकारें सपने
बचा लो!, हम हैं अपने ही तुम्हारे सपने
बेचारे सपने, प्यारे-प्यारे सपने
किस्मत के मारे हमारे सपने ...

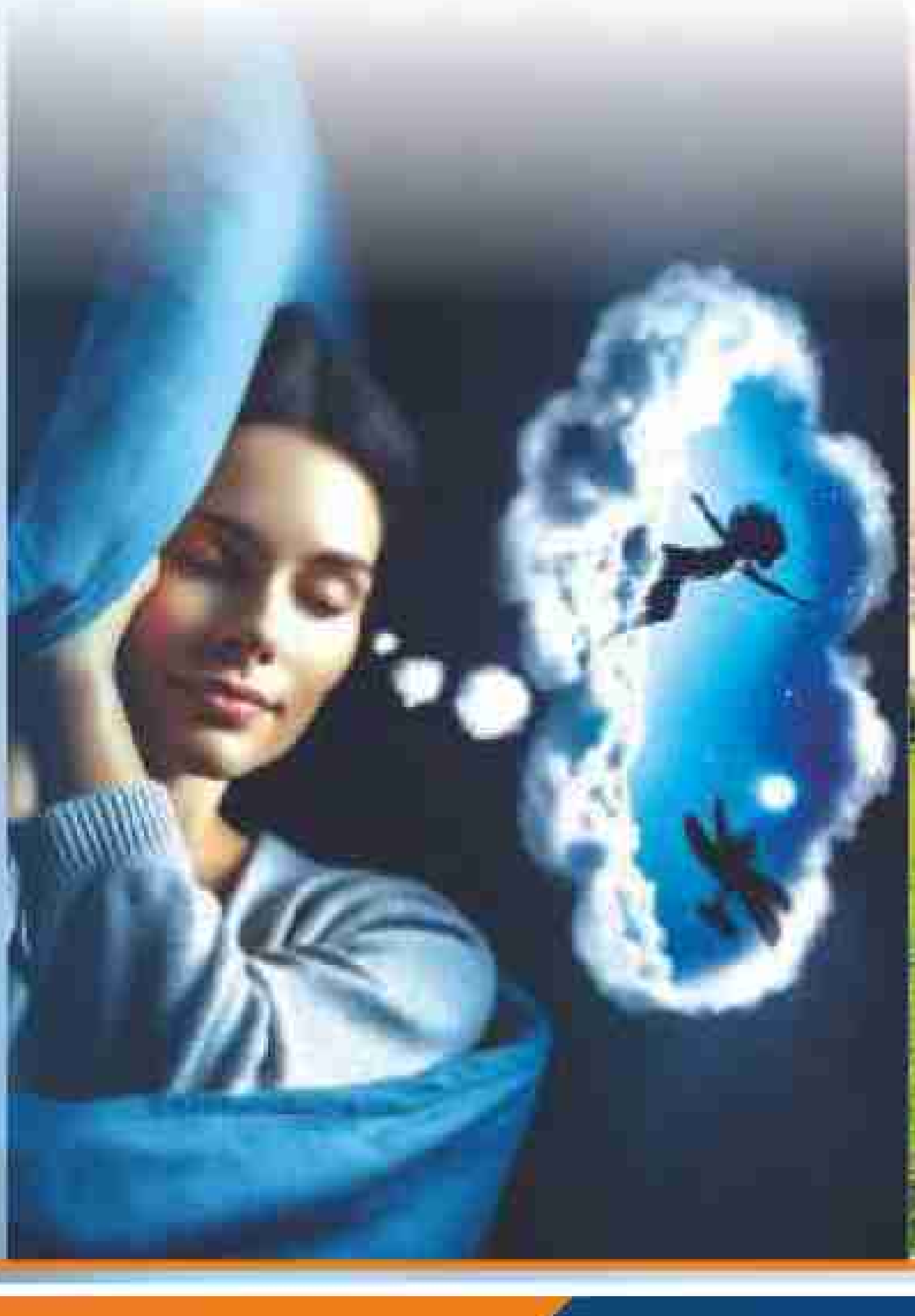

यादों के साये

जीवन की चिलमिल धूप में
यादों के साये भाते हैं,
उर के झिर-झिर संदूक में
यादों के साये भाते हैं,

अवसाद नहीं, उन्माद नहीं
जीवन का ही तो रंग है,
अतीत से जुड़ा
हाँ, प्रीत से जुड़ा,
वर्त्तमान का एक अंग है ;

जीवन-नद का यह मनोरम तट
जहाँ बैठ के हम सुस्ताते हैं,
जीवन की चिलमिल धूप में
यादों के साये भाते हैं...

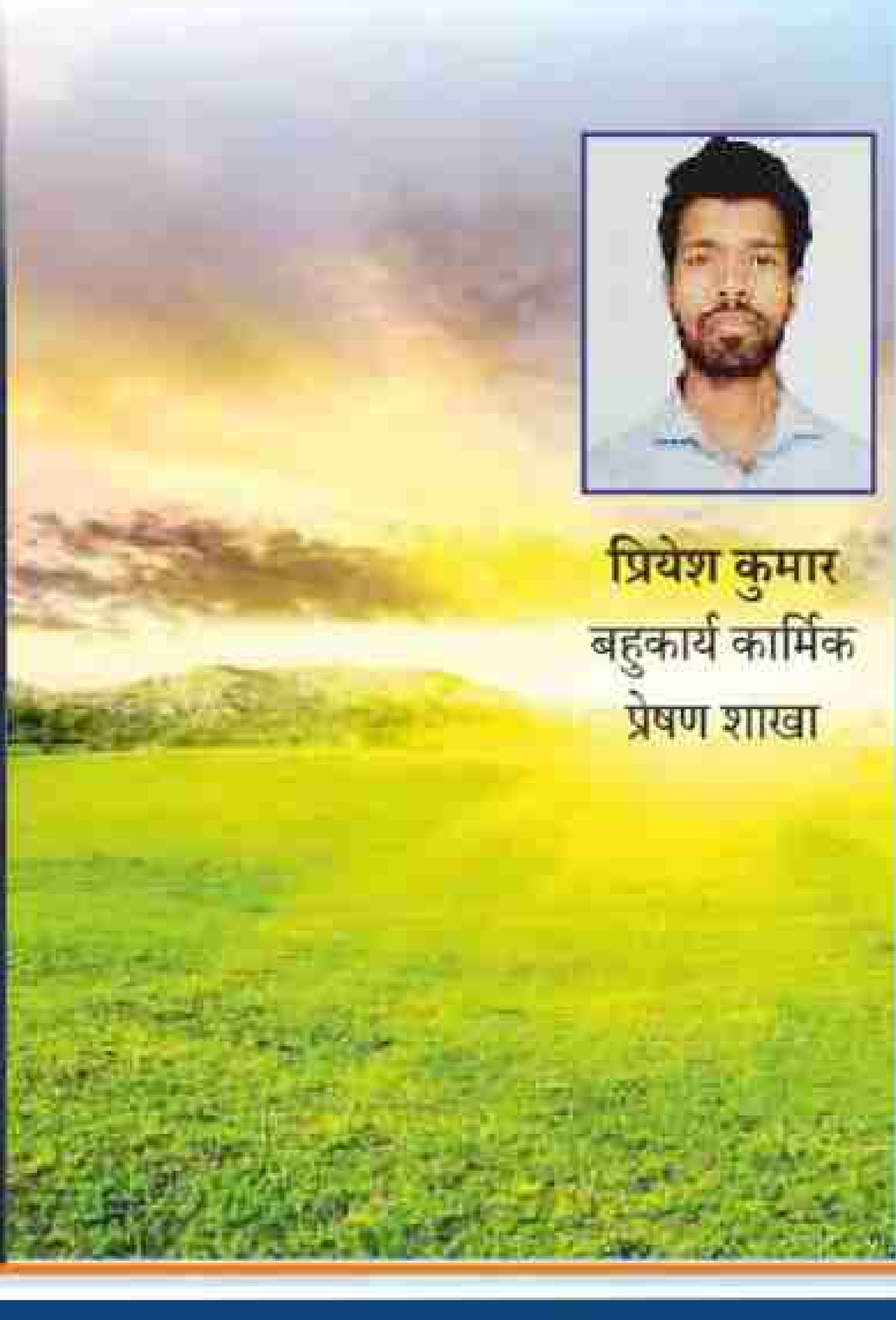

प्रियेश कुमार
बहुकार्य कार्मिक
प्रेषण शाखा

सुकन्या मजूमदार
प्रवर श्रेणी लिपिक
प्रशासन शाखा

मंत्रमुग्ध डुआर्स

जंगल, एक ऐसा क्षेत्र जहां प्रकृति अपने शुद्धतम रूप में फलती-फूलती है। साहसी और प्रकृति प्रेमियों को इसकी गहराई में जाने और इसके रहस्यों को उजागर करने के लिए प्रेरित करती है।

दूर-दूर तक फैले हुए हरे-भरे चाय के बागान, टेढ़ी-मेढ़ी चांदी जैसी पहाड़ी जलधाराओं, ऊँचे साल के जंगलों, क्षितिज पर महान हिमालय पर्वतमाला की नीली रूपरेखा वाली विशाल घास के मैदान और अंतहीन आकाश... आप डुआर्स में हैं।

डुआर्स अपनी समृद्ध जैव विविधता, जंगलों, वन्य जीवन के लिए प्रसिद्ध है। क्षेत्र के सबसे उल्लेखनीय जंगलों में गोरुमारा राष्ट्रीय उद्यान, जलदापारा वन्य जीवन अभयारण्य और बक्सा टाइगर रिजर्व शामिल हैं। पिछले साल नवंबर में हमने डुआर्स की पारिवारिक यात्रा की थी। हमने सियालदह से उत्तरी पश्चिम बंगाल के जलपाईगुड़ी जिले में 'न्यू माल' जंक्शन तक कंचन कन्या एक्सप्रेस ली। न्यू जलपाईगुड़ी (एनजेपी) स्टेशन को पार करने के बाद - जो दार्जिलिंग के साथ-साथ सिक्किम का प्रवेश द्वार है - न्यू माल जंक्शन तक कुछ घंटों की यात्रा एक सुंदर हरा-भरा इलाका है।

न्यू माल जंक्शन पर एक कार हमारा इंतजार कर रही थी जो हमें गोरूमारा नेशनल पार्क के प्रवेश द्वार लाटागुरी तक ले गई। ट्रेन सुबह 9 बजे के आसपास न्यू माल पहुंच गई थी, और हम दोपहर के भोजन के समय से पहले लाटागुरी पहुंच गए थे। रिज़ॉर्ट एक लुभावनी पृष्ठभूमि का दावा कर रहा था, और यह प्रसिद्ध गोरुमारा राष्ट्रीय उद्यान से कुछ किलोमीटर दूर था। नाश्ते के बाद हम बहुप्रतीक्षित जंगल सफारी के लिए निकल पड़े। जंगल सफारी के सबसे रोमांचक पहलुओं में से एक है, वन मे प्रतिष्ठित प्रजातियों को उनके प्राकृतिक आवास में देखना। हमने रास्ते में बहुत से मोर और हिरन भी देखें।

अगले दिन नाश्ते के बाद, हम मूर्ति नदी, झालोंग-बिंदु और सैमसिंग के पास दर्शनीय स्थलों की यात्रा के लिए रवाना हुए। यह रास्ता सुनताले खोला (या सुनतालेखोला) की ओर जाता था, जो एक संकरी जलधारा थी जिसके ऊपर एक छोटा सा लटकता हुआ पुल था। पुल के दूसरी ओर पश्चिम बंगाल वन विकास निगम का बंगला है।

अगले दिन हम बक्सा टाइगर रिजर्व और जयंती नदी के दर्शन के लिए निकले। बक्सा टाइगर रिज़र्व पश्चिम बंगाल के पूर्वोत्तर भाग में भूटान की सीमा पर स्थित है। डुआर्स क्षेत्र में इसका सबसे बड़ा वन क्षेत्र है, जिसका क्षेत्रफल 759 वर्ग किमी है। इस जंगल को 1983 में टाइगर रिज़र्व घोषित किया गया था। बक्सा टाइगर रिज़र्व में बाघों की संख्या एक समय सुंदरबन के बाद पश्चिम बंगाल में दूसरी

सबसे बड़ी पाई गई थी। बक्सा टाइगर रिजर्व के प्रवेश द्वार पर में एक टिकट काउंटर है जहां से आपको रिजर्व क्षेत्र में प्रवेश के लिए टिकट मिलेंगे। प्रवेश करने के बाद, लगभग 10 किमी की ड्राइव आपको बक्सा मोड़ नामक क्रॉसिंग पर ले जाएगी। दाहिना मोड़ आपको जयंती तक ले जाएगा, जो जयंती नदी के किनारे है। जयंती भी बक्सा टाइगर रिजर्व का एक हिस्सा है और बक्सा मोड़ से लगभग 5 किमी दूर है।

बक्सा टाइगर रिजर्व में जंगल सफारी जयंती से ही शुरू होती है। पेड़ों, घास के मैदानों और वन्यजीवों के भाग्यशाली दर्शन के बीच का भयानक सन्नाटा सफारी को काफी आनंददायक बनाता है। बक्सा टाइगर रिजर्व के मामले में, हम केवल झींगुरों की लगातार आवाज ही सुन सकते थे। हमने जंगल के अंदर कुछ हिरण और कुछ पक्षियों को देखा। चुनिया वॉचटावर और भूटिया बस्ती वॉचटावर जयंती

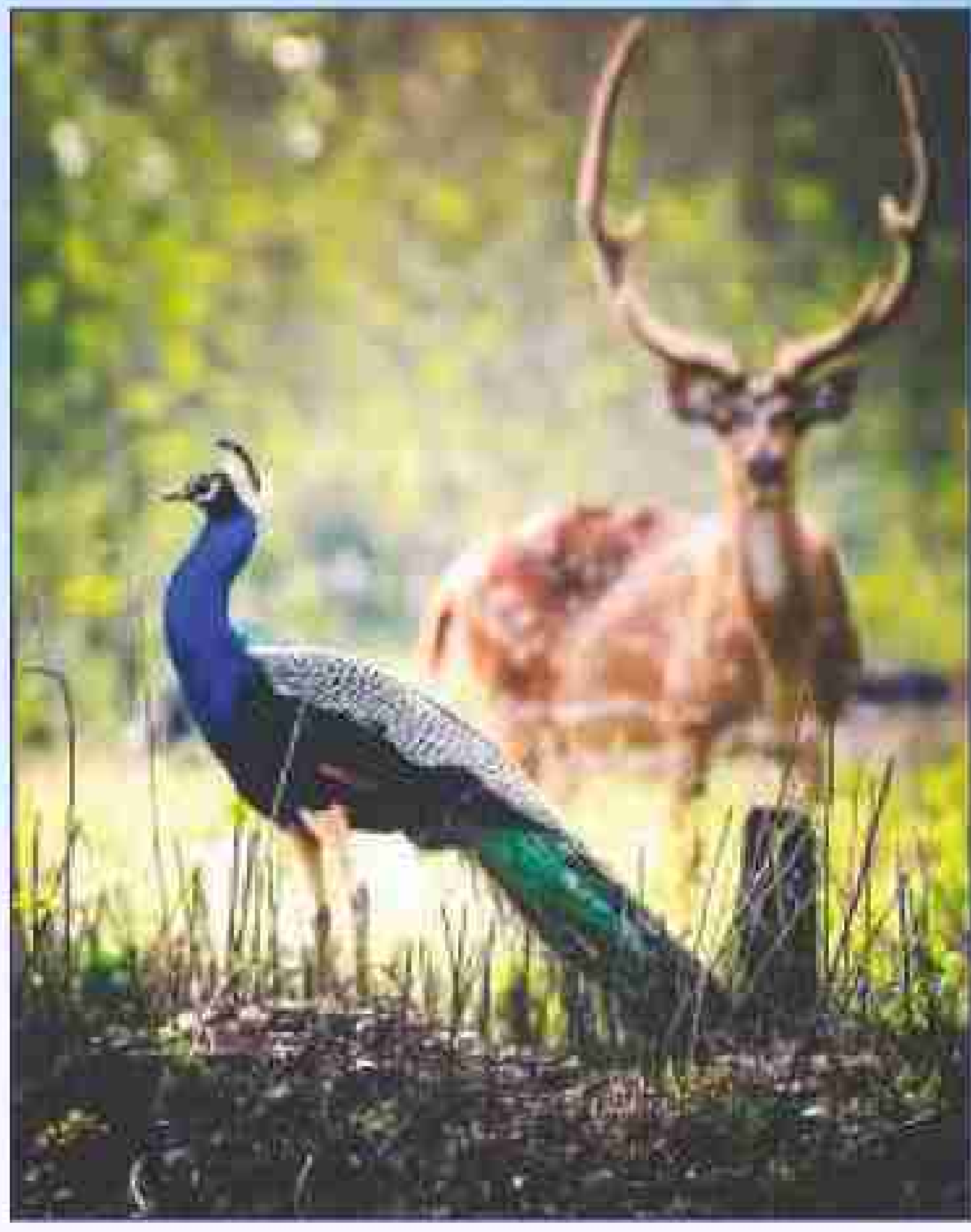

गांव के विपरीत दिशा में जयंती नदी के पार स्थित हैं। दोनों वॉच टावर बक्सा टाइगर रिजर्व के जोन में आते हैं। वॉचटावर से, आप कई वन्य जीवन देख सकते हैं। यहां भगवान शिव को समर्पित महान महाकाल गुफा भी है।

अगले दिन हमने कूचबिहार यात्रा की योजना बनाई। कूचबिहार पहुंचने के बाद सबसे पहले हमने मदनमोहन मंदिर के दर्शन किए। इस मंदिर का निर्माण महाराजा नृपेंद्र नारायण ने कराया था। इस मंदिर के मुख्य देवता भगवान कृष्ण हैं, जिन्हें मदनमोहन कहा जाता है। प्रार्थना करने के बाद हमने दूसरी जगह की यात्रा शुरू की और वह है महल। महल में एक संग्रहालय है जो अवश्य देखने योग्य स्थान है। हम न्यू अलीपुरद्वार स्टेशन पहुंचे और सियालदह के लिए ट्रेन पकड़ी। और यहीं हमारी खूबसूरत यात्रा समाप्त होती है। जंगल की यात्रा केवल अन्वेषण की यात्रा नहीं है बल्कि एक परिवर्तनकारी अनुभव है जो प्रकृति के साथ गहरे संबंध को बढ़ावा देती है और पर्यावरण के प्रबंधन को बढ़ावा देती है। जैसे ही हम इसके आलिंगन में आगे बढ़ते हैं, आइए हम श्रद्धा और सम्मान के साथ धीरे से आगे बढ़ें, क्योंकि जंगल केवल एक गंतव्य नहीं है बल्कि एक जीवित, सांस लेने वाली इकाई है जो हमारी सुरक्षा और प्रशंसा के योग्य है।

****

प्रादेशिक भाषाओं में शिक्षा: लाभ एवं नुकसान

अपूर्व कुमार घोष
अधीक्षक, राजस्व शाखा
(अब स्थानांतरित क्षे.का.)
फरीदाबाद

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, "शिक्षा मनुष्य में पहले से ही पूर्णता की अभिव्यक्ति है।" शिक्षा मानव का एक मौलिक अधिकार है। इस सभ्य देश में लोग खुद की शिक्षित करना चाहता है लेकिन बहु भाषा-भाषी देश भारत में शिक्षण और शिखने के दौरान कई मामलों में समस्या होती है। समस्या यह है कि शिक्षार्थी के लिए शिक्षा का माध्यम क्या होगा।

मानव मन की अभिव्यक्ति का माध्यम ही भाषा है। किसी व्यक्ति का मन के भाव को व्यक्त करने का माध्यम भाषा होती है। हर देश या राज्य की अपनी भाषा होती है जो उस देश राज्य की सभी सामाजिक तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। भारत के हर प्रांत/ प्रदेश की अलग अलग भाषा के साथ समृद्ध संस्कृति के साथ एक विशाल परंपरा है। संविधान के अष्टम अनुसूची में कुल 22 भाषाओं जैसे संस्कृत, हिंदी, बंगला, तमिल, मराठी, संथाली, गुजराती आदि भाषा को राष्ट्रीय भाषा का मर्यादा दिया गया है। संविधान के धार 345 से 347 और 350 (क) (ख) में राज्य/ प्रदेश की भाषा एवं शिक्षा में मातृभाषा के बारे में उपबंधों दिए गए हैं। हर राज्य की एक या एकाधिक प्राधिकृत भाषाओं को प्रादेशिक भाषा के नाम में जाना जाता है। आम तौर पर, किसी राज्य के मनुष्य की मातृभाषा या स्थानीय भाषा उस राज्य की प्रादेशिक भाषा होती है। सभी संस्कार एवं व्यवहार हम इसी भाषा के द्वारा पाते हैं। इसी भाषा से हम अपनी संस्कृति के साथ जुड़कर उसको आगे बढ़ाते हैं।

वास्तव में, शिक्षण या सीखना किसी माध्यम से हो सकता है। लेकिन इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि मातृभाषा या स्थानीय भाषा या प्रादेशिक भाषा शिक्षा का सबसे अच्छा माध्यम है। इसके कई कारण हैं।

1) शिक्षा के विषय को किसी अन्य भाषा के माध्यम से उतनी आसानी से समझना संभव नहीं है जितना छात्र मातृभाषा के माध्यम से समझता है। मां के साथ बच्चे का रिश्ता जितना गहरा होता है, उतनी ही मातृभाषा के साथ छात्र का स्वाभाविक प्यार होता है। जन्म के बाद बच्चा मां के मुंह की बातें ज्यादा सुनता है, वह धीरे-धीरे मां को अपना समझना सीख जाता है। मां की अनुपस्थिति में वह खुद असहाय महसूस करता है। शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा न मिलने पर छात्र की यही स्थिति होती है।

2) मातृभाषा/ प्रादेशिक भाषा के माध्यम में शिक्षा में बच्चों को उनकी मातृभाषा और संस्कृति से जोड़े रखते हुए उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाता है।

3) एक शिक्षार्थी अपनी भाषा में मौलिक चिंतन कर सकता है और स्वप्न देख सकता है। इसलिए अपनी भाषा में आसानी से व्यक्त कर सकता है।

4) किसी की मातृभाषा अंग्रेजी या अन्य भाषा शिक्षण में सहयोगी होती है। जो बच्चा मातृभाषा ठीक से सीखता है वह दूसरी भाषा भी आसानी से सीख जाता है।

5) एक बच्चे की प्रथम शिक्षा अपने माता पिता से ही शुरू होती है। कोई ग्रामीण बच्चों के माता-पिता और रिस्तेरदारों को अंग्रेजी या अन्य भाषा का ज्ञान नहीं होता। इसलिए अन्य भाषा में शिक्षा के लिए दबाव डालने से उन्हीं काफी नुकसान हो सकता है।

6) केन्द्रीय सरकार की नयी शिक्षानीति 2020 में स्कुल पाठ्यक्रम के 10+2 ढांचे की जगह 5+3+3+4 का नया पाठ्यक्रम लागू हुआ है और मातृभाषा / प्रादेशिक भाषाओं को प्रमुखता दी गई है।

7) प्रादेशिक भाषा में शिक्षा मिलना लाभजनक है यह समझकर मध्यप्रदेश सरकार ने उच्च शिक्षा जैसे एम.बी.बी.एस की कुछ पुस्तकों का हिंदी में प्रकाशन शुरू किया है। दूसरी ओर प्रादेशिक / मातृभाषा आधारित शिक्षा में कई नुकसान भी है जो निम्न प्रकार है :-

(1) उच्च शिक्षा में दर्दनाक बदलाव: जिन छात्रों ने पहले की कक्षाओं में मातृभाषा में अध्ययन किया है, उन्हें कॉलेजों और विश्व विद्यालय के स्तर पर इंजीनियरिंग, मेडिकल, तकनीकी शिक्षा, लेखा, विज्ञान विषयक शिक्षा में समस्या का सामना करना पड़ता है क्योंकि वहां शिक्षण का माध्यम मातृभाषा नहीं होती है, अंग्रेजी होती है।

(2) शेष विश्व से जुड़ना: अंग्रेजी और हिंदी भारत और पूरी दुनिया को, अन्य राज्यों के साथ एक राज्य क्षेत्र के व्यक्ति को जोड़ने के लिए संपर्क भाषा के रूप में कार्य करती है। डिजिटलीकरण और तकनीकी के इस युग में मातृभाषा / स्थानीय भाषा में शिक्षण प्राप्त व्यक्ति के लिए ऐसी स्थिति से लड़ना मुश्किल हो जाता है।

(3) सभी प्रादेशिक भाषाओं में उच्च गुणवत्ता बाली पाठ्यपुस्तक बन ही मिलती है और यह बनाने की व्यवहारिक समस्या भी हैं।

(4) केवल मातृभाषा / स्थानीय भाषा में शिक्षा संघ लोकसेवा और अन्य सर्व भारतीय नौकरियों में भर्ती परीक्षाओं में कठिनाई का कारण बनती है। अखिल भारतीय सेवाओं में एक व्यक्ति को भारत में कही भी तैनात किया जा सकता है जहां केवल मातृभाषा में शिक्ष प्राप्त व्यक्तियों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए, मुझे यह महसूस होता है कि मातृभाषा स्थानीय भाषा/ प्रादेशिक भाषा प्राथमिक स्तर के साथ-साथ माध्यमिक विद्यालय स्तर पर भी शिक्षा का माध्यम होनी चाहिए। साथ ही स्कूली शिक्षा में अंग्रेजी या हिंदी था दोनों को सिखनी चाहिए। इसके अलावा, एक छात्र को विज्ञान के विभिन्न विषयों में विशिष्ट / तकनीकी शब्दी के अंग्रेजी शब्दों की सीखनी चाहिए ताकि एक छात्र उच्च शिक्षा में उस स्थिति का सामना कर सके जब उसे अंग्रेजी माध्यम में पुस्तकों अध्ययन करना पड़ेगा भारत में शिक्षा संबंधी दिशा-निर्देश के लिए विभिन्न समय पर राधाकृष्णन आयोग, मुदलियर आयोग, कोठारी आयोग जैसे आयोगों का गठन किया गया था। कोठारी आयोग (1964-66) ने अन्य शिक्षा आयोग और समितियों की तरह शिक्षा में त्रिभाषा सूत्र की अनुसंशा की। इस के अनुसार माध्यमिक स्तर पर हिंदी भाषा क्षेत्रों में हिंदी तथा अंग्रेजी के अतिरिक्त एक आधुनिक भारतीय भाषा, वरीयतः दक्षिण भारतीय भाषाओं में से कोई एक भाषा पड़नी थी। इसी प्रकार हिन्दीतर भाषी क्षेत्रों में प्रादेशिक भाषा एवं अंग्रेजी के साथ साथ हिंदी भी पड़ती थी। लेकिन कोई राज्य के असहमति के कारण यह सूत्र पूर्णतः लागू नहीं हो पाया। देश में प्रादेशिक भाषाओं के महत्त्व बढ़ाने के लिए शिक्षा में त्रिभाषा सूत्र का लागू करना सख्त जरूरत है।

(5) वर्तमान में अधिकांश अभिभावक यह सोचते है कि अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम में नहीं पढ़ाने से अन्य लोगों के समक्ष गिर जाएंगे। इसमें बच्चे नहीं ठीक से अपनी मातृभाषा सीख पाते, नही अंग्रेजी में।

(6) एकमात्र मातृभाषा के माध्यम में शिक्षा में एक शिक्षार्थी का सर्वाधिक विकास होता है।

****

संतोष

रमेश साव
सहायक निदेशक
(राजभाषा)

बॉस के केबिन में जब चपरासी ने चाय का प्याला रखा तो बॉस ने आखिर पूछ ही लिया-"रामशरण" मैं जब भी तुम्हें देखता हूँ तुम हमेशा प्रसन्न मुद्रा में रहते हो। हमेशा हँस कर बात करते हो। दफ्तर के बाकी किसी भी कर्मचारी को इतना खुश नहीं देखता हूँ।

रामशरण ने कहा-"सर! जब मैं गांव से यहां नौकरी करने शहर आया तो पिताजी ने कहा कि बेटा भगवान जिस हाल में रखे उसमें खुश रहना। इसका फल तुम्हें तुम्हारे कर्म अनुरूप ही मिलता रहेगा। उस पर भरोसा रखना। इसलिए सर जो मिलता है मैं उसी में खुश रहता हूँ।"

बॉस ने पूछा-" कौन-कौन हैं तुम्हारे घर में?"

रामशरण ने कहा-" मैं, मेरी पत्नी, मेरा बेटा और मेरे बड़े भाई की बेटी।"

बॉस ने पूछा-"बड़े भाई की बेटी भी तुम्हारे साथ रहती है?"

रामशरण ने कहा- "सर! बड़े भाई गांव में रहते हैं। कमाई इतनी नहीं कि अपनी बेटी को अच्छी शिक्षा दे सके। अतः मैं उसे अपने साथ ले आया। उसे पढ़ाता हूं। गांव में रहेगी तो लोगों के घर झाड़ू पोछा करेगी।"

बॉस ने पूछा-" तुम्हारी पगार में क्या सब ठीक से हो जाता है? दो बच्चों को पढ़ाना, खिलाना- पिलाना वगैरह?"

रामशरण ने कहा- सर!" अच्छी तरह तो नहीं होता लेकिन ऊपर वाले की यही मर्जी समझ चला लेता हूं।"

रामशरण के जाने के बाद वह सोचने लगे की इतनी कम पगार में यह खुश रहता है। मेरे पास आज सब कुछ है लेकिन मैं हमेशा चिंतित रहता हूं। आखिर इसकी तरह खुश क्यों नहीं रहता?

बॉस घर आ गए। रात भर यही सोचते रहे। सोचते सोचते अचानक उन्हें जवाब मिल गया। सुबह उठे। चाय नाश्ता कर कार्यालय पहुंच गए। कार्यालय पहुंचते ही रामशरण चाय की ट्रे लिए उनकी केबिन में आया।

बॉस ने कहा-" रामशरण कल तुमसे हुए छोटे से वार्तालाप से मुझे बहुत बड़ा ज्ञान मिला है। तुमसे मुझे कल जीवन का मूल मंत्र मिला है और वह है "संतोष"। जो तुम में है, मुझ में नहीं। मेरे अंदर के लोभ ने मेरी प्रसन्नता छीन ली है। संतोष धन ही सबसे बड़ा धन है।"

रामशरण ने कहा- हां सर!"जब भी मिले, जितना मिले, जैसा मिले, जहां भी मिले उसी में प्रसन्न रहना चाहिए। बस उसी की मर्जी में हमारी मर्जी।"

और इतना कहकर चाय की ट्रे लिए वह दूसरे केबिन में चला गया....

गीत

गुण-रूप-रंग से भरी हुई
हर देव तुम्हीं से हारा है,
हर शय में छाई छवि तुम्हारी
तुमने ही सब को ताड़ा है।
तुमने सब को प्यार दिया विस्तार दिया; ममता के आँचल में पाला!
तुमसे कैसे उऋण हो कोई
सब को दिया सहारा है।।
गुण-रूप-रंग ---

कभी बनी माता बच्चों की
कभी बनी दादी-नानी,
कभी लिया अवतार देवी का
कभी किया खुद को पानी।
रूप तुम्हारा कैसा भी हो; पर लगता बेहद प्यारा है।।
गुण-रूप-रंग ---

रीति-प्रीती-कलाकृति में
तुमने परचम लहराया,
अज्ञान-जगत में ज्ञान-दीप को
अबतक तुमने पहुंचाया।
अहसान तुम्हारा तिहुँ लोक पर; तन-मन-धन सब वारा है।।
गुण-रूप-रंग ---

गुण-ही-गुण से भरी हुई तुम
चण्डी मृदुल भवानी हो,
दुनिया का इतिहास बदलती
रोज नई कहानी हो।
बुझा रूप तो निर्मल शबनम; पर जलने पर अंगारा है।।
गुण-रूप-रंग ---

सूरज में है लाली तुमसे
चन्दा में है नूर,
सब को है बस चाह तुम्हारी
हर कोई मजबूर।
भाल चंद्रमा नयन समंदर ; अधरों पर अमृत धारा है।।
गुण-रूप-रंग ---

तुम्हें ज़रुरत क्या उपमा की
तुम तो स्वयं उदहारण हो,
सृष्टि के हर रूप-रंग का
एक तुम्हीं तो कारण हो।
तुमसे कैसे होड़ लगाएं; जब तुमसे जगत हमारा है।।
गुण-रूप-रंग ---

समय-समय की दवा बनी तुम
समय-समय का रोग,
सब के दिल की एक ही चाहत
हो जाए संयोग।
बचा कौन है रूप-रंग से; स्वयं रचयिता हारा है।।
गुण-रूप-रंग ---

रवि कहर
बहु कार्य कार्मिक
राजभाषा शाखा

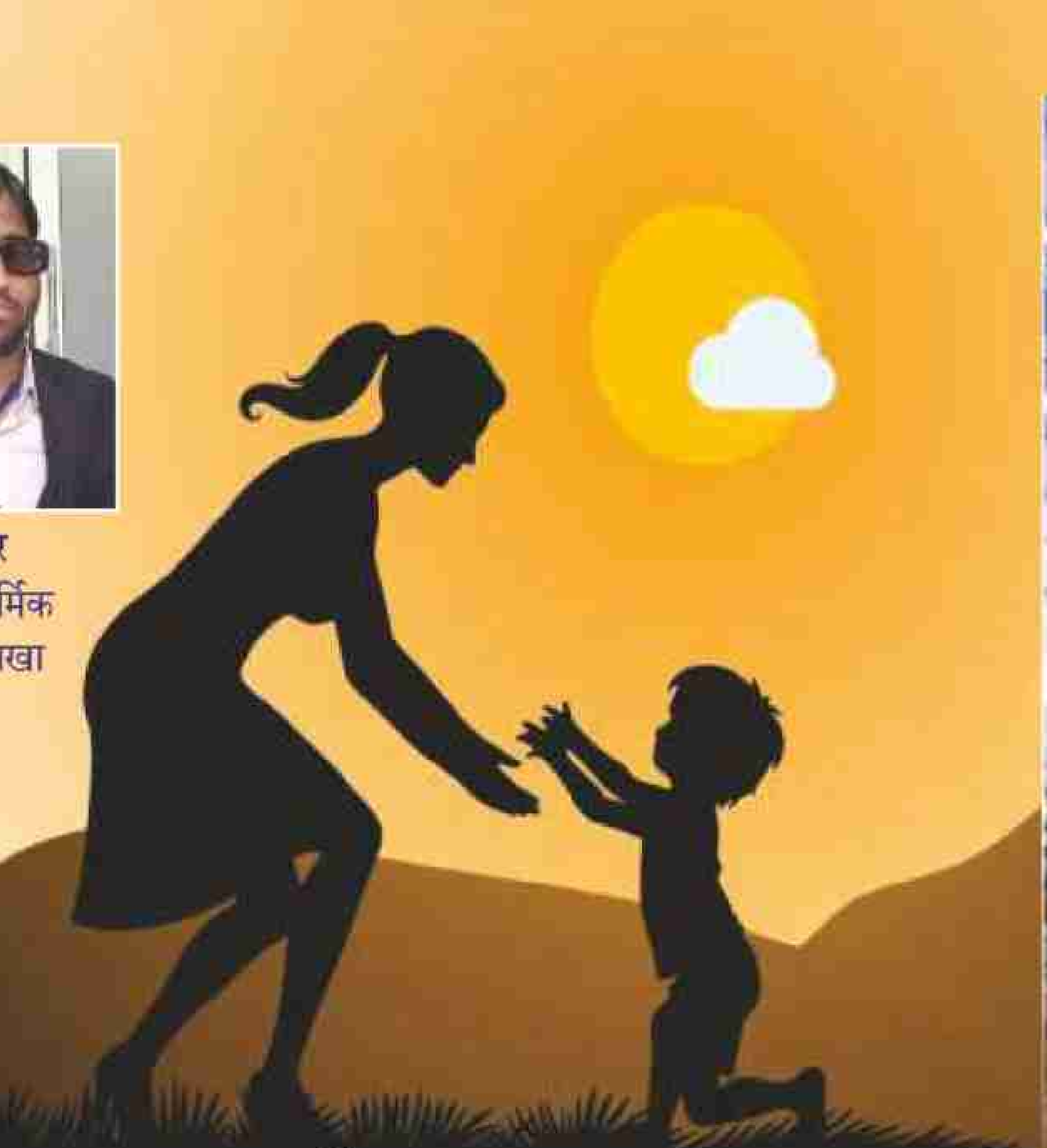

सब को प्यारा रहा

जब तलक़ तेरी रहमत का आँचल मिला
मैं सितारा रहा; सब को प्यारा रहा,
तम भी छाया न था; ग़म भी आया न था
जब तलक़ तेरी आँखों का तारा रहा।

अब नहीं वो ख़ुशी
ना ही वो प्यार है,
आज चारों तरफ़
सिर्फ मजधार है।
बचके जाऊँ कहाँ; तुझको पाऊँ कहाँ!
दूर तुझसे मैं ख़ुद ही तो जाता रहा।
जब तलक़ तेरी --- ..

हर घड़ी हर पहर
अब मैं बेचैन हूँ,
दिन हूँ मुश्किल भरा
और बुझी रैन हूँ।
ये मज़ा दौलती; ये नशा शोहरती!
दूर तुझसे ये मुझको कराता रहा।
जब तलक़ तेरी --- ..

पास दौलत भी है
साथ शोहरत भी है,
रूप-गुण से भरी
एक औरत भी है।
पर तेरी वो दुआएं नहीं हैं कहीं!
सब को पाने में "जन्नत" गँवाता रहा।
जब तलक़ तेरी --- ..

हर घड़ी हर ख़ुशी
मुझको हासिल हुई,
मेरी चाहत की शय
मेरे क़ाबिल हुई।
तेरी ममता-सा सुख न ख़रीदा गया!
ख़ुद को यूँ ही "कहर" आजमाता रहा।
जब तलक़ तेरी --- ..

प्रियम दास
कक्षा- सप्तम
पुत्र- प्रसेनजीत दास

यात्रा वृतांत : लाहौल-स्पीति

यात्रा करने से अत्यधिक आनंद मिलता है। अब यह हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। वर्ष 2023 में हमने हिमाचल प्रदेश में स्पीति घाटी का दौरा किया। यह हमारा बहुत पुराना सपना था। चार बच्चों को मिलाकर, हम संख्या में दस थे। हम फ्लाइट से चंडीगढ़ पहुंचे और वहां से हमारा सफर शुरू हुआ। पहले दिन हम सराहन पहुंचे और रात वहीं रुके। रास्ते में फागु घाटी ने हिमालय श्रृंखला के भव्य दृश्य के साथ हमारा स्वागत किया। रात्रि विश्राम होटल स्नो फ्लेक में था।

अगली सुबह लगभग आठ बजे हम भीमाकाली मंदिर की ओर बढ़े, जो इक्यावन सती- पीठों में से एक के रूप में प्रतिष्ठित है । सराहन से निकलने के बाद हम रकछम के लिए आगे बढ़े । रकछम से आगे की यात्रा घाटी के आकर्षणों के बीच आनंददायक और साहसिक थी। हम सूर्यास्त से पहले पहुँच गए, इसलिए हमने नदी के किनारे कुछ तस्वीरें खींचने की योजना बनाई। रात्रि विश्राम 'द लेजेंडरी रुपिन रिवर व्यू' में था जो काफी आरामदायक जगह थी।

एक अच्छी रात के आराम के बाद हम सुबह सुबह उठे और ताजा बर्फ से ढके पहाड़ों को देखकर हमारा मन तृप्त हो गया। सुबह बसपा नदी के आसपास टहलने के बाद, हमने नाश्ता किया और छितकुल की ओर चल दिए, जो लगभग 11,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित रकछम से लगभग 12 किमी दूर था। छितकुल इस सर्किट का अंतिम रहने योग्य भारतीय गाँव है। यह एक छोटा सा सुरम्य गांव है जहां बसपा नदी ने खुद को और भी खूबसूरत बना लिया है। हम उसी दिन वापस रकछम लौट आए और गांव में घूमने का फैसला किया जो आंखों को काफी सुकून देने वाला था। जैसे ही सूरज ढल गया, हमने होटल की ओर वापसी की।

अगली सुबह हम उन रास्तों से लौटने के लिए जल्दी निकले, जिनसे होकर हम आए थे। रास्ते में, हमें कामरू किले की झलक मिली और हमने करछम बांध पर बसपा नदी को अलविदा कहा और तब से शताद्रु नदी के साथ

बने रहे। लगभग डेढ़ घंटे के बाद, हम रिकांगपिओ पहुँचे, जो किन्नौर जिले का एक बड़ा शहर है, जहाँ सर्दियों पुरानी कपड़ों का प्रसिद्ध बाज़ार है। अपने होटल में प्रवेश करने से पहले, हमने रागी गाँव और द सुसाइड पॉइंट और उसके आसपास सेब के बगीचों को देखा। रात्रि विश्राम होटल व्हाइट नेस्ट में था जो एक उपयुक्त स्थान था। अगले दिन जागने के बाद, हमें किन्नौर-कैलाश शिखर की स्पष्ट झलक

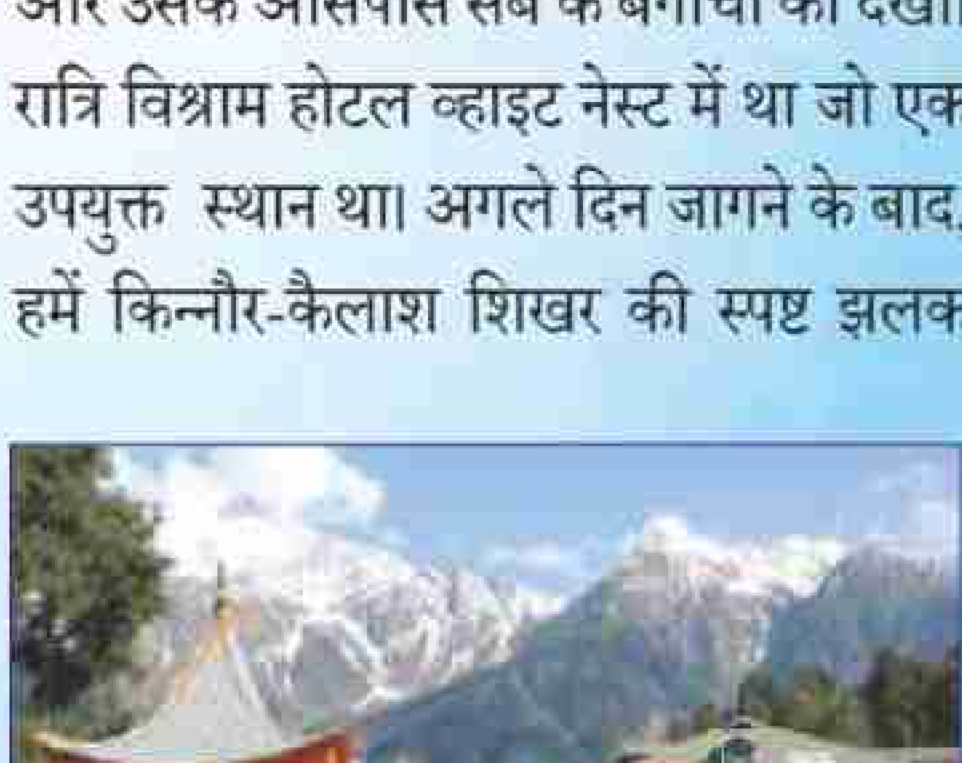

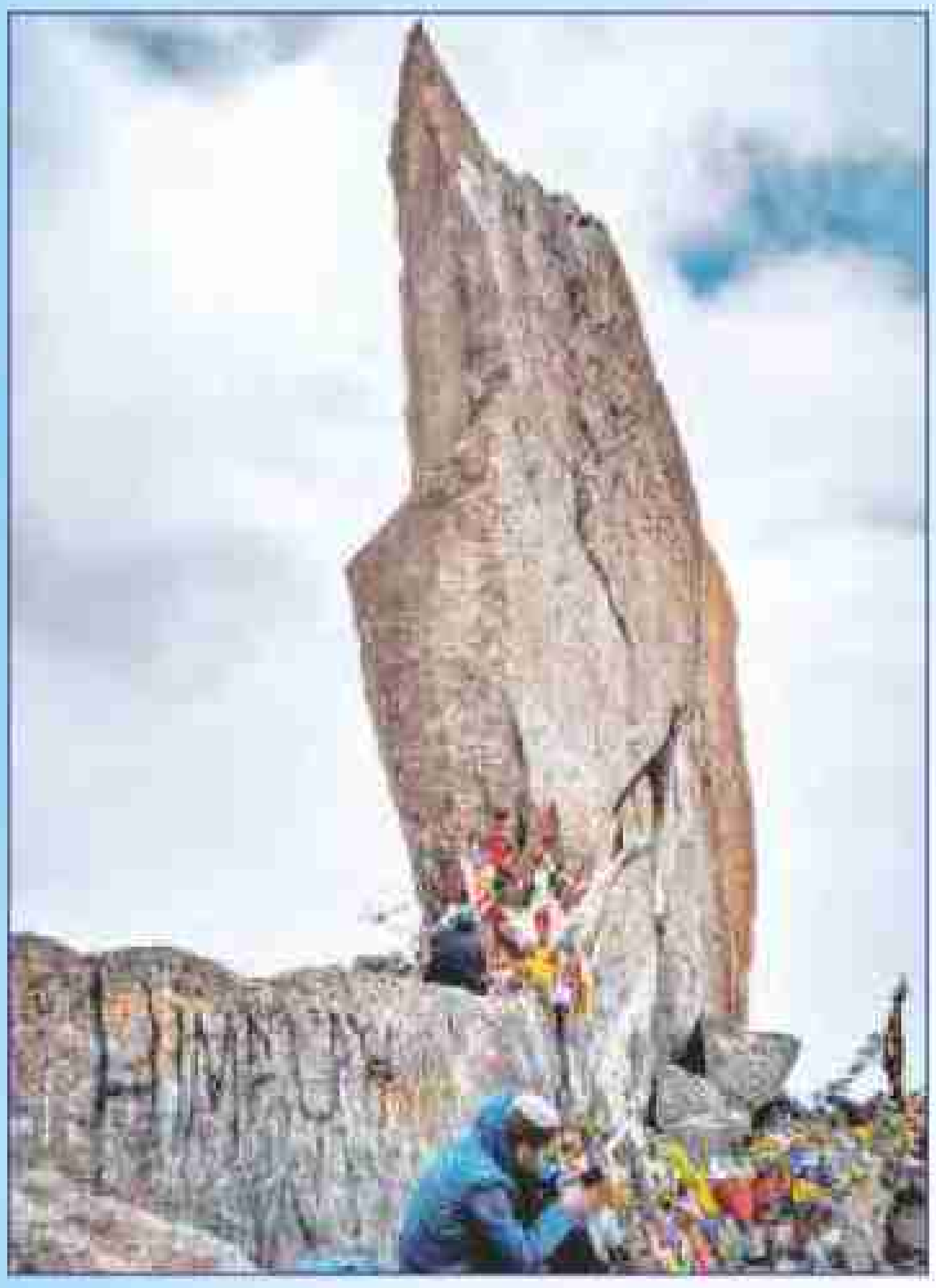

मिली। हम अपनी तरफ शतद्रु नदी के साथ-साथ जा रहे थे । खाब में स्पीति और शतद्रु नदियों के दिव्य संगम पर, हमने शतद्रु नदी को अलविदा कहा और नाको की ओर स्पीति नदी से शुरुआत की, जो लगभग 12,000 फीट की ऊंचाई पर थी। प्रकृति ने अपना रूप बदलना शुरू कर दिया। एक ऊबड़-खाबड़ इलाके ने अपनी बंजर सुंदरता से हमारा स्वागत किया। दोपहर करीब डेढ़ बजे हम नाको पहुँचे। छोटे कदमों से हम नाको गांव से गुजरे और नाको मठ और नाको झील का दौरा किया। थोड़े समय के दोपहर के भोजन के बाद, हम ताबो के पास गिउ मठ की ओर चल पड़े जहाँ पाँच सौ साल पुरानी एक ममी संरक्षित रखी गई है। लगभग शाम हो चुकी थी और इसलिए हम ताबो की ओर अपने होटल, द स्पीति विला की ओर चल पड़े। अगली सुबह हमने ताबो मठ का दौरा किया और फिर काजा की ओर चल पड़े । जैसे-जैसे हम आगे बढ़ रहे थे प्रकृति भी अपना रूप बदल रही थी। प्रकृति के प्राकृतिक शुष्क और बंजर दृश्यों ने हमें लद्दाख की याद दिला दी । प्रत्येक

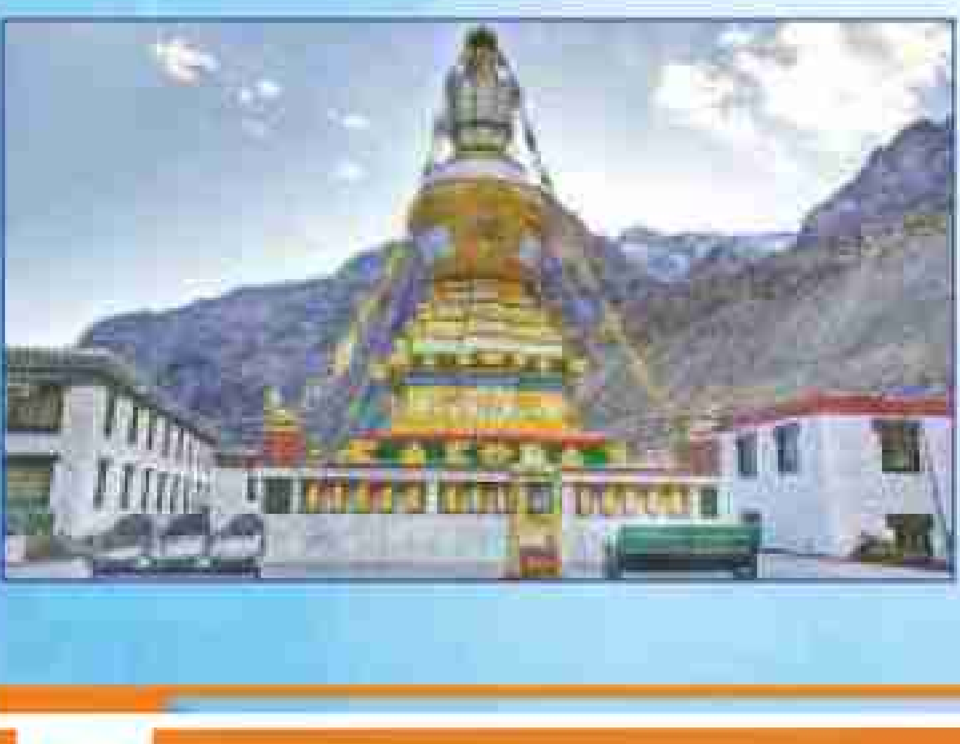

मोड़ में कुछ नया था। दोपहर तक हम धनखड़ मठ पहुँच गये। मठ 1,200 साल पुराना था और स्पीति घाटी के ऊपर एक क्षत- विक्षत चट्टान से मजबूती से चिपका हुआ था। हम शाम को काज़ा में अपने होटल डेलेक हाउस प्रीमियम

पहुंचे। उस दिन हमने काजा से शुरुआत की । स्पीति नदी अपने आड़े-तिरछे रास्तों पर हमारा साथ दे रही थी। एक समय में, हमने नीचे नदी छोड़ दी और 14,500 फीट की ऊंचाई पर लंग्ज़ा गांव तक पहुंचने के लिए पहाड़ की चोटी पर चढ़ना शुरू कर दिया। वहां भगवान बुद्ध की एक बड़ी मूर्ति रखी गई थी। कुछ देर बेहद ठंडी

हवाओं में रहने और कुछ फोटो सेशन के बाद हम 15,027 फीट की ऊंचाई पर स्थित कोमिक गांव की ओर बढ़े । कॉमिक विलेज मोटर योग्य सड़क से जुड़ा दुनिया का सबसे ऊंचा गांव है और इसमें दुनिया का सबसे ऊंचा रेस्तरां है । यह स्थान एक मठ से भी घिरा हुआ है। वहां से, हम 14,400 फीट की ऊंचाई पर स्थित हिक्किम गांव जाने के लिए अपनी कार पर चढ़े, जो दुनिया के सबसे ऊंचे डाकघर को घेरता है।

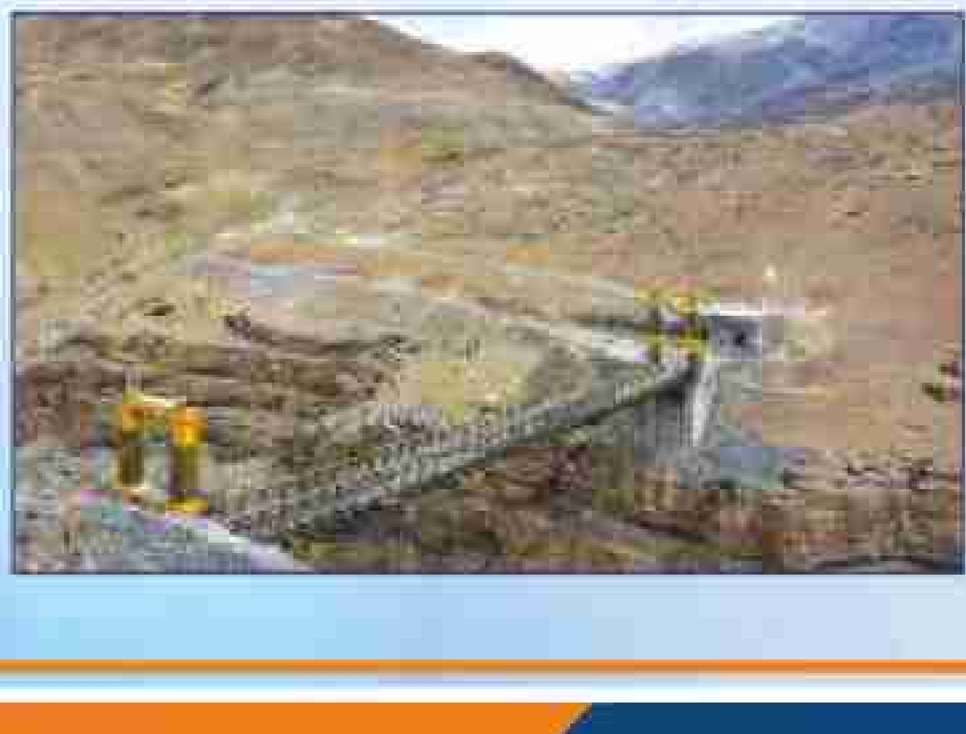

उसके बाद, हमने चिचम ब्रिज का दौरा किया जो दुनिया का दूसरा सबसे ऊंचा हैंगिंग ब्रिज है। फिर, किब्बर गांव से होते हुए हम की मठ पहुंचे, एक बड़ी गुफा जिसमें कुछ धार्मिक संरचनाएं थीं। जैसे ही सूरज डूबा, मौसम काफी ठंडा हो गया था और इसलिए, हमने काजा में अपने होटल की ओर वापस यात्रा शुरू कर दी।

पिछली रात से आसमान बादलों से घिरा हुआ था और अनुमान था कि अगले दिन बारिश या बर्फ़बारी हो सकती है। पूरी रात बर्फबारी होती रही और सुबह जब हम चंद्रताल के लिए निकले तो हमने देखा कि बंजर पहाड़ियों की चोटियाँ बर्फ से सफेद हो गई थीं। हमने किब्बर गांव से होते हुए पिछले दिन की सड़क पकड़ी, और जैसे ही हम चिचम ब्रिज पर पहुंचे, बर्फ के टुकड़े गिरने लगे और हमारे ड्राइवर के अनुसार, हमारे चंद्रताल जाने और बाकी लोगों के न जाने की पचास प्रतिशत संभावना थी । ड्राइवर की सोच तब सही निकली जब मैसेंजर की तरह एक कॉल आई। व्यक्ति ने कहा कि चंद्रताल से लगभग 9 किमी दूर कुंजुम दर्रे पर 5 सेमी बर्फ जमने के कारण लोसर स्थान से बीआरओ द्वारा सड़कें अवरुद्ध कर दी गई। यह खबर सुनकर हमें निराशा हुई । चंद्रताल झील और अटल टनल देखने का हमारा सपना अधूरा रह गया। भारी मन से बारह घंटे से अधिक की यात्रा के बाद हम कल्पा पहुंचे। हम द व्हाइट नेस्ट में रुके।

दस घंटे से अधिक की यात्रा के बाद कल्पा से शिमला आये । दो दिन की लम्बी यात्रा में हमें अत्यधिक थकान महसूस हुई। तो, उस दिन हम होटल पहुंचे और स्वादिष्ट रात्रिभोज के बाद जल्दी सो गए।

अगले दिन, हमने सुरक्षित और अच्छी तरह से घर पहुंचने के लिए चंडीगढ़ हवाई अड्डे से कोलकाता हवाई अड्डे तक अपनी उड़ान पकड़ने के लिए शिमला से देर से शुरुआत की। हमारी यात्रा यहीं समाप्त हुई और हम ढेर सारी सुखद यादें लेकर वापस चले आये। धन्यवाद...

****

देबाशीस घोष
प्रवर श्रेणी लिपिक
शाखा कार्यालय,
बरानगर

किसी की पीड़ा, किसी की शिक्षा

व्यक्ति को अपने जीवन में कई तरह की शिक्षाएं मिलती हैं, या फिर यह कहा जा सकता है कि प्रकृति ही मनुष्य को अलग-अलग तरीके अपनाकर जीवन जीना सिखाती है। कुछ लोग ठोकर खाकर सीखते हैं, जबकि कुछ लोग दूसरे लोगों की पीड़ा देखकर सीखते हैं।

दो दिन पहले मेरे साथ एक ऐसी घटना घटी, जिसने मुझे अंदर से झकझोर कर रख दिया। मैंने ऐसी घटनाएं पहले भी कई बार सुनी हैं, लेकिन उस दिन मेरे साथ ऐसा हुआ और मैंने अपने जीवन का एक महत्वपूर्ण सबक सीखा।

उस दिन सुबह मैं हमेशा की तरह अपने काम में व्यस्त था। मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि अगले 2 से 3 घंटों में मेरे साथ क्या होने वाला है। दोपहर करीब एक बजे मेरे पास एक अनजान नंबर से फोन आया। मुझे नंबर देखकर कोई आश्चर्य नहीं हुआ, इसलिए मैंने इसे ले लिया।' जैसे ही फोन उठाया, फोन के दूसरी तरफ से एक हिंदी भाषी पुरुष की आवाज आई, "क्या आप देबाशीष घोष हैं, आपके नाम और आधार नंबर के साथ एक पार्सल दिल्ली हवाई अड्डे पर पकड़ा गया है, जिसमें 140 ग्राम एमडीएमए है। 50 फर्जी के पास पासपोर्ट और 40 एटीएम कार्ड है। अगर यह आपका नहीं है तो आप तुरंत वसंतकुंज पुलिस स्टेशन, साउथ दिल्ली में ऑनलाइन रिपोर्ट कर सकते हैं। मैं कस्टम अधिकारी गौतम राज हूं, मेरी कर्मचारी आईडी - सीआरसीआई/2011" अब बात करते हैं, उन्होंने मेरा नाम और आधार नंबर ऐसे बताया कि पहली नजर में उनकी बातें सच लगती हैं। उसने मेरे नाम के पार्सल की पूरी जानकारी बता दी। यानी उसे कहाँ जाना है, पार्सल कौन प्राप्त करेगा आदि। साथ ही उन्होंने मेरा नंबर बिना काटे साउथ दिल्ली के वसंतकुंज पुलिस स्टेशन में ट्रांसफर कर दिया। मैंने अपनी रिपोर्ट सुनील कुमार, ओ.सी. के पास भी दर्ज करायी।

मेरे पार्सल का विवरण सुनने के बाद सुनील कुमार ने मुझे डराना शुरू कर दिया। उन्होंने कहा कि मेरे पार्सल में प्रतिबंधित दवाएं हैं, इसलिए मेरे आधार नंबर को सुरक्षा सेल से दोबारा सत्यापित करने की जरूरत है। उसने मेरा नंबर ऑन लाइन रखकर किसी को फोन किया और जय हिंद कहा, और मेरा आधार नंबर वेरिफाई करने को कहा। अजीब बात है कि दूसरी ओर से व्यक्ति ने कहा कि दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा मेरे आधार नंबर और मेरे नाम पर दो गिरफ्तारी वारंट जारी किए गए हैं और मेरा नाम मादक पदार्थों की तस्करी और मानव तस्करी से जुड़ा है। मुझे तुरंत गिरफ्तार किया जाना चाहिए। तुरंत ही सुनील कुमार ने मेरे साथ अपराधी जैसा व्यवहार करना शुरू कर दिया और मुझे धमकाना शुरू कर दिया। फिर वह मुझे तरह-तरह से इस केस के बुरे नतीजे के बारे में समझाने लगा। इससे मैं भी सोचने लगा कि एक अजनबी को मेरी सारी जानकारी इस तरह कैसे मिल गयी। हालाँकि, मैंने उनकी बातों का जवाब देना जारी रखा। तब उस शख्स ने कहा कि इस केस का महत्व इतना है कि भारत सरकार ने इस केस की जांच का जिम्मा सीबीआई को सौंपा है, और इस मामले की जांच के लिए एक सीबीआई अधिकारी को इस पुलिस स्टेशन में नियुक्त किया गया है। हालाँकि, मेरा केस उस सीबीआई अधिकारी को सौंप दिया गया था। उसने शुरू में मुझे इस मामले के नतीजे के बारे में थोड़ा डरा दिया। फिर उसने कहा कि मुझे आज दिल्ली निकलना है। क्योंकि मेरे मामले की जांच दिल्ली में होगी। फिर मैंने कहा कि अभी मेरे लिए दिल्ली जाना संभव नहीं है। इसके बाद उसने मुझे दोबारा धमकाना शुरू कर दिया और कहा कि इस केस का डायरेक्टर उसका परिचित है और उन्होंने अनुरोध किया कि मेरे मामले की दूर से जांच की जाए। मैं भी सहमत हो

****

गया।

इसके बाद सीबीआई अधिकारी ने अपना असली रूप धारण कर लिया। उन्होंने मुझसे फिर कहा कि वह इस मामले के निदेशक से मेरे मामले की दूर से जांच करने का अनुरोध करेंगे। तब तक पूरी घटना पर मेरा संदेह गहरा हो चुका था। अचानक उन्होंने मुझे बताया कि आरबीआई ने मेरे नाम पर एक खाता खोला है और मेरे नाम का सारा काला धन उस खाते में स्थानांतरित कर दिया जाएगा और पूरी जांच होने तक पैसा सरकार के पास रहेगा। फिर आरबीआई वह पैसा मेरे खाते में लौटा देगा।

मैं उनकी बातों के साथ तालमेल बिठाता रहा, ताकि उन्हें कोई शक न हो कि मैंने उनकी धोखाधड़ी पकड़ ली है। फिर हमेशा की तरह वे मुझे एक खाता नंबर देते हैं और मुझसे कहते हैं कि मैं अपने खाते का पैसा वहां जमा कर दूं।

फिर मैंने बिना कुछ कहे फोन रख दिया। लेकिन मुझे बहुत डर है कि मेरा आधार नंबर उनके पास रहेगा और वे इसका इस्तेमाल किसी अन्य देशद्रोही गतिविधियों के लिए कर सकते हैं। मैं तुरंत अपने नजदीकी पुलिस स्टेशन गया और पूरी घटना का विवरण देते हुए अपनी शिकायत दर्ज कराई।

हालांकि ऐसी घटनाओं से हम सभी वाकिफ हैं लेकिन जिस तरीके या कहानी के जरिए ये लोगों को अपने जाल में फंसानें लगे हैं वो काफी नया होता है। इसलिए मैं अपने पाठकों को आगाह करना चाहूंगा कि वे इस तरह के धोखे का शिकार न हों तथा अपने दिन-प्रतिदिनों के कामो में सजग रहते हुएं साइबर क्राइम से जुड़े सही संबंधित नियमों का पालन करें।

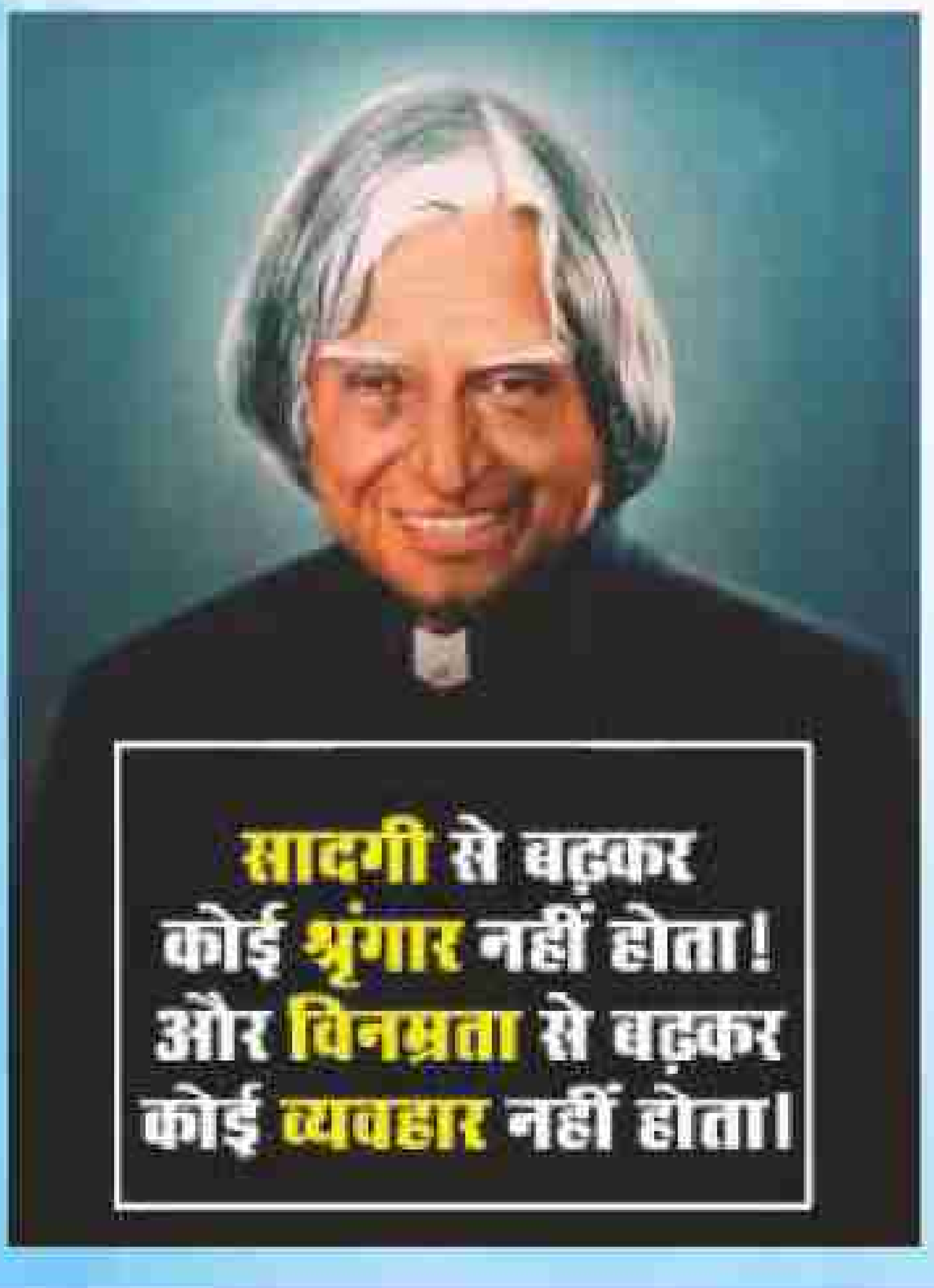

भारत हमारा देश

अभिनव आनंद
कक्षा: सप्तम
सुपुत्र: श्री मनोज कुमार
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

भारत हमारा देश
प्यारा न्यारा देश
भिन्न-भिन्न जातियाँ
भिन्न-भिन्न धर्म और भाषा
यह दुनिया को है
शांति का पाठ पढ़ाता

यहाँ की धरती रंग बिरंगी
खेतों में धूल है उड़ती
वीरों की पावन यह धरती
हर दिल में है बसती यह धरती
भारत हमारा देश
दुनिया का सबसे प्यारा देश

हमको है आपने देश पर अभिमान
इससे है हम सब का सम्मान
हम इसका मान बढ़ायेंगे
सदियों लोग इसका गुणगाण करेंगे
भारत हमारा देश
दुनिया का सबसे प्यारा देश

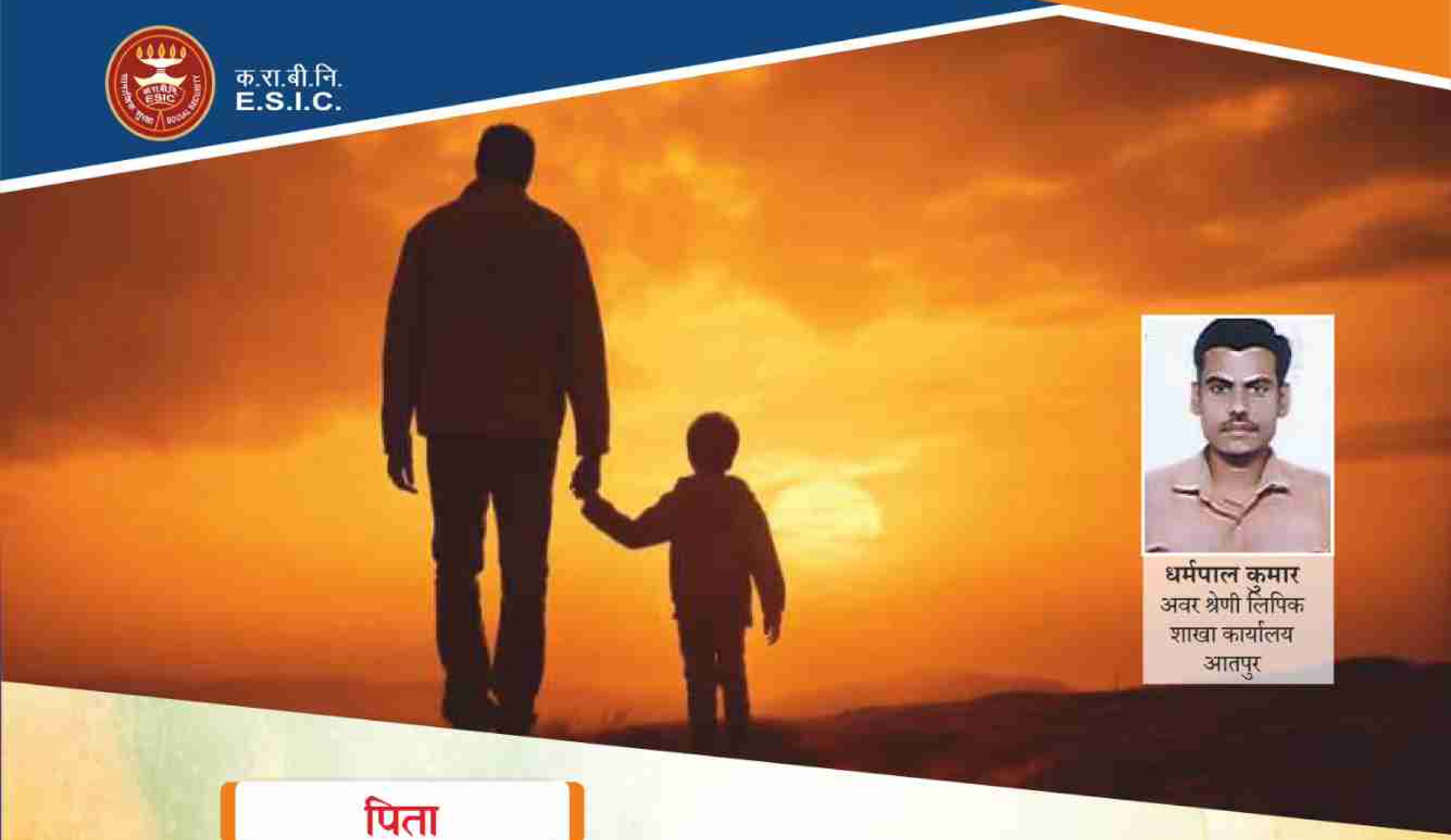

धर्मपाल कुमार
अवर श्रेणी लिपिक
शाखा कार्यालय
आतपुर

पिता

जिसके दिल में अपना चेहरा रहता है।
वह पिता ही है, जिसके लिए दिल रोया करता है।

कर-कर काम दिनभर खेतों में
शाम को थका आता है।

देखकर हमारे चेहरों को वह
मंद-मंद मुस्कुराता है

भूलकर अपनी थकान पीठों पर
सवारी करवाता हैं

गमछे को खोलकर वह मीठे-मीठे
बेर खिलाता है।

जिसके दिल में अपना चेहरा रहता है।
वह पिता ही है, जिसके लिए दिल रोया करता है।

गलती करने पर हमें डाँट भी खाना पहता है।
कभी-कभी माँ के गोदों में छिपना पड़ता है।
कई बार कुछ घंटे भूखे भी रहना पड़ता है।
मगर वह सख्ती भी कुछ पल में, प्यार बनकर ही बरसता है।

जिसके दिल में अपना चेहरा रहता वह पिता ही है।
वह पिता ही है, जिसके लिए दिल रोया करता है।

वह रूखी सूखी खाकर हमें पौष्टिक भोजन करवाता है।
वह फटे-पुराने कपड़े पहनकर, हमें त्योहारों में पोशाकें दिया करता है
कपकपाते सर्दियो में भी, अपनी कम्बल मुझपर खिसकाया करता है।
यह कौन पागल है जो अपनी जमापूंजी मुझपर फेका करता है।

जिसके दिल में अपना चेहरा रहता है।
वह पिता ही है, जिसके लिए दिल रोया करता है।

नदियाँ कभी न कभी समुद्र से मिलने तो जाती है।
पिता के त्याग से हमें एक दिन, अच्छी नौकरी मिल जाती है।
बदलते वक्त में एक सुन्दर कन्या मुझे वर जाती है
घर का कोना-कोना, खुशियों से भर जाती है।

जिसके दिल में अपना चेहरा रहता है।
वह पिता ही है, जिसके लिए दिल रोया करता है।

पैसे की झनक, पायल की खनक में, मेरा मन डूब जाता है।
फिर पिता और उसका पता कहाँ याद रहता है।
पिता की ताकत क्षीण और नजरे कमजोर होने लगता है।
एक दिन घसीटकर जिन्दगी वह धरा को छोड़ जाता है।
मरते वक्त भी वह मुझे, सदा खुश रहो बोल जाता है।

जिसके दिल में अपना चेहरा रहता है।
वह पिता ही है, जिसके लिए दिल रोया करता है।

अभिराज साव
कक्षा- पंचम
सुपुत्र- कंचन प्रसाद साव

पहली हवाई यात्रा

मेरा नाम अभिराज साव है। आज मैं अपनी पहली हवाई यात्रा अनुभव आप लोगों के साथ साझा करता हूँ।

तो बात 21/7/2023 की है। हमलोग यानी मैं, मेरे पिताजी एवं मेरी छोटी बहन मीठी, 21/07/2023 को रात 11.55 को चेन्नई मेल पकड़ने वाले थे। मेरी माता जी सुबह से काफी व्यस्त थी। पर अचानक शाम 5.40 बजे को माता जी के फोन पर रेलगाड़ी के रद्द होने के संदेश आता है। उसी वक्त मेरे नाना जी मेरे घर आकर रेलगाड़ी के रद्द होने का पुष्टिकरण करते हैं। जिससे हम सबको बड़ा झटका लगता है और हम सब दुःखी हो जाते हैं। मैं और मेरी फिर से बहन चेन्नई जाने के लिये बहुत उत्सुक थे। वहाँ के VGP kingdom और Guindi national Park बहुत याद आ रहा था। पिछली बार हम दोनों ने वहां बहुत खेला था।

तब बहुत सोच विचार के बाद मेरे पिताजी ने हवाई यात्रा का प्रबन्ध किया। हवाई यात्रा के उत्सुकता में मैं यह बताना तो भूल ही गया कि हम चेन्नई गये क्यों? दरअसल मेरे दोनो आँखों का ईलाज चेन्नई के शंकर नेत्रालय में 4 फरवरी 2021 में हुआ था। उसी की नियमित चेक-अप थी और साथ ही मेरे नानाजी की एक मीटिंग भी वहाँ पर थी। मेरे नानाजी रेलवे के पूर्वोत्तर क्षेत्र के क्षेत्रीय अध्यक्ष है इसलिए मेरे नानाजी भी हमलोग के साथ गये।

रात 10.00 बजे मेरी यात्रा शुरू हुई। मेरी मौसी ने अपनी गाड़ी भेजकर हमलोगों को दमदम एयरपोर्ट भेजने का इन्तजाम किया। हम सब 11.30 तक एयरपोर्ट पर पहुंच गये। 12.00 बजे से चेक इन शुरू हुआ। हम सब चेक-इन कर गये और अपना हवाई जहाज का इन्तजार करने लगे।

थोड़ी देर बाद प्लेन में चढ़ने का एनाउन्समेंट हुआ। हम सब प्लेन में चढ़ गये। मैं और मेरी बहन बहुत खुश थे। मेरी बहन को बहुत नींद आ रही थी तो वो सो गई और कुछ देर बाद मैं भी सो गया था।

अचानक मम्मी का मुझे उठाने का आवाज सुनाई दिया, वो मुझे और बहन को उठा रही थी। जब मैं उठा तो नीचे का नजारा देख के मैं तो खुशी से पागल हो गया। ऐसा लग रहा था जैसे सारे बादल मुझे गुड मॉर्निंग बोल रहे हैं। बहुत सुन्दर दृश्य था। कुछ देर बाद करीबन सुबह 7.00 बजे मैं चेन्नई एयरपोर्ट पर उतरा। वहाँ का पोर्ट भी बहुत सुन्दर है, मैं तो देखता ही रह गया।

उसके बाद मेरे पापा ने ओला एप से गाड़ी बुक किया और हम सब रूम पर पहुंच गये। तो ये थी मेरी पहली हवाई यात्रा जिसने मुझे बहुत रोमांचित किया। आशा करता हूँ कि आपलोग भी भविष्य में मेरे जैसा ही रोमांच अनुभव करें। जय हिंद जय भारत, **नमस्कार।**

मनोज कुमार
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

जी हां, मैं हिंदी अधिकारी हूं

जी हां, मैं हिंदी अधिकारी हूँ,
पर असल में "बस" एक सरकारी हूँ।
नाम बड़ा है, पर "उनकी" नजरों में छोटा,
मेरी तो कुर्सी है जैसे बिना पेंदी का लोटा ।

हर रोज़ जब दफ्तर में आता हूँ,
"अंग्रेज़ी में कागज़ बना दो", यही सुन पाता हूँ।
मैं तो बेचारा हिंदी की बात उठाता,
सबकी नज़रें मुझ पर जैसे जादू चलाता।

जी हां, मैं हिन्दी अधिकारी हूँ,
कागज़ों में छिपा एक फ़रियादी हूँ।
बैठूं मैं कोने में चुपचाप,
न कोई चर्चा, न मुझसे कोई सवाल जवाब।

साहब लोग मीटिंग में जाते,
अंग्रेज़ी में फर्राटे मारते,
मैं बस देखूं, नोट्स में घूरूं,
हां, जी हां, मैं हिन्दी अधिकारी हूँ।

फाइल खोलूं तो सब होंठ सिकोड़ें,
"हिंदी में? अरे यार, हमें तो छोड़ें!"
अंग्रेज़ी में जहां लगता एक मिनट,
हिंदी में लिखने पर होती घंटों की कसरत।

मंच से बुलाते हैं बड़े अधिकारी,
कहते, "हिंदी में भाषण दो प्यारे भाई!"
मैं माइक पर आता, जोश में भर जाता,
पीछे से आती आवाज़,
"इंग्लिश में कहो, क्या चिल्ला रहे हो राजा!"

मीटिंग में जब भी 'हिंदी' का नाम लिया,
सबने सोचा, ये फिर कोई नया बवाल किया।
अरे भाई, ये तो सिरदर्द है भारी,
चलो चाय पी लें, ...और हिंदी की हो गई
विदाई।

कभी-कभी सोचा, छोड़ दूं ये पद,
पर याद आता है तनख्वाह का मद।
क्लर्क से भी नीचे, पर जिम्मेदारी है भारी,
मैं हूं ना, हिंदी अधिकारी!

साल में एक बार आता है हिंदी पखवाड़ा,
उस दौरान बढ़ जाता हिंदी का भाईचारा,
हिंदी में सजेगा पोस्टर, बैनर और फ्लैक्स,
बाकी दिन 'हिंग्लिश' ही है सबकी एक्स!

"हिन्दी पखवाड़ा" आता साल में एक बार,
मैं तब बनता हूं सबका महाराजाधिराज,
बड़े-बड़े भाषण, बड़े-बड़े काम,
पर अगले दिन फिर वही पुराना हाल।

जब-जब मैं हिंदी का काम करवाने जाऊं,
सब बोले, "सर जी, टाइम मत बर्बाद
करवाओ।"
फिर भी हँस कर कहता हूं, "जी सर,
मैं तैयार हूं,"
"जी हां, मैं हिंदी अधिकारी हूँ!"

दफ्तर में हँसी ठिठोली का माहौल,
हिंदी अधिकारी हुआ खुद से अनमोल,
सबने कहा, "यार, तू तो हिट है,
कागज़ों पर हिंदी हो या न हो,
तेरी कॉमेडी फिट है!"

कभी-कभी लगता है, बदल दूं ये देश,
ना जाने क्यूं है लोगों को हिंदी से क्लेश।
अफसरों के बीच, क्लर्क सा जीवन है गुजार,
पर हां, ठहाकों में मेरा है रोज़ का व्यापार!

जी हां, मैं हिंदी अधिकारी हूँ,
हर दफ्तर की मैं त्रासदी न्यारी हूँ!
बस नाम का हूं मैं अधिकारी,
पर ठहाकों में मेरा है कारोबार भारी!

फिर भी साहब, मैं खुश हूँ,
हिन्दी की लाज रखता हूँ,
भले ही मेरे बिना सब चलता,
पर मैं हूं एक हिंदी अधिकारी

और एक नौकर सरकारी..

राजभाषा पखवाड़ा एवं हिंदी दिवस-2023 का आयोजन

राजभाषा पखवाड़ा एवं हिंदी दिवस-2023 का आयोजन

राजभाषा शाखा द्वारा आयोजित विविध गतिविधियाँ

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान निबंध प्रतियोगिता

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान दिनांक – 02.11.2023 को राजभाषा शाखा द्वारा निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 2 विजेता प्रतिभागियों को कार्यालय प्रमुख द्वारा नकद पुरस्कार क्रमश: 1500/- रूपये एवं 1000/- रूपये एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया।

प्रथम – करिश्मा कुमारी, बहुकार्य कार्मिक, वसूली शाखा

द्वितीय – स्वागता भट्टाचार्जी, आशुलिपिक, निजी सचिव कक्ष

राजभाषायी निरीक्षण

दिनांक – 18.01.2024 को श्री निर्मल कुमार दुबे, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व क्षेत्र), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा इस कार्यालय में राजभाषायी निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के उपरांत उन्होंने अपने निरीक्षण रिपोर्ट में "बहुत अच्छा" अभ्युक्ति दिया।

राजभाषायी निरीक्षण

वार्षिक राजभाषा कार्यक्रम के अनुसार राजभाषायी निरीक्षण का न्यूनतम लक्ष्य 25% कार्यालयों के निरीक्षण का है लेकिन इस वर्ष राजभाषा के व्यापक प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर के सभी 11 शाखाओं एवं 18 शाखा कार्यालयों में राजभाषायी निरीक्षण श्री रमेश साव, सहायक निदेशक (राजभाषा), श्री मनोज कुमार, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी एवं श्री भागीरथ साव, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी द्वारा किया गया अर्थात् इस वर्ष 100% अधीनस्थ कार्यालयों का राजभाषायी निरीक्षण किया गया।

अधिकारियों के लिए एक विशेष हिंदी कार्यशाला

दिनांक – 18.01.2024 को इस कार्यालय में अधिकारियों के लिए एक विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें श्री निर्मल कुमार दुबे, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व क्षेत्र), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा व्याख्यान दिया गया और राजभाषा कार्यान्वयन संबंधित आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किया गया।

एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला

वार्षिक कार्यक्रमानुसार- प्रत्येक तिमाही एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

वार्षिक कार्यक्रमानुसार, प्रत्येक तिमाही विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन समय पर किया गया।

राजभाषा शाखा की उपलब्धियां

नराकास की छमाही बैठक में प्रतिभागिता

दिनांक 31.01.2024 को नराकास (उपक्रम) कोलकाता की छमाही बैठक में कार्यालय प्रमुख के साथ-साथ राजभाषा शाखा के अधिकारियों (सहायक निदेशक, राजभाषा एवं वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी व कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी) ने भाग लिया।

नराकास (उपक्रम) कोलकाता की छमाही बैठक में कार्यालय प्रमुख (बायें से द्वितीय) के साथ अन्य अधिकारी व कार्मिकगण

नराकास की विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कार

श्री मणि शंकर पाणि, प्रवर श्रेणी लिपिक, रोकड़ शाखा - पुरस्कार ग्रहण करते हुए

दिनांक 31.01-2024 को नराकास (उपक्रम) कोलकाता की छमाही बैठक में कार्यालय के एक कार्मिक – श्री मणि शंकर पाणि, प्रवर श्रेणी लिपिक, रोकड़ शाखा को यात्रा वृतांत लेखन प्रतियोगिता के लिए तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। पुरस्कार के अंतर्गत 2500/- रूपये का नकद पुरस्कार और प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

दिनांक 31.01.2024 को नराकास (उपक्रम) कोलकाता की छमाही बैठक में कार्यालय के एक कार्मिक – श्री फागुन आइच, प्रवर श्रेणी लिपिक, शाखा कार्यालय, कल्याणी को हिंदी निबंध प्रतियोगिता के लिए तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। पुरस्कार के अंतर्गत 2500/- रूपये का नकद पुरस्कार और प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

श्री फागुन आइच, प्रवर श्रेणी लिपिक, शाखा कार्यालय, कल्याणी – पुरस्कार ग्रहण करते हुए

संस्कार से सजी-धजी है, सिर पर न्यारी बिंदी है,
इससे प्यारी नहीं है भाषा, सबसे प्यारी हिंदी है।।
हिंदी दिवस की शुभकामनाएं

दिनांक – 28.8.2024 को नराकास (उपक्रम), कोलकाता द्वारा गृह पत्रिका "सेनानी" को पुरस्कार

हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी – 15.05.2024

राजभाषायी निरीक्षण

दिनांक – 10.07.2024 को श्री सूर्य प्रकाश, संयुक्त निदेशक (राजभाषा), पूर्वी अंचल, कर्मचारी राज्य बीमा निगम द्वारा इस कार्यालय में राजभाषायी निरीक्षण किया गया।

संयुक्त हिंदी कार्यशाला – 11.07.2024

स्वतंत्रता दिवस- 2024

कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न रोकथाम सप्ताह

सुविधा समागम का आयोजन

स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

गणतंत्र दिवस 2024

विशेष सेवा पखवड़ा

ईशिता दत्ता
पुत्री- सुदीप्त दत्ता

चित्रकारिता

स्वप्ननील दास
पुत्र- प्रद्युत दास
सहायक, प्रशासन शाखा

प्रियम दास
पुत्र- प्रसेनजित दास
सहायक, वित्त एवं लेखा शाखा

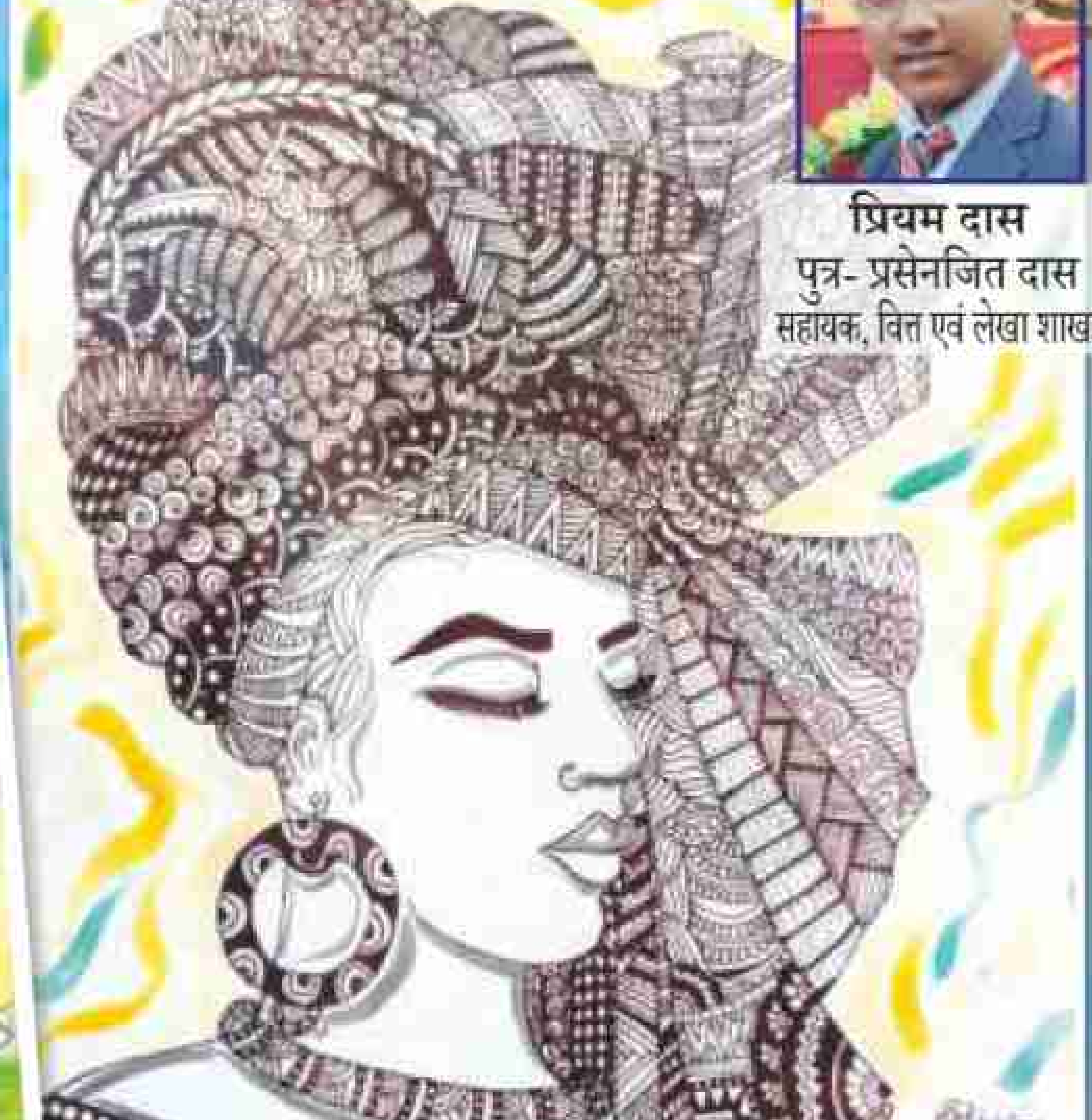

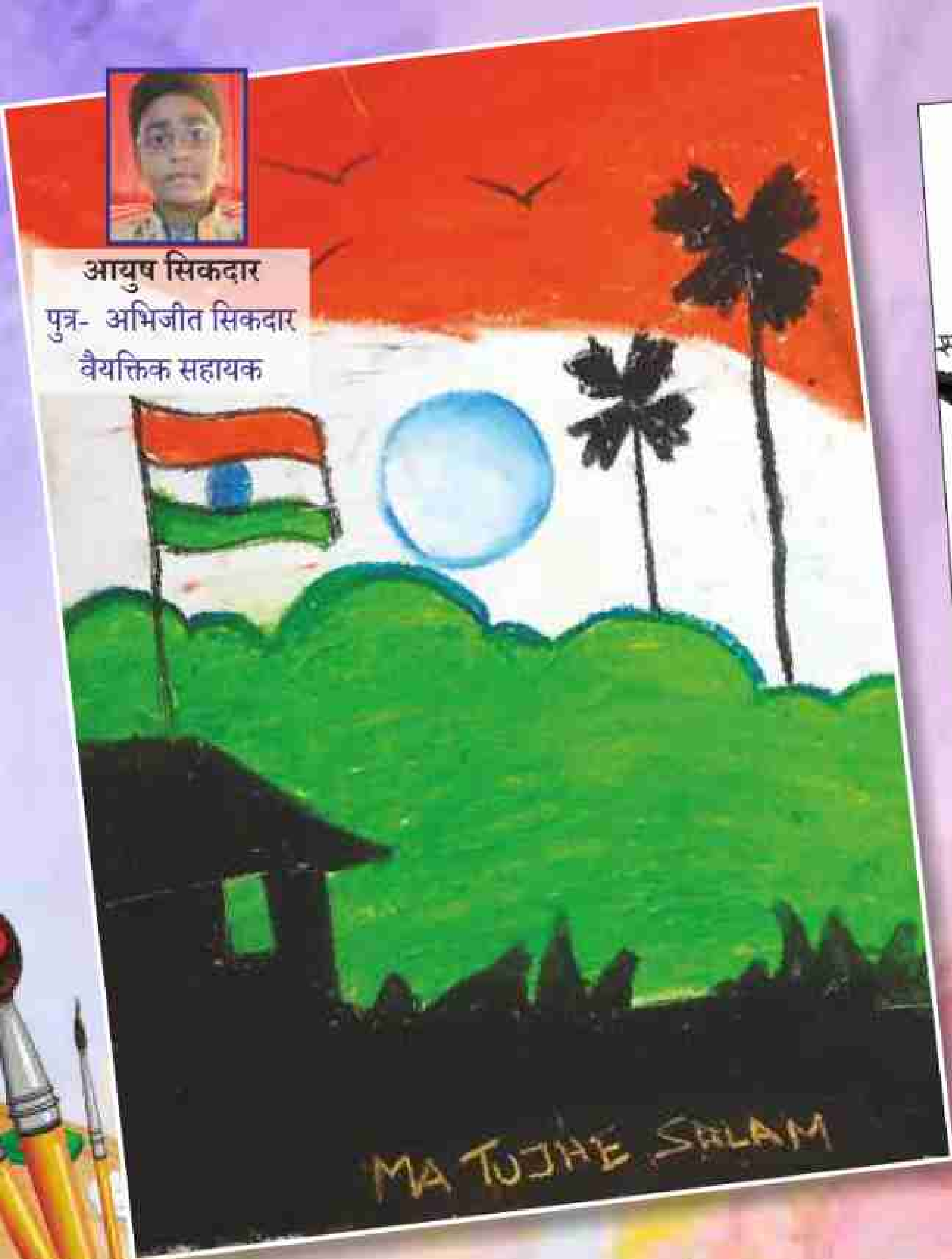

आयुष सिकदार
पुत्र- अभिजीत सिकदार
वैयक्तिक सहायक

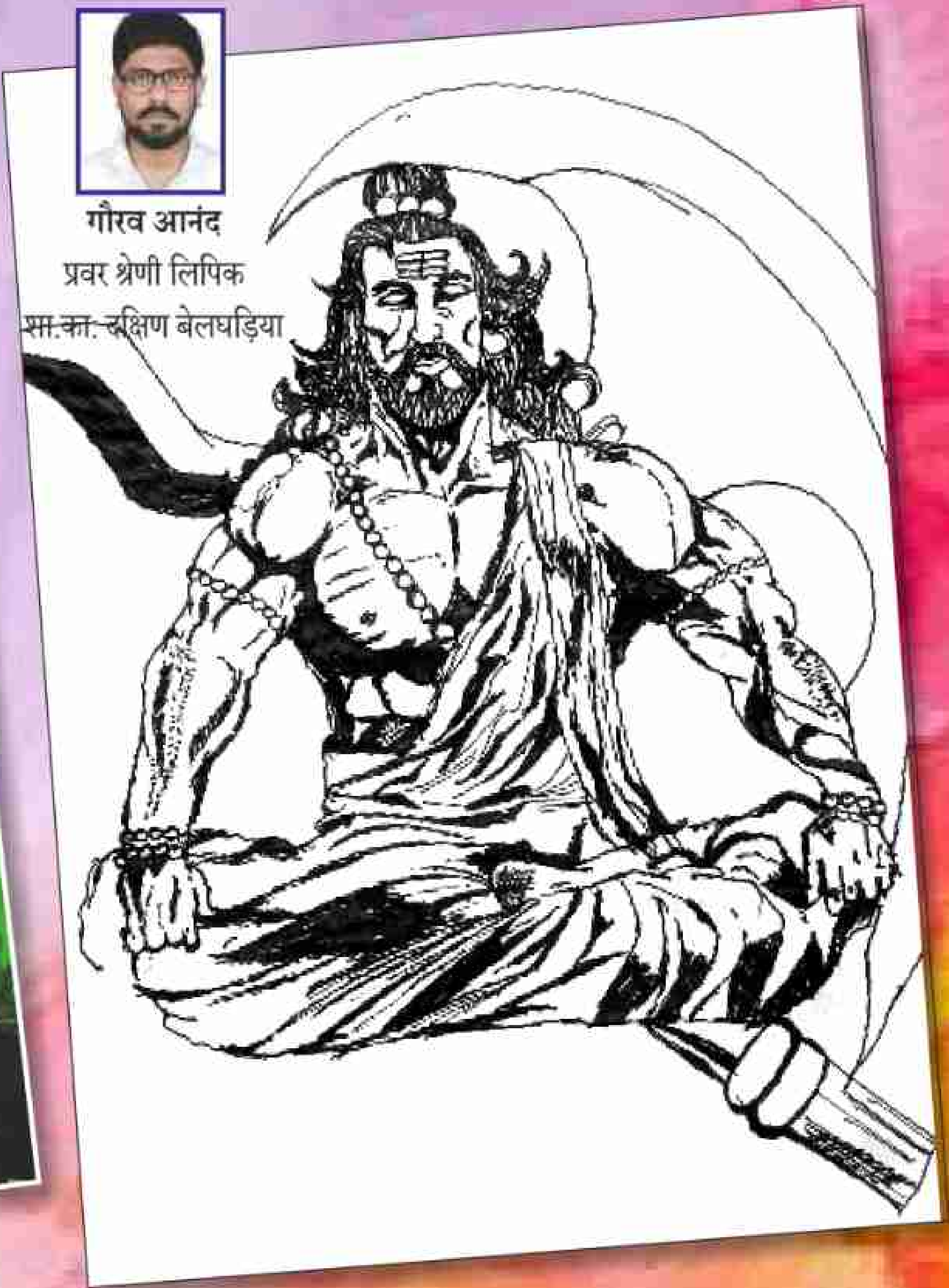

गौरव आनंद
प्रवर श्रेणी लिपिक
शा.का. दक्षिण बेलघड़िया

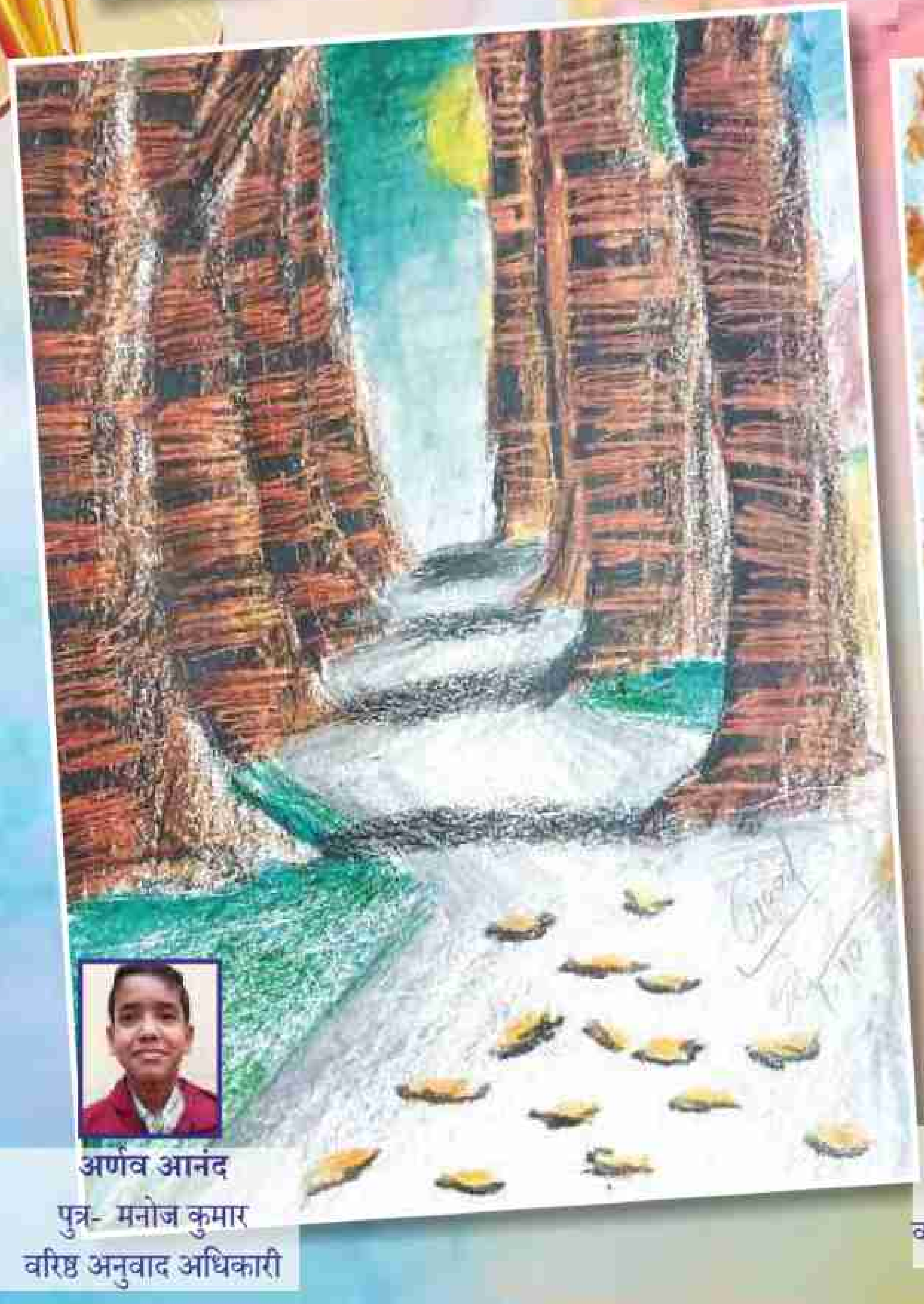

अर्णव आनंद
पुत्र- मनोज कुमार
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

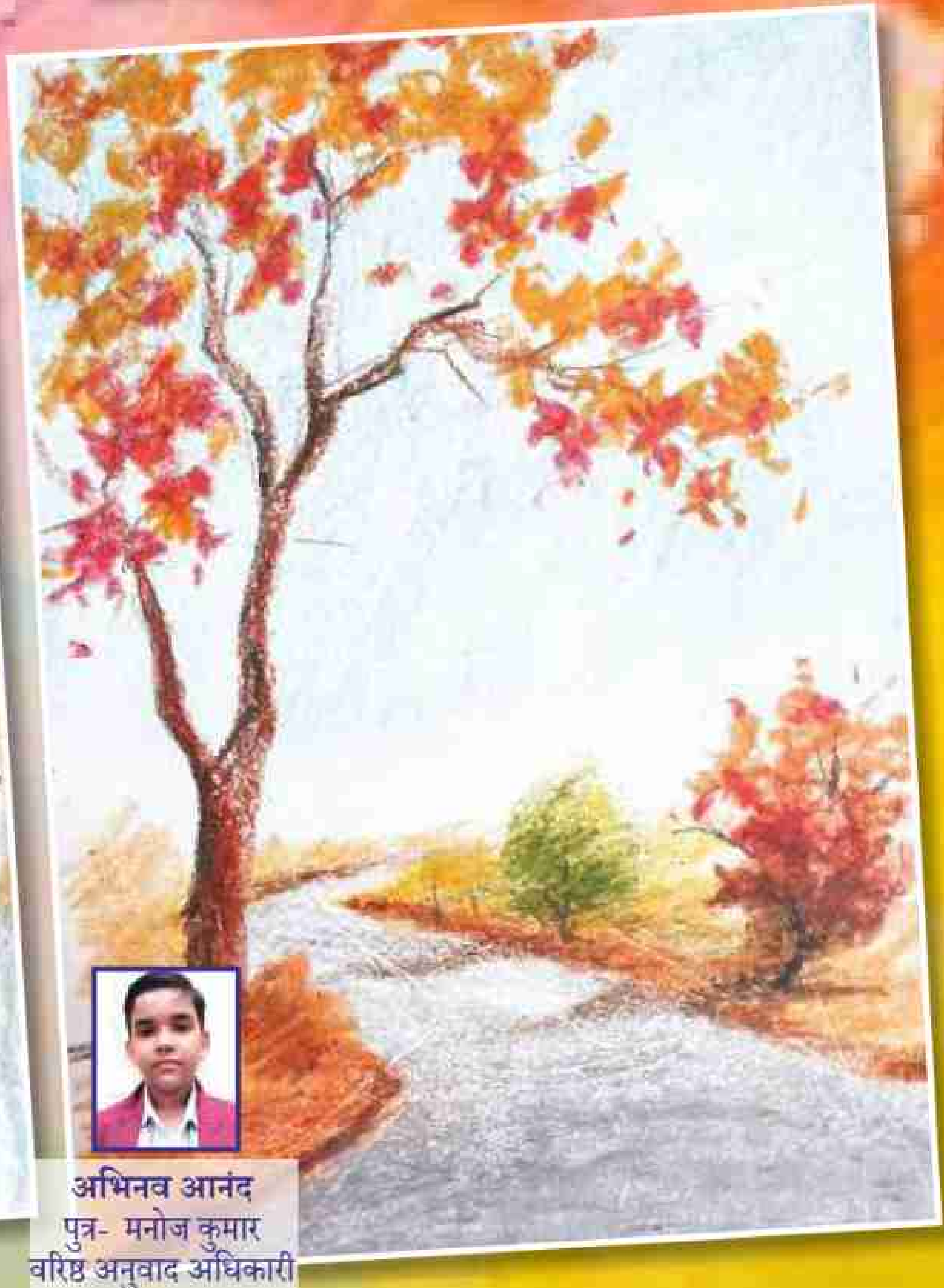

अभिनव आनंद
पुत्र- मनोज कुमार
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

ईएसआईसी
सामाजिक सुरक्षा हितलाभ योजना

चिकित्सा हितलाभ